Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٧﴾

(सूरः अहज़ाब् : 57)

अनुवाद : वास्तव में, अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैगम्बर पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगों जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दरूद और खूब सलाम भेजो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक-26-27

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

29 जुल् हज्जा से 07 मोहर्रम 1446-47 हिज्री कमरी, 26 अहसान से 03 वफ़ा 1404 हिज्री शम्सी, 26 जून से 03 जुलाई 2025 ई.

सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

जो व्यक्ति इस युग में भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करता है वह निस्सन्देह क़ब्र में से उठाया जाता है और उसे एक रूहानी जीवन प्रदान किया जाता है न केवल कल्पना के तौर पर बल्कि उसके सच्चे-व-सही लक्षण प्रकट होते हैं, और आकाशीय सहायताएं तथा बरकतें और रूहुल क़ुदुस के विलक्षण समर्थन उसके साथ संलग्न हो जाते हैं

परिवर्तित इंजील के बारे में जो ईसाइयों के हाथ में है, खामोश रह कर इस वाक्य को सही भी समझा जाए कि हज़रत मसीह ने अवश्य यह दावा किया है कि क़यामत और जीवन मैं हूँ। तो इस से कुछ प्राप्त नहीं। क्योंकि ऐसा दावा जो अपने साथ अपना सबूत नहीं रखता, किसी के लिए श्रेष्ठता का कारण नहीं हो सकता। यदि एक मनुष्य एक बात के बारे में दावा तो न करे परन्तु वह बात कर दिखाए तो उस दूसरे मनुष्य से कई गुना अच्छा है कि दावा तो करे परन्तु दावा सिद्ध करने से असमर्थ रहे। इंजील स्वयं गवाही दे रही है कि हज़रत मसीह का दावा दूसरों के बारे में तो क्या स्वयं हवारियों की हालत पर दृष्टि डालने से एक ऐतराज़ करने वाले की दृष्टि में अत्यन्त ऐतराज़ योग्य ठहरता है तथा सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह अपने हवारियों को भी कामवासना संबंधी कब्रों में ही छोड़ गए। जब हम हज़रत मसीह के इस दावे को हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल के दावे से तुलना करते हैं तो उस दावे और इस दावे में अंधकार तथा प्रकाश का अन्तर दिखाई देता है। हज़रत मसीह का दावा सबूत के अभाव के एक तंग ओर अंधकार के गढ़े में गिरा हुआ है तथा अपने साथ कोई प्रकाश नहीं रखता। परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दावा सूर्य से समान चमक रहा है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाश्वत जीवन पर यह भी एक बड़ा भारी तर्क है कि प्रशंसित हज़रत का शाश्वत दानशीलता जारी है। जो व्यक्ति इस युग में भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करता है वह निस्सन्देह क़ब्र में से उठाया जाता है और उसे एक रूहानी जीवन प्रदान किया जाता है न केवल कल्पना के तौर पर बल्कि उसके सच्चे-व-सही लक्षण प्रकट होते हैं, और आकाशीय सहायताएं तथा बरकतें और रूहुल क़ुदुस के विलक्षण समर्थन उसके साथ संलग्न हो जाते हैं तथा वह सम्पूर्ण संसार के मनुष्यों में से एक अद्वितीय मनुष्य हो जाता है, यहां तक कि ख़ुदा तआला उस से वार्तालाप करता है और उस पर अपने विशिष्ट रहस्यों को प्रकट करता है और अपनी वास्विकताएं तथा मआरिफ़ खौलता है और उसमें अपने प्रेम एवं कृपाओं के चमकते हुए लक्षण प्रकट कर देता है और उस पर अपनी सहायताएं उतारता है और उसमें अपनी बरकतें रख देता है तथा उसे अपने प्रतिपालन का दर्पण बना देता है। उसकी ज़ुबान पर हिकमत जारी होती है, उसके दिल से बारीक रहस्यों के चश्मे निकलते हैं और उस पर गुप्त भेद प्रकट किए जाते हैं तथा उस पर ख़ुदा तआला एक महा वैभवशील झलक करता है और उससे दुआओं के स्वीकार होने में तथा अपनी स्वीकारिताओं में और मारिफ़त के दरवाज़ों के खुलने में, परोक्ष के रहस्यों के प्रकट होने में तथा बरकतों के उतरने में सब से ऊपर और सब पर विजयी रहता है। अतः इस ख़ाकसार ने ख़ुदा तआला से मामूर होकर उन्हीं बातों के बारे में और उसी समझाने के लिए कई हज़ार रजिस्टर्ड पत्र एशिया, यूरोप और अमरीका के प्रसिद्ध विरोधियों की ओर भेजे थे ताकि यदि किसी का यह दावा हो कि यह रूहानी जीवन ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम से भी प्राप्त हो सकता है तो वह इस ख़ाकसार का मुकाबला करे और यदि यह नहीं तो सत्याभिलाषी बर कर यकतरफः (एक पक्षीय) बरकतों, लक्षणों और निशानों को देखने के लिए उपस्थित हो जाए। परन्तु किसी ने सच्चाई और नेक नीयती से इस ओर मुंह न किया तथा अपनी पृथकता से सिद्ध कर दिया कि वे सब अंधकार में गिरे हुए हैं और वर्तमान में जो हमारे कुछ सहधर्मी भाई मुसलमान कहलाकर इस प्रकाश से इन्कारी हैं न स्वीकार करते हैं न सच्चे दिल से आते और आज़माते हैं और काफ़िर कहने पर कमर बांध रहे हैं। इस सब बातों का मूल कारण अंधापन, कंजूसी और द्वेष की अधिकता है। ऐसे लोगों का इस्लाम में होना इस्लाम के अपमान का कारण नहीं और यह ऐतराज़ नहीं हो सकता कि इन लोगों के रूहानी रोग क्यों दूर नहीं हुए और ये लोग क़ब्रों में से क्यों न निकले? क्योंकि यदि कोई सूर्य की ओर से अपने घर के किवाड़ बन्द करके एक अंधकारमय कोने में बैठ जाए तो यदि उस तक सूर्य का प्रकाश न पहुंचे तो यह सूर्य का दोष नहीं बल्कि स्वयं उस व्यक्ति का दोष है जिसने ऐसा किया। इसके अतिरिक्त यद्यपि ये लोग कैसे ही छुपे हुए और वास्तविकता से दूर हैं परन्तु फिर भी खुले तौर पर तौहीद को मानते हैं। किसी मनुष्य को ख़ुदा नहीं बनाते और अपने अन्दर तौहीद की बरकत से एक प्रकाश भी रखते हैं तथा उनमें एक सीमा तक जीवन की गर्मी भी मौजूद है। इसलिए हम नहीं कह सकते कि वे बिल्कुल मर गए यद्यपि कि खरतनाक हालत में हैं। यदि कोई ईसाई या हिन्दू हमारी ओर से मुंह फेर कर ऐसी मिन-मेख करे तो वह नितान्त पक्षपाती या बहुत मूर्ख है। बाग़ में कांटों का होना भी आवश्यक है। जहां फूल हैं कांटे भी होंगे परन्तु विरोधी वर्ग में तो सर्वथा कांटों का ही ढेर दिखाई देता है। ईसाइयों की यह सर्वथा व्यर्थ बातें हैं कि मसीह में होकर हम जीवित हो उठे। ईसाई सज्जन भली भांति स्मरण रखें कि मसीह अलैहिस्सलाम का क़यामत का नमूना होना बिल्कुल सिद्ध नहीं और न ईसाई जीवित हो उठे, बल्कि मुर्दा और सब मुर्दों से प्रथम श्रेणी पर तथा तंग और अंधकारमय क़ब्रों में पड़े हुए तथा शिर्क के गढ़े में गिरे हुए हैं। उनमे न ईमान की रूह है न ईमान की रूह की बरकत बल्कि तौहीद की छोटी सी छोटी श्रेणी जो मख़्लूक़ परस्ती (सृष्टि की इबादत) से बचना है उनको वह भी प्राप्त नहीं हुआ और एक अपने जैसे असहाय एवं कमज़ोर इन्सान को स्रष्टा (ख़ालिक़) समझ कर उसकी उपासना (इबादत) कर रहे हैं।

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 5, पृष्ठ 222-221)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	जो व्यक्ति इस युग में भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करता है वह निस्सन्देह क़ब्र में से उठाया जाता है और उसे एक रूहानी जीवन प्रदान किया जाता है	1
2	ख़त्म-ए-नबुव्वत के बारे में अहमदिया जमाअत की इस्लामी धारणा	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)	3
4	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30b मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)	7
5	सीरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (युद्धों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उच्चतम आदर्श)	12
6	अल्लाह तआला की सत्ता "समीउद्दुआ" (दुआएँ सुनने की विशेषता के आलोक में)	16
7	"इस्लामी शिष्टाचार और नैतिकताएँ" (खाने पीने, सफ़ाई रास्तों के अधिकार, आँखों को नीचा रखने के बारे में निर्देश, सभा एवं मस्जिद के शिष्टाचार)	20

"ख़त्म-ए-नबुव्वत के बारे में अहमदिया जमाअत की इस्लामी धारणा"

(मंसूर अहमद मसरूर, संपादक, साप्ताहिक अख़बार 'बदर', क़ादीया)

भाषण जलसा सालाना क़ादीयान 2024

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۱﴾

माननीय अध्यक्ष महोदय और सम्मानित श्रोतागण!

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू।

जैसा कि आप सुन चुके हैं, ख़ाकसार के भाषण का विषय है :ख़ात्म-ए-नबुव्वत के बारे में अहमदिया जमाअत का इस्लामी मत।अभी ख़ाकसार ने आपके समक्ष आयत ख़ातमन-नबिय्यीन की तिलावत की, जिसका अनुवाद इस प्रकार है :

"मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल हैं और (उससे भी बढ़कर) नबियों की मुहर हैं। और अल्लाह हर चीज़ का पूर्ण ज्ञान रखने वाला है।"

सम्मानित श्रोतागण!

ग़ैर-अहमदी भाइयों की ओर से अहमदियों पर अनेक आरोप लगाए जाते हैं। उनमें से एक अत्यंत पीड़ादायक और पूर्णतः निराधार आरोप यह है कि हज़रत मसीह मौऊद व महदी मऔऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन-नबिय्यीन नहीं मानती। यह एक ऐसा झूठा और आधारहीन आरोप है जो हमें अत्यंत दुःख और वेदना में डाल देता है।

सबसे पहले मैं ख़ातमन-नबिय्यीन के संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का शपथ-पत्र प्रस्तुत करता हूँ। आप फ़रमाते हैं:

"मुझे ख़ुदा की इज़्ज़त और जलाल की क़सम है कि... मैं इस बात पर ईमान रखता हूँ कि हमारे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त रसूलों में श्रेष्ठ और ख़ातमन-नबिय्यीन हैं।

(हमामतुल-बुशरा, उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 36)

एक और स्थान पर आप फ़रमाते हैं:

"इस स्थान पर यह भी स्मरण रहना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर जो यह आरोप लगाया जाता है कि हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन-नबिय्यीन नहीं मानते, यह हम पर एक बहुत बड़ा झूठ है। हम जिस यक़ीन, मअरिफ़त और दृष्टि के साथ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन अंबिया मानते और इस पर ईमान रखते हैं, उसका लाखवां भाग भी दूसरे लोग नहीं मानते। और उनका ऐसा मनोमस्तिष्क ही नहीं है। वे उस सत्य और रहस्य को, जो ख़ात्म-ए-नबुव्वत में है, समझते ही नहीं। उन्होंने केवल पूर्वजों से एक शब्द सुना है, लेकिन उसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं। वे यह नहीं जानते कि ख़ात्म-ए-नबुव्वत क्या होता है और उस पर ईमान लाने का अर्थ क्या है। लेकिन हम पूर्ण दृष्टि से (जिसे अल्लाह बेहतर जानता है), हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन अंबिया मानते हैं। और ख़ुदा तआला ने हम पर ख़ात्म-ए-नबुव्वत की वास्तविकता को इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है कि इस गूढ़ ज्ञान के मधुर रस में से, जो हमें पिलाया गया है, हम एक विशेष आनंद प्राप्त करते हैं, जिसका अनुमान वे लोग नहीं लगा सकते, सिवाय उनके जो इस जलधारा से तृप्त हुए हों।

(मल्फ़ूज़ात, खंड 1, पृष्ठ 227, मुद्रित क़ादियान 2003)

अतः जिस विश्वास और दृष्टि के साथ मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन-नबिय्यीन मानती है, उसका लाखवां अंश भी वे लोग नहीं मानते जो स्वयं को ख़ात्म-ए-नबुव्वत के रक्षक कहते हैं।

सम्माननीय श्रोतागण!

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब वे भी ख़ातमन अंबिया मानते हैं और हम भी मानते हैं, तो फिर विवाद किस बात का है? विवाद असल में ख़ातमन-नबिय्यीन की व्याख्या में है। हम ख़ातमन-नबिय्यीन की व्याख्या क़ुरआन करीम की आयतों, हदीसों और बुज़ुर्गों के कथनों की रोशनी में करते हैं, जिससे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता में वृद्धि होती है। जबकि हमारे ग़ैर-अहमदी भाइयों के अनुसार ख़ातमन-नबिय्यीन का अर्थ मात्र इतना है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंतिम नबी हैं और आपके बाद किसी भी प्रकार का कोई नबी नहीं आ सकता।

सम्मानित श्रोतागण!

नबी तीन प्रकार के होते हैं:

शरई नबी – जो नई शरियत लेकर आते हैं, जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

ग़ैर-शरई या स्वतंत्र नबी – जो कोई नई शरियत नहीं लाते लेकिन पूर्व की शरियत की सेवा के लिए आते हैं, जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, जो मूसी शरीअत की सेवा के लिए आए थे। लेकिन उनकी नबुव्वत में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की कृपा का कोई भाग नहीं था, बल्कि उन्हें सीधा अल्लाह ने नबी बनाया।

उम्मती नबी – जो किसी शरई नबी के माध्यम से और उसकी पूर्ण अनुकरणशीलता के परिणामस्वरूप नबुव्वत का पुरस्कार प्राप्त करता है।

जैसे हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मऔऊद अलैहिस्सलाम, जिन्हें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण गुलामी और पूर्ण अनुकरण के परिणामस्वरूप नबुव्वत का पुरस्कार मिला।

सम्माननीय श्रोतागण!

हम पूरे दिल और जान से इस बात पर ईमान रखते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंतिम शरई नबी हैं। आपके बाद क़यामत तक कोई भी शरई नबी नहीं आ सकता, न ही कोई स्वतंत्र नबी आ सकता है। हाँ, एक उम्मती नबी आ सकता है अर्थात ऐसा व्यक्ति जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संपूर्ण अनुकरणशीलता के कारण नबुव्वत के पद और दर्जे को प्राप्त करे।

किन्तु हमारे ग़ैर-अहमदी भाई यह विश्वास रखते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अब कोई उम्मती नबी भी नहीं आ सकता।

सम्मानित श्रोतागण!

हम अपने ग़ैर-अहमदी भाइयों से पूछते हैं कि यदि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई उम्मती नबी नहीं आ सकता, तो जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे, तो क्या वे नबी नहीं होंगे? इस प्रश्न से उनके शरीर में एक प्रकार की कंपन उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि उन्हें अपनी ग़लती का आभास होने लगता है कि अब क्या उत्तर दें? एक ओर उनका यह विश्वास कि कोई

शेष पृष्ठ 24 पर

ख़ुत्बः जुमअः

वास्तविकता तो यह है कि जिस दिन हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मक्का से हिजरत की, उसी दिन अल्लाह तआला ने आपको यह शुभ-संदेश दे दिया था कि "तू शोक न कर, एक दिन मैं तुझे फिर इस स्थान पर वापस लाऊँगा।"

अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार, क़ुरआन-ए-करीम की यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का स्पष्ट प्रमाण है, क्योंकि आपने अल्लाह तआला की ओर से अनदेखे समाचार की सूचना दी और वही घटित हुआ जैसा आपने बताया था।

यदि समस्त इस्लामी युद्धों पर दृष्टिपात किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि उन सब में एक बुद्धिमत्तापूर्ण उद्देश्य समाहित था, विशेषकर फत्हे मक्का (मक्का की विजय) से पहले जितने युद्ध हुए, उन सभी का एकमात्र उद्देश्य यही था कि मक्का की विजय का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

ग़ज़वए फत्हे मक्का की पृष्ठभूमि में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन का आत्मा को झकझोर देने वाला वर्णन।

मुक़र्रम डॉ. शैख़ मुहम्मद महमूद साहिब शहीद की स्मृति में श्रद्धांजलि और उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

अल्लाह तआला शीघ्र ही इन आतंकवादियों की गिरफ्तारी के साधन उत्पन्न करे और देश को बचाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उन तथाकथित धार्मिक लोगों से छुटकारा पाया जाए जो वास्तव में आतंकवादी हैं और धर्म के नाम पर आतंक फैलाते हैं। हमारी पुकारें केवल अल्लाह तआला की ओर हैं और हमें चाहिए कि हम उसका पूर्ण अधिकार अदा करने का भरसक प्रयत्न करें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबे में मैंने एक मुसलमान के उस कृत्य का उल्लेख किया था, जिसमें उसने एक व्यक्ति को केवल इसलिए मार डाला कि उसने उसे सलाम कहा था, और इसके संदर्भ में मैंने सूरः निसा की आयत 95 भी पढ़ी थी जिसमें यह चेतावनी दी गई है कि यदि कोई तुम्हें सलाम कहे तो यह मत कहो कि वह मोमिन नहीं है। उस समय इस घटना का पूरा विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया था। विस्तार में यही है, जैसा कि मैंने संकेत रूप में उल्लेख भी किया था, कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उसे इस कृत्य से रोका था, लेकिन यह भी उल्लेख मिलता है कि आपने अत्यधिक क्रोध व्यक्त किया और उस व्यक्ति को अपने से दूर कर दिया, बल्कि कुछ रिवायतों में है कि आपने उसके विरुद्ध बद्दुआ भी की। कुल मिलाकर आपको इस पर गहरा दुःख था। क्योंकि उस मारे गए व्यक्ति के क़िसास का मामला उसके परिजनों की ओर से ग़ज़वए हुनैन के बाद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत हुआ था, इसलिए उस घटना का विवरण वहीं प्रस्तुत किया जाएगा, इंशा अल्लाह। कुल मिलाकर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस कृत्य को एक अत्यंत घृणास्पद अपराध ठहराया था।

काश कि आजकल पाकिस्तान के वे लोग जो अपने आपको इस्लाम के ठेकेदार और नामी मुफ़्ती समझते हैं, उन्हें भी कुछ समझ आ जाए और वे अहमदियों पर जो अत्याचार कर रहे हैं, उससे बाज़ आ जाएँ, जिससे वे अल्लाह तआला की पकड़ से बच सकें।

बहरहाल, अब इसी क्रम में जो ग़ज़वात का उल्लेख चल रहा है, तो मैं ग़ज़वए फत्हे मक्का का उल्लेख करूँगा, जो 8 हिजरी में घटित हुआ।

इस युद्ध को "फ़त्हे अज़ीम" अर्थात् महान विजय भी कहा जाता है।

यह ग़ज़वा रमज़ान 8 हिजरी में हुआ, जैसा कि मैंने कहा। यह वही महान विजय है जिसकी शुभ-सूचना अल्लाह तआला ने पहले से दे दी थी और इसके परिणामस्वरूप समूह के समूह इस्लाम में प्रवेश करते चले गए।

(उद्धारित शरह ज़रक़ानी, जिल्द 3, पृष्ठ 386, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

(उद्धारित सब्लुल् हुदा , जिल्द 5, पृष्ठ 200, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

हज़रत मसीह मौउद के सुपुत्र और द्वितीय ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हु) क़ुरआन करीम के हवाले से फत्हे मक्का की बशारत का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं:

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا

अर्थात् कह दो: "हे मेरे पालनहार! तू मुझे इस नगर (मक्का) में सत्यता के साथ प्रवेश दे" अर्थात् हिजरत के बाद विजय और प्रभुत्व के साथ"और इस नगर से सत्यता के साथ निकाल" अर्थात् हिजरत के समय और "अपने पास से मुझे सहायता प्रदान करने वाली प्रभुता दे।"

यह वह आयत है जो हिजरत से पहले सूरह बनी इस्राईल में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी थी और जिसमें हिजरत तथा फत्हे मक्का दोनों की सूचना दी गई थी।

(उद्धारित दीबाचा तफ़्सीरुल कुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 346)

सूरह फत्ह में फत्हे मक्का की बशारत इस प्रकार वर्णित है:

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا

(अल्-फत्ह: 19)

निश्चित ही अल्लाह मोमिनों से प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष के नीचे आपसे बैअत कर रहे थे। वह जानता है जो उनके दिलों में था, अतः उसने उन पर शांति उतारी और उन्हें एक निकटवर्ती विजय प्रदान की।

वास्तविकता तो यह है कि जिस दिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का से हिजरत की, उसी दिन अल्लाह तआला ने आपको यह शुभ-सूचना दे दी थी कि "तू शोक न कर, मैं तुझे एक दिन अवश्य इस स्थान पर वापस लाऊँगा।"

इस प्रकार हिजरत के दौरान इस आयत के उतरने का भी उल्लेख मिलता है :

"إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ"(अल्-क़सस: 86)

निश्चित ही वह जिसने तुम पर क़ुरआन को अनिवार्य किया है, वह तुम्हें अवश्य ही एक बार फिर लौटने की जगह पर वापस ले जाएगा।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी इस आयत की व्याख्या में कहते हैं कि "मआद" अर्थात् लौटने की जगह से अभिप्राय मक्का है, और इसका कारण यह है कि इससे मुराद विजय के दिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक्का की ओर लौटना है। एक रिवायत में है कि जब हिजरत के समय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का और मदीना के मध्य में थे, तो आपने मक्का के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किया। तब हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) उतरे और बोले: क्या आप अपने वतन और जन्मस्थान की ओर रुझान रखते हैं? आपने फ़रमाया: हाँ। तो जिब्रईल ने कहा: अल्लाह तआला फ़रमाता है :

"إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ"

अर्थात् निश्चय ही वह ज़ात जिसने तुम पर क़ुरआन को अनिवार्य किया है, वह तुम्हें अवश्य ही वापस लाने की जगह की ओर लौटाएगा अर्थात् क़ुरैश पर प्रभुत्व देकर मक्का की ओर लौटाएगा क्योंकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में थे, फिर उसे छोड़कर चले गए और फिर लौटे। और यह बात मक्का के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर उपयुक्त नहीं हो सकती।

अनुसंधान कर्ताओं के अनुसार, क़ुरआन करीम की यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का प्रमाण है क्योंकि आपने अल्लाह तआला की ओर से भविष्यवाणी की और वह वैसी ही पूरी हुई जैसी आपने बताई थी।

(उद्धारित अल्-तफ़्सीर अल्-कबीर राज़ी, जिल्द 13, जज़ 25, पृष्ठ 19, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया , बैरूत)

क़ुरआन-ए-करीम में एक और स्थान पर भी मक्का की विजय की भविष्यवाणी की गई है, जिसमेंहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) सहित सभी मुसलमानों को मानो एक याद दिलाई गई है कि देखो! तुम जहाँ कहीं भी जाओ, यह बात न भूलो कि अंततः मक्का विजय होना है, और इसके लिए तुम्हें प्रयास, परिश्रम और दुआओं की आवश्यकता होगी। इस क़ुरआनी भविष्यवाणी के आलोक में हम कह सकते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अब तक की समस्त युद्धों और सैन्य अभियानों का एक केंद्रीय उद्देश्य मक्का की विजय भी था।

इसलिए उस महान क़ुरआनी भविष्यवाणी "وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ"(البقرة: 150) का उल्लेख करते हुए, जो सूरह बक़रह की आयत है, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हु) इसकी व्याख्या में फ़रमाते हैं कि "وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ" के अर्थ मुफ़स्सिरीन ने यह किए हैं कि तुम जहाँ कहीं भी हो, हर स्थिति में अपना क़िबला मस्जिदे हराम को ही रखो। और इसका कारण यह बताया कि पूर्ववर्ती आदेश से यह भ्रम हो सकता था कि यह क़िबला केवल मदीना वासियों के लिए है, अन्य लोगों के लिए नहीं। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि तुम जहाँ से भी निकलो, अपना मुँह मस्जिदे हराम की ओर फेर लो।"

आप (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि "लेकिन वास्तव में, चाहे इस आयत में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित किया गया हो या तमाम मुसलमानों को, इसके अर्थ क़िबले की ओर मुँह करने के नहीं हो सकते। सबसे पहले इसलिए कि वे नमाज़ें जो किसी नगर या गाँव में रहते हुए अदा की जाती हैं, वे शहर से निकलते समय पढ़ी जाने वाली नमाज़ों से सामान्यतः अधिक होती हैं। ऐसी स्थिति में वह आदेश देना चाहिए था जो अधिक नमाज़ों पर लागू हो सकता, न कि ऐसा आदेश जो केवल यात्रा की स्थिति में ही लागू हो सके, जबकि उस समय नमाज़ अदा करने की संभावना बहुत ही कम होती है।"

"उदाहरणस्वरूप, हो सकता है कि कोई व्यक्ति सुबह दस बजे शहर से निकले या अस्र और मग़रिब के बीच, या आधी रात को। ये सभी समय ऐसे हैं जिनमें नमाज़ का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इन परिस्थितियों में 'وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ' का आदेश अर्थहीन हो जाता है क्योंकि शहर से निकलते समय बहुत कम ही नमाज़ का अवसर होता है। सामान्यतः तो मनुष्य उस समय तक नमाज़ अदा कर चुका होता है, और यदि नहीं की है तो कुछ देर बाद भी वह नमाज़ पढ़ सकता है। अतः बाहर निकलने और नमाज़ का आपस में कोई संबंध नहीं।"

"फिर इन अर्थों को उस स्थिति में भी सही ठहराया जा सकता था यदि कोई नमाज़ विशेष रूप से बाहर निकलने के समय से जुड़ी होती, लेकिन सभी जानते हैं कि कोई नमाज़ विशेष रूप से 'ख़ुरूज' यानी बाहर निकलने से संबंधित नहीं होती। ऐसी स्थिति में इस आयत को घर से यात्रा की शुरुआत के समय से जोड़ना किसी भी प्रकार से सही नहीं हो सकता।"

"इस बात का और भी प्रमाण यह है कि 'مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ' से अभिप्राय क़िबले की ओर मुँह करना नहीं हो सकता क्योंकि सफ़र की स्थिति में तो कभी-कभी दिशा का सवाल ही समाप्त हो जाता है, और जिस ओर मुँह होता है उसी ओर नमाज़ पढ़ी जाती है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति सवारी से उतर नहीं सकता तो क़ुरआन-ए-करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रथा यही प्रमाणित करती है कि उस समय जिस ओर मुँह हो, उसी ओर नमाज़ वैध है।"

"यदि कोई यात्रा में नमाज़ पढ़ रहा हो तो वह जिस दिशा में मुँह कर रहा हो, चाहे वह क़िबले की दिशा हो या न हो, उसकी नमाज़ ठीक मानी जाती है। उस समय दिशा का कोई प्रश्न नहीं उठता पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी एक समान होते हैं। केवल दिल की तवज्जुह काबे की ओर होना आवश्यक है।"

"आजकल जब कोई रेलगाड़ी में बैठा होता है तो उस समय भी दिशा का कोई निर्धारण नहीं होता क्योंकि रेल कभी उत्तर, कभी दक्षिण, कभी पूर्व और कभी पश्चिम की ओर घूमती रहती है। इसी प्रकार हवाई जहाज़ों के लम्बे सफ़रों में भी देखा जाता है कि फिर भी जो व्यक्ति उसमें बैठा नमाज़ पढ़ रहा होता है, उसकी नमाज़ में कोई दोष नहीं आता। यदि मुफ़स्सिरीन के अर्थों को सही माना जाए तो इस आदेश पर न सवार व्यक्ति अमल कर सकता है और न ही रेलगाड़ी वाला।"

"इसलिए जब यात्रा की स्थिति में दिशा भी सुनिश्चित नहीं रह जाती तो इस आयत से यह अर्थ निकालना कि जहाँ से भी तुम निकलो काबे की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ो, कैसे सही हो सकता है?"

"फिर यह अर्थ इसलिए भी सही नहीं हो सकता क्योंकि इस आयत के शाब्दिक अर्थ बनते हैं: 'तुम जहाँ से भी निकलो, अपने मुँह मस्जिदे हराम की ओर कर लो'। अब यह तो हर व्यक्ति जानता है कि चलते समय नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, बल्कि नमाज़ ठहर कर ही अदा की जाती है। हाँ, यदि इस आयत के शब्द होते 'حَيْثُ مَا كُنْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ', यानी 'तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने मुँह मस्जिदे हराम की ओर कर लो', तब तो ये अर्थ उचित हो सकते थे।"

"लेकिन यहाँ तो फ़रमाया गया है 'مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ' अर्थात् 'ऐ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! या ऐ मुसलमानो! जहाँ से भी तुम निकलो, अपने मुँह मस्जिदे हराम की ओर कर लो।' अब यह स्पष्ट बात है कि नमाज़ निकलते समय नहीं पढ़ी जाती बल्कि किसी स्थान पर ठहरकर ही पढ़ी जाती है। अतः यह ज्ञात हुआ कि यहाँ नमाज़ पढ़ने के अर्थ लेना किसी भी प्रकार से सही नहीं।"

"मुफस्सिरीन कहते हैं कि यदि नमाज़ और 'ख़ुरूज' का कोई संबंध न माना जाए तो फिर दोहराव (तकरार) का दोष उत्पन्न होता है। जबकि यह सोच भी ग़लत है। उन्हें क़ुरआन-ए-करीम में दोहराव इसलिए दिखता है क्योंकि वे क़ुरआन के वास्तविकउद्देश्यों और विषयों के आपसी संबंध को नहीं समझ सके। जहाँ उन्हें कोई आपत्ति दिखाई देती है, वहीं 'नासिख' और 'मंसूख़' की बहस शुरू कर देते हैं, और एक आयत को 'नासिख' और दूसरी को 'मंसूख़' घोषित कर के आपत्ति से पीछा छुड़ाते हैं।"

"जबकि क़ुरआन-ए-करीम के जो गहरे सत्य हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) ने दुनिया को बताए हैं, यदि उन्हें ध्यान में रखा जाए तो न तो क़ुरआन में कोई दोहराव दिखाई देगा और न ही किसी आयत को मंसूख़ कहना पड़ेगा।"

"असल बात यह है कि जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाला गया, तो इस्लाम विरोधियों को यह आपत्ति उठाने का अवसर मिला कि यदि आप 'दुआए इब्राहीमी' के प्रतीक थे और काबे से आपका संबंध था, तो फिर आपको मक्का से क्यों निकाला गया? जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से निकाल दिएगए, तो आप इब्राहीमी दुआ का कैसे प्रतीक हो सकते हैं?"

"इस आपत्ति के उत्तर में अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ' ऐ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! तुम्हारा मक्का से निकाला जाना अस्थायी है। हम तुमसे यह वादा करते हैं कि हम तुम्हें फिर अवसर देंगे और तुम मक्का पर क़ाबिज़ हो जाओगे।'"

"लेकिन जहाँ अल्लाह तआला अपने वफ़ादार बंदों से वादा करता है, वहीं उनसे यह भी अपेक्षा करता है कि वे इस वादे को पूरा करने के लिए प्रयास भी करेंगे। यह नहीं कि वादा हो और वे हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएँ कि जब अल्लाह ने वादा किया है तो वही उसे पूरा करेगा हमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं।"

"हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम से अल्लाह ने वादा किया था कि उन्हें कनआन का देश दिया जाएगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को साथ ले कर चल पड़े। जब वह देश सामने आ गया, तो आपने उनसे कहा: जाओ, लड़कर इस देश पर अधिकार कर लो। लेकिन उन्होंने ग़लती से यह समझ लिया कि जब अल्लाह ने देश देने का वादा किया है, तो वही इसे हमारे हाथों में देगा। हमें इसके लिए संघर्ष करने की कोई आवश्यकता नहीं।"

"उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कह दिया: 'اذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ' ऐ मूसा! तू और तेरा रब जाकर लड़ो, हम यहीं बैठे हैं।'"

"बाहरी रूप से उनका यह कहना सही प्रतीत हो सकता था, लेकिन यह खुदा तआला के तरीक़ों के अनुसार अत्यंत ही अनुचित था। इसलिए अल्लाह तआला ने उनकी सराहना नहीं की, बल्कि फ़रमाया: 'तुमने हमारी तौहीन की है, इस कारण तुम्हें इस देश से वंचित कर दिया जाता है। जाओ, चालीस वर्ष तक जंगलों में भटकते रहो। तुम इस देश के उत्तराधिकारी नहीं बन सकते, बल्कि तुम्हारी आने वाली पीढ़ियाँ इसका उत्तराधिकारी बनेंगी।'"

"तो देखो, यह बात मानवीय दृष्टिकोण से भले ही ठीक लगे, लेकिन खुदा तआला की प्रणालियों में यह अत्यंत ही अनुचित और दंड का कारण बनती है। क्योंकि जब कोई मनुष्य वादा करता है, तो वह स्वर्गीय और पृथ्वी के परिवर्तनों पर नियंत्रण नहीं रखता।"

"लेकिन जब वादा अल्लाह तआला की ओर से होता है, तो इसका अर्थ होता है कि यदि वह चीज़ तुम्हारे लिए असंभव भी हो, तब भी हम अपनी सहायता से उसे तुम्हारे लिए संभव कर देंगे।"

जो कौम फ़िरऔन की सैंकड़ों वर्षों तक ग़ुलाम रही, जो ईंटें बनाती रही, लकड़ियाँ काटती रही, और सबसे नीच से नीच कार्य करती रही वह इतनी विशाल और शक्तिशाली धरती पर, जिस पर आद की जाति शासन करती थी, कैसे क़ब्ज़ा कर सकती थी? ऐसा राज्य प्राप्त कर लेना उसके लिए कोई सरल बात नहीं थी, लेकिन खुदा तआला ने कहा कि यद्यपि यह राज्य पाना तुम्हें असंभव प्रतीत होता है, तथापि हम यह वादा करते हैं कि हम यह राज्य तुम्हें देंगे, और तुम इसे हमारी सहायता से प्राप्त कर लोगे। अतः खुदा तआला के वादों का यह अर्थ नहीं होता कि चूँकि उसने वादा कर दिया है, इसलिए बन्दे को कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं, बल्कि इसका अर्थ यह होता है कि जब तुम इस वस्तु को प्राप्त करने के लिए उचित उपाय और मेहनत करोगे, तो खुदा तआला तुम्हारी सहायता करेगा और तुम सफल हो जाओगे। अर्थात्, खुदा तआला के वादों का रंग अलग होता है और मनुष्य के वादों का रंग अलग।

खुदा तआला के वे वादे जिनमें उपाय सम्मिलित होते हैं, उनमें मनुष्य को भाग लेना होता है, और उन्हें पूरा करने के लिए प्रयास करना पड़ता है। यदि मनुष्य उनमें भाग नहीं लेगा और उन्हें पूरा करने की कोशिश नहीं करेगा, तो वह दंड का पात्र बनता है।

लेकिन मनुष्य के वादों में ऐसा नहीं होता। मनुष्य यह नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारे लिए खुदा तआला की तक़दीर बदल दूँगा, क्योंकि वह उसके अधिकार में नहीं होती। यदि वह ऐसा कहेगा तो खुदा तआला कहेगा कि, "तुम कौन होते हो तक़दीर बदलने वाले?" लेकिन खुदा तआला यह कह सकता है कि यदि तुम ऐसा करोगे, यदि मेरे आदेशानुसार उपाय करोगे, तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा और अपनी तक़दीर को बदल दूँगा, क्योंकि तक़दीर एक ऐसी वस्तु है जो उसी के अधीन है और वह जब चाहे उसे बदल सकता है। जब रसूल-

ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़त्ह मक्का का वादा दिया गया तो साथ ही मुसलमानों से यह भी कहा गया कि :

"हे मुसलमानो ! तुम मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम की भाँति यह मत समझ लेना कि चूँकि खुदा तआला ने मक्का देने का वादा कर लिया है, अतः वही उसे स्वयं पूरा करेगा और हमें कोई उपाय नहीं करना।" बल्कि तुम्हें भी इसे पूरा करने के लिए प्रयास करना होगा।

खुदा तआला के वादे का यह आशय है कि तुम कमज़ोर हो। यदि तुम कमज़ोर न होते तो मक्का को क्यों छोड़ते? मक्का को छोड़ने का अर्थ ही यह था कि तुम कमज़ोर हो और तुम्हारा शत्रु शक्तिशाली और समर्थ है, लेकिन खुदा तआला तुम्हें शक्ति देगा और तुम शत्रु से मक्का छीन लोगे। अतः

"وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ"

का अर्थ यह हुआ कि तुम जहाँ से भी निकलो या जिस स्थान से भी निकलो तुम्हारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमें मक्का को जीतना है। फिर "خروج" का अर्थ सेना-यात्रा (लश्करकशी) करना भी होता है। इस अर्थ में इस आयत का आशय यह होगा कि तुम जहाँ भी सेना-यात्रा करो, किसी भी दिशा में युद्ध हेतु निकलो, चाहे तुम पूरब की ओर जाओ या दक्षिण की ओर, पश्चिम की ओर निकलो या उत्तर की ओर, तुम्हारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि यह यात्रा फ़त्ह मक्का की नींव रखने वाली हो। उदाहरण के लिए यदि तुम दक्षिण की ओर किसी शत्रु पर आक्रमण करना चाहो लेकिन तुम्हें यह पता चले कि उसके क्षेत्र के पश्चिम की ओर उसके साथी मौजूद हैं, और यह आशंका हो कि कहीं वे पीछे से हमला न कर दें। तो यदि तुम पहले पश्चिम की ओर आक्रमण कर उन साथियों को समाप्त कर लो, तो इसका अर्थ यह होगा कि वह पश्चिमी आक्रमण वास्तव में दक्षिणी आक्रमण की भूमिका है। इसी प्रकार यदि उस क़ौम के साथी उत्तर में रहते हों और तुम पहले उन पर आक्रमण करो, तो वह आक्रमण भी वास्तव में दक्षिण पर ही होगा, क्योंकि तुम्हारा मूल उद्देश्य दक्षिण के शत्रु पर आक्रमण करना ही होगा। इसी मूल की ओर संकेत करते हुए खुदा तआला कहता है कि हे मुसलमानो! तुम किसी क़ौम, किसी देश या किसी क्षेत्र पर आक्रमण करो, तुम्हारी दिशा मक्का की ओर होनी चाहिए क्योंकि खुदा तआला उसे तुम्हारे हाथों फतह कराना चाहता है।

जब हम रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात (धार्मिक युद्धों) पर दृष्टि डालते हैं तो हमें स्पष्ट रूप से यह रंग दिखायी देता है कि आपकी सभी लड़ाइयों का प्रमुख उद्देश्य फ़त्ह मक्का ही था। जिस युद्ध में आप यह उद्देश्य बाधित होता देखते या जिस क़ौम के विषय में आप यह अनुभव करते कि उससे युद्ध करने के परिणामस्वरूप फ़त्ह मक्का में देर हो सकती है, वहाँ आप यद्यपि उकसाये भी जाते, तब भी संयम और उपेक्षा से काम लेते। कई क़ौमें आपके मुक़ाबले के लिए उठीं, उन्होंने छेड़छाड़ भी की, लेकिन आपने सदा क्षमा और शांति का व्यवहार किया। परन्तु जब कोई ऐसी क़ौम खड़ी हुई जिसे हराने से फ़त्ह मक्का के समीप आने की संभावना होती, तो आपने अवश्य उससे युद्ध किया।

यदि सभी इस्लामी युद्धों पर दृष्टि डाली जाए तो यह स्पष्ट होगा कि वे सब अपने भीतर एक गूढ़ रणनीतिक दृष्टिकोण लिए हुए थीं। विशेषकर फ़त्ह मक्का से पूर्व जितने भी युद्ध हुए, उनका उद्देश्य केवल यह था कि फ़त्ह मक्का का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

यदि इस आयत का यह अर्थ होता कि "तुम जहाँ से भी निकलो क़िबला की ओर मुँह करो" तो जैसा कि पहले बताया गया है, "مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ" जैसे शब्द आयत में नहीं होते, बल्कि इसके स्थान पर यह शब्द होते कि "तुम जहाँ कहीं भी हो, क़िबला की ओर मुँह रखो"। क़िबला की ओर मुँह करने के लिए "जहाँ कहीं भी हो" जैसे शब्द होने चाहिए थे, न कि "जहाँ से भी निकलो, मुँह फेर लो" क्योंकि लोग निकलते समय नमाज़ नहीं पढ़ते। निकलते समय तो लोग चलते हैं। अतः इस आयत का नमाज़ों की अदायगी से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि इस आयत का मात्र यही अर्थ है कि तुम जहाँ से भी निकलो। चाहे उस स्थान से जो पूर्व की ओर हो, चाहे उस स्थान से जो पश्चिम की ओर हो, चाहे उत्तर की ओर से या दक्षिण की ओर से। तुम्हारा मुख मक्का की ओर होना चाहिए, अर्थात् तुम्हारी चिन्तन-दिशा, ध्यान और मस्तिष्क केवल इसी लक्ष्य की ओर केन्द्रित होना चाहिए कि हमें मक्का को फ़तह करना है और वहाँ इस्लाम को स्थापित करके सम्पूर्ण अरब को अपने प्रभाव में लाना है।

"وُجُوْهَ" (वुजूद) का अर्थ "ध्यान" और "दिशा" भी होता है। अतः इसका आशय यह है कि तुम्हारा केवल एक ही उद्देश्य होना चाहिए कि तुम ख़ाना-ए-क़ाबा को फ़तह करके उसे इस्लाम का केन्द्र बनाओ, क्योंकि जब तक मक्का में इस्लाम नहीं फैलता, जब तक मक्का मुसलमानों के अधीन नहीं आता, तब तक समस्त अरब मुसलमान नहीं हो सकता। यही वह कार्यक्रम था जो मुसलमानों के लिए निर्धारित किया गया, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह कार्यक्रम उनकी सामर्थ्य से बहुत ऊँचा था। यद्यपि अरब की कोई संगठित सरकार नहीं थी, पर वह अराजकता भी नहीं थी। विभिन्न शासक उसके साथ सम्बन्ध रखते और संधियाँ करते थे। इसी प्रकार मक्का यद्यपि पूर्णतः संगठित न था, पर वह एक ऐसे देश की राजधानी अवश्य था जिसकी जनसंख्या पंद्रह-बीस लाख के लगभग थी। उसके चारों ओर के सभी क़बीलों की दृष्टि उसकी ओर लगी रहती थी और वे उसके आदेशों और निर्णयों को पालन करने योग्य मानते थे। फिर उस युग की दृष्टि से मक्का एक अत्यंत बड़ा नगर था। उसकी जनसंख्या पंद्रह-सोलह हज़ार थी और न केवल उसकी सम्पूर्ण जनसंख्या बल्कि पूरे देश के पंद्रह-बीस लाख व्यक्ति सभी के सभी सैनिक थे। युद्ध-कौशल में अत्यधिक दक्षता रखते थे। युद्धकुशल, वीर और योद्धा थे और मुसलमानों के लिए उनका सामना करना कोई सरल कार्य नहीं था। जिस समय यह आयत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी, उस समय मुसलमानों में केवल चार-पाँच सौ सैनिक थे, अधिक से अधिक एक हज़ार मान लो, और स्त्रियों व बच्चों सहित उनकी कुल संख्या ग्यारह-बारह हज़ार ही थी। इससे अधिक मुसलमानों की संख्या नहीं थी और उनकी युद्ध-शक्ति तो न के बराबर थी। परंतु ऐसी स्थिति में जब मुसलमान अत्यन्त दुर्बल थे, जब उनकी संख्या काफ़िरों की तुलना में नगण्य थी, जब उनके पास युद्ध का कोई सामान नहीं था, और जब उनकी युद्धशक्ति काफ़िरों के मुक़ाबले में कोई वास्तविकता नहीं रखती थी अल्लाह तआला समस्त काफ़िरों को चुनौती देता है कि ये मुसलमान, यद्यपि तुम्हें कमज़ोर और असहाय दिखते हैं, फिर भी एक दिन ये तुम्हारे देश को फ़तह करेंगे, तुम्हारी राजधानी पर क़ब्ज़ा करेंगे और वहाँ उन्हें ऐसा प्रभुत्व प्राप्त होगा कि वे इस्लामी आदेशों को वहाँ लागू करेंगे और अरब की धरती से कफ़्र को पूर्णतः मिटा देंगे। यह दावा मुसलमानों की स्थिति के सन्दर्भ में एक पागलपन-भरा दावा प्रतीत होता था, और फिर यह दावा किसी सीमित क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं था, बल्कि इसका प्रभाव अत्यन्त व्यापक था, क्योंकि इसमें केवल मक्का की फ़तह की भविष्यवाणी ही नहीं थी, न केवल अरब पर आधिपत्य का एलान किया गया था, बल्कि ईसाईयत को भी चुनौती दी गई थी, यहूदियत को भी चुनौती दी गई थी, मजूसियत को भी चुनौती दी गई थी, और बड़े ज़ोर से यह घोषणा की गई थी कि इन समस्त धर्मों को पराजित कर इस्लाम संपूर्ण संसार पर विजय प्राप्त करेगा। यह दावा एक पागलपन का दावा लगता था। इसी कारण काफ़िर लोग रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) पागल कहा करते थे और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी वे पागल समझते थे, क्योंकि वे ऐसा दावा कर रहे थे जिसके पूर्ण होने के लिए इस भौतिक संसार में कोई साधन उन्हें दृष्टिगोचर नहीं होते थे।

लेकिन सच्चाई यह है कि जब तक असाधारण कार्यों के लिए किसी भी व्यक्ति में वह विशेष मानसिक स्थिति उत्पन्न न हो जाए, जिसे चिकित्साशास्त्र में कभी-कभी *मोनोमेनिया* कहा जाता है : अर्थात् केवल और केवल एक ही लक्ष्य की ओर मन का पूर्ण रूप से लग जाना : जब तक वह अन्य सभी लक्ष्यों को भूल न जाए, जब तक उसमें हर समय एक बेचैनी और व्याकुलता न हो, जब तक उसमें असाधारण कार्यों के लिए पागलपन जैसा रंग उत्पन्न न हो जाए, तब तक ऐसे कार्यों में कभी सफलता नहीं मिल सकती। इसी की ओर *क़ुरआन करीम* ने इस आयत में ध्यान दिलाया है कि तुम सभी अन्य लक्ष्यों को भुला दो और केवल इस लक्ष्य को अपने सामने रखो कि हमें मक्का को इस्लाम के लिए फ़तह करना है। जब तक यह केन्द्र और यह दुर्ग तुम्हारे अधीन नहीं आएगा, समस्त अरब और फिर संपूर्ण विश्व पर तुम्हें प्रभुत्व प्राप्त नहीं होगा।

यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि अल्लाह तआला ने यह क्यों कहा कि "तुम जिस स्थान से भी निकलो, अपना ध्यान मस्जिदे हराम की ओर रखो", यह क्यों नहीं कहा कि "तुम जिस दिशा में भी युद्ध करो, अपनी नीयत मस्जिदे हराम की ओर रखो?" इसका उत्तर यह है कि "ख़ुरूज" (निकलना) के समय ही यह तय होता है कि इस युद्ध का उद्देश्य क्या है। यह नहीं होता कि मनुष्य पहले युद्ध आरम्भ कर दे और उद्देश्य बाद में सोचे। अतः चूँकि यहाँ फत्ह मक्का के उद्देश्य को सामने रखने की ओर ध्यान दिलाना उद्देश्य था, इसलिए कहा गया कि जब तुम निकलो तो यह देख लो कि हमारे इस युद्ध का प्रभाव फत्ह मक्का पर क्या पड़ेगा। यदि वह युद्ध फत्ह मक्का में सहायक न हो, तो उसे त्याग दो। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि इस्लाम अपने अनुयायियों को आक्रामक युद्ध की अनुमति देता है, क्योंकि इतिहास से सिद्ध है कि इन आयतों के अवतरण से पहले ही काफ़िरों से युद्ध प्रारम्भ हो चुके थे। यह बात भी ध्यान में रहनी चाहिए कि *"مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ"* में केवल रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित किया गया है, और इसका कारण यह है कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् इस प्रकार की फत्ह मक्का की आवश्यकता शेष नहीं रहनी थी, क्योंकि आपके बाद मक्का पर कोई आक्रमण नहीं होना था, बल्कि वह पूर्णतः मुसलमानों के अधीन ही रहने वाला था। अर्थात् इसमें भविष्य के लिए यह भविष्यवाणी भी कर दी गई कि मक्का श्रीमती की दोबारा शारीरिक फत्ह नहीं होगी, क्योंकि मक्का की महिमा को बनाए रखने वाली एक सक्रिय जमाअत उत्पन्न कर दी जाएगी, और वह सदा मुसलमानों के नियंत्रण में ही रहेगा।

(तफ़्सीर कबीर, खंड 3, पृष्ठ 18–11, संस्करण 2022)

यह तफ़्सीर और भूमिका इसलिए आवश्यक थी कि आगे फतह मक्का से संबंधित जो घटनाएँ आने वाली हैं, उन्हें इसी पृष्ठभूमि में समझना आसान हो जाएगा। बाक़ी, इंशा अल्लाह, आगे वर्णन करूँगा।

इस समय मैं एक शहीद का उल्लेख भी करूँगा और नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा भी पढ़ाऊँगा। यह हैं:

श्रीमान डॉ. शेख़ मुहम्मद महमूद साहिब इब्न शेख़ मुबश्शिर अहमद साहिब देहलवी।

आप सरगोधा के रहने वाले थे। 16 मई को एक विरोधी अहमदियत ने आप पर गोलीबारी करके शहीद कर दिया।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

विवरण में बताया गया है कि जिस दिन यह घटना हुई, उस दिन डॉ. साहिब जुमे की नमाज़ अदा करने के बाद अपने परिवार के साथ फ़ातिमा अस्पताल, सरगोधा पहुँचे, जहाँ वह प्रैक्टिस करते थे। अस्पताल में दाख़िल होकर मुख्य स्वागत स्थल से गुज़रते हुए जब आप आपातकालीन विभाग के सामने के कॉरिडोर में पहुँचे और अपने कमरे की ओर जा रहे थे, तभी एक अज्ञात व्यक्ति, जो पहले से वहाँ मौजूद था और पीछे-पीछे चल रहा था, उसने शॉपिंग बैग से पिस्तौल निकालकर पीठ पर गोली चला दी। उन्हें दो गोलियाँ लगीं जो आरपार हो गईं। तत्क्षण उन्हें सिविल अस्पताल ले जाया गया लेकिन घावों की गहराई के कारण डॉ. साहिब शहीद हो गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

घटना के बाद हमलावर हथियार लहराते हुए अस्पताल के बाहर खड़े अपने साथी के साथ मोटरसाइकिल पर फरार हो गया। शहादत के समय डॉ. साहिब की आयु 59 वर्ष थी।

शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का प्रवेश उनके परदादा श्रीमान बाबू एजाज़ हुसैन साहिब के भाई हज़रत सरफ़राज़ हुसैन साहिब देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से हुआ था, जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत कर अहमदियत को स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त किया। बाद में शहीद के परदादा बाबू एजाज़ हुसैन साहिब ने भी अपने भाई के माध्यम से बैअत कर ली। उनके परदादा और दादा, श्रीमान बाबू नज़ीर अहमद साहिब, दोनों को बारी-बारी से जमाअत अहमदिया देहली के अमीर के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ प्राप्त हुई।

शहीद मरहूम ने एफ.सी. कॉलेज, लाहौर से एफ.एस.सी. किया। फिर रावलपिंडी मेडिकल कॉलेज में दाख़िला लिया और 1990 में एम.बी.बी.एस. की डिग्री प्राप्त की।

इसके बाद पंजाब पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा पास कर चार वर्ष तक सर्विसेज़ अस्पताल और जिन्ना अस्पताल, लाहौर में सेवा की। 1998 में उन्हें रॉयल कॉलेज ऑफ फिजीशियन, यू.के. की मेंबरशिप प्राप्त हुई और 2021 में फ़ेलोशिप का सम्मान भी मिला। 2001 में आप सरगोधा आ गए। इस स्थानांतरण के पीछे मानवता की सेवा की भावना मुख्य थी। आप ज़िले के पहले लिवर और डाइजेस्टिव डिज़ीज़ स्पेशलिस्ट थे। सरगोधा में एक निजी अस्पताल से जुड़ गए। उस अस्पताल के मालिक से आपके अच्छे संबंध थे, लेकिन वह व्यक्ति राजनीति में था। 2018 में उसने क़ौमी असेम्बली का चुनाव लड़ना था। मौलवियों की धमकियों के कारण उसे कहना पड़ा कि आप अस्पताल छोड़ दें। इस प्रकार डॉ. साहिब ने वह अस्पताल छोड़ दिया और किसी अन्य अस्पताल से जुड़ गए।

2001 से ही आप नियमित रूप से फ़ज़्ल-ए-उमर अस्पताल, रब्वा में विज़िटिंग डॉक्टर के रूप में सेवा दे रहे थे और अल्लाह तआला ने आपके हाथ में शिफ़ा रखी थी। बड़ी संख्या में मरीज़ आपसे लाभान्वित होते थे। दुनियावी ज्ञान के अतिरिक्त आपको धार्मिक ज्ञान भी बहुत था। क़ुरआन की तफ़्सीर, तज़्किरा, रूहानी ख़ज़ायन सहित जमाअत की अन्य पुस्तकों और विवादास्पद विषयों पर आधारित किताबों का गहन अध्ययन था। आपको ज़िला सरगोधा के नायब अमीर के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ प्राप्त हुई। मेडिकल एसोसिएशन के गठन से ही आप उसके सदस्य थे और 2024 में नायब सदर नियुक्त हुए तथा सरगोधा चैप्टर के सदर भी थे। पिछले तीन वर्षों से आपको कैंसर की तकलीफ़ थी। इसके बावजूद आपने अपनी बीमारी पर दूसरों की बीमारी को वरीयता दी और सदैव सेवा के लिए तत्पर रहे। मरीज़ों से सहानुभूति, प्रेम और ज़रूरतमंदों का मुफ़्त इलाज आपकी प्रमुख विशेषता थी। ज़रूरतमंदों को वापस जाने का किराया तक दे देते थे। कुछ टेस्ट मुफ़्त करवा कर उसके पैसे स्वयं देते थे। जैसा कि पहले ज़िक्र हुआ, आप ज़िले के पहले लिवर स्पेशलिस्ट थे।

आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर कन्याओं की शादियों में गुप्त रूप से बड़ी सहायता किया करते थे। लिखा है कि एक ज़रूरतमंद व्यक्ति को वर्षों से नियमित रूप से आर्थिक सहायता दे रहे थे। शुरू में वह व्यक्ति महीने में एक-दो बार आता था, बाद में हर दूसरे या तीसरे दिन आने लगा लेकिन फिर भी आपने उसकी मदद जारी रखी। डॉ. साहिब सामान्यतः नाराज़ नहीं होते थे, अत्यंत कोमल हृदय थे। एक बार किसी बात पर कोई कठोर शब्द उनके मुख से निकल गया, तो सारी रात बेचैनी और ग्लानि में रहे। अगले दिन उसे बुलाया, क्षमा माँगी और सहायता के रूप में बड़ी रक़म दी।

आपका बड़ों से अत्यधिक श्रद्धा का संबंध था। आवश्यकता पड़ने पर विशेष रूप से रब्वा जाकर मरीज़ों का निरीक्षण और उपचार किया करते थे।

शहीद मरहूम की माता, श्रीमती उम्मतुल हय्य साहिबा, कहती हैं कि वे माता-पिता का बहुत सम्मान करते थे। कोई आवश्यकता नहीं थी जो बिना कहे पूरी न की हो। हमने कभी माँग नहीं की, लेकिन वे स्वयं पूरी करते थे। बाल्यकाल से ही अनेक विशेषताओं के धनी थे। अपने काम से काम रखने वाले, ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम करने वाले थे। ग़रीबों और मरीज़ों की बहुत देखभाल करते थे। वित्तीय मामलों में अत्यंत सटीक और पारदर्शी थे। परिवार के सभी सदस्यों को आपस में जोड़े रखते थे।

उनकी पत्नी, उम्मतुन नूर साहिबा, कहती हैं कि वे सदैव बच्चों को जमाअत के साथ जुड़ाव की हिदायत देते थे। ख़िलाफ़त से अत्यधिक लगाव था। ख़ुत्बात नियमित रूप से सुनते थे और अपने डायरी में प्रमुख बिंदु नोट किया करते थे। बहुत कम लोग ऐसा करते हैं, यहाँ तक कि वाक़िफ़ीन-ए-ज़िंदगी भी नहीं करते। यह बिंदु नोट करते थे ताकि आगे उपयोग में आएँ। चंदा की अदायगी भी आदर्श थी। शहादत के समय उनका 2025 का चंदा-ए-वसीयत का पूरा हिसाब साफ़ था।

आपके चार बच्चे हैं। दो बेटे और दो बेटियाँ। आपके बेटे डॉक्टर बसीर कहते हैं कि पिता सदैव हमें ख़िलाफ़त से जुड़ने की हिदायत देते थे। बेटी सायमा कहती हैं कि अत्यंत स्नेही पिता थे। विवाह के अवसर पर मुझे विशेष रूप से यह नसीहत दी कि "बेटी! ससुराल जाकर सदैव जमाअत के साथ जुड़ी रहना। यदि किसी रूप में जमाअती सेवा का अवसर मिले तो कभी इंकार न करना।" वे कहती हैं कि वे सामान्य गतिविधियों में भी जमाअती सेवा का पहलू ढूँढ लिया करते थे।

उनकी एक बहू कहती हैं कि वे अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखने वाले थे। जब भी कोई सलाह माँगी, तो उन्होंने दुआ से शुरू किया और दुआ पर ही समाप्त किया।

उनकी बहन कहती हैं कि वे जमाअत के विरोधी गतिविधियों को लेकर अत्यधिक चिंतित रहते थे। रातों को उठकर नफ़्ल और तहज्जुद पढ़ना उनका नियमित अभ्यास था।

अमीर ज़िला सरगोधा, खालिद महमूद साहिब कहते हैं कि वे ग़रीबों के मसीहा और महान इंसान थे। नाफ़े-उन्नास होने के साथ-साथ विनम्रता और नम्रता की विशेषता भी प्रमुख थी। अक्सर ग़रीब मरीज़ों को फीस वापस कर दिया करते थे। जमाअती क़ुर्बानी में भी विशेष रुचि थी। वादों के अनुसार चंदा देने के अतिरिक्त, अतिरिक्त चंदे में भी विशेष रूप से भाग लेते थे। जमाअती पदाधिकारियों का अत्यधिक सम्मान किया करते थे।

सरगोधा के मुरब्बी सिला ज़ुबैर साहिब कहते हैं कि हमारा अत्यंत प्रिय, मानवता का सेवक, करुणा और प्रेम की मूर्ति, लाखों का मसीहा, ख़िलाफ़त का दीवाना, एक जीवंत फ़रिश्ता हमसे बिछड़ गया। शहीद मरहूम एक दरवेश स्वभाव के इंसान थे। जीवन का प्रत्येक पक्ष आदर्श था। जब भी कोई पदाधिकारी या वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी उनके पास जाता, तो आप उठकर खड़े हो जाते और विदा के समय द्वार तक पहुँचाकर विदा करते। जब उन्हें यह बताया गया कि हालात ख़राब हैं, तो उन्होंने यही उत्तर दिया कि मैं गार्ड या सेवक तो रख लूँ पर यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि ख़ुदा न ख़ास्ता कोई मुझे मारने आए और मेरी वजह से किसी और की जान चली जाए। हालाँकि विरोधियों ने उनके ख़िलाफ़ ज़िले भर में पर्चे बाँटे थे कि हत्या की जाए, यह सज़ा दी जाए, वह दी जाए। इसके बावजूद उन्होंने कभी परवाह नहीं की। विरोधियों ने जो अहमदी डॉक्टरों की सूची बनाई थी, उसमें उनका नाम सबसे ऊपर था। एक मौलवी अक़रम तूफ़ानी तो बाक़ायदा उनके वाजिब-उल-क़त्ल होने का फ़तवा दे चुका था और उसे वितरित भी किया था। लेकिन सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया।

फ़ातिमा अस्पताल, जो एक ईसाई मिशनरी अस्पताल है, उसके प्रशासक, जो एक पादरी भी हैं, उन्होंने कहा कि मानवता का सेवक हमसे बिछड़ गया। हमारे हृदय दुःख और शोक से टूट चुके हैं। यही प्रशासक, जो ईसाई हैं, अपने अन्य साथियों और अस्पताल स्टाफ़ के साथ शहीद के जनाज़े में रब्वा भी आए।

सामाजिक और प्रिंट मीडिया ने भी डॉ. साहिब की शहादत को व्यापक रूप से कवर किया। एक सहायक आयुक्त हैं, उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा, परंतु बात वही है कि ये लोग सिर्फ़ लिख सकते हैं, कर कुछ नहीं सकते क्योंकि मौलवियों के सामने खड़े होने या उनके ख़िलाफ़ कोई निर्णय लेने की उनमें हिम्मत नहीं होती। लेकिन फिर भी यह उनकी हिम्मत ही है कि एक स्त्री होकर भी उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा कि शेख़ महमूद ग़रीबों के मसीहा से कम न थे। अत्यंत कुशल मेडिकल विशेषज्ञ थे। कई बार महँगे से महँगा टेस्ट भी ग़रीबों के लिए मुफ़्त कर देते थे। ज़िले भर में शायद ही कोई घर ऐसा होगा जिसने डॉ. साहिब से इलाज न करवाया हो। वह स्वयं जमाअत से नहीं हैं, फिर भी उन्होंने यह प्रशंसा की। कहती हैं कि अक्सर फ़्री इलाज करते थे और यह बहुत बड़ा काम है। मुझे इसका इसीलिए भी संज्ञान है क्योंकि मैं स्वयं भी डॉक्टर हूँ। डॉ. साहिब यदि किसी और देश में जाते, तो बहुत पैसे कमा सकते थे और एक आरामदायक जीवन व्यतीत कर सकते थे, लेकिन उन्होंने सरगोधा में ही रहकर मानवता की सेवा को प्राथमिकता दी। कहती हैं कि आज पहली बार किसी इंसान के जाने पर मैं आँसुओं से रोई हूँ, जिससे मेरा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं था, केवल इंसानियत का संबंध था। इस शख़्स ने अल्लाह के बंदों पर बहुत एहसान किए थे। यदि आप पूछें कि उनका जुर्म क्या था, तो अर्ज़ है कि उनका जुर्म अहमदी होना था।

एक अन्य डॉक्टर ने लिखा कि डॉ. साहिब सरगोधा के पहले डॉक्टर थे जिन्होंने ईआरसीपी (ERCP) जैसी जटिल प्रक्रिया की शुरुआत की थी। इतने योग्य और वरिष्ठ होने के बावजूद, आज भी सरगोधा में सबसे कम दरों पर चिकित्सा सेवाएँ देते थे। केवल अपने मतभेदित विश्वास के कारण उन्हें मार दिया गया। क्या इस देश में कोई क़ानून है?

एक निजी चैनल के एंकर और पत्रकार ने लिखा कि इस अत्यंत दुखद और घृणित बर्बर कृत्य पर मेरी निंदा के लिए शब्द नहीं हैं।

एक अन्य पत्रकार ने लिखा कि अब बहुत हो चुका। पाकिस्तान को बचाने के लिए कट्टरपंथी समूहों और संगठनों को रोकना अनिवार्य है। बुनियादी मानवाधिकारों और अहमदियों के ख़िलाफ़ इस प्रकार की गतिविधियों को समाप्त करने के लिए इन कट्टरपंथी संगठनों पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है। लेकिन तथाकथित धार्मिक ठेकेदारों का भय इतना अधिक है कि सरकार तक बेबस है। यहाँ तक कि क़ानून लागू करने वाले संस्थान भी लाचार हैं और अदालतें भी विवश हैं।

अल्लाह तआला अब जल्द ही ऐसे लोगों की पकड़ के साधन बनाए और देश को बचाने के लिए आवश्यक है कि इन तथाकथित धार्मिक लोगों से, जो वास्तव में आतंकवादी हैं और धर्म के नाम पर आतंक फैला रहे हैं, छुटकारा प्राप्त किया जाए।

क्योंकि ये लोग तो देश को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं और हर स्थान पर हर उस व्यक्ति पर हमला करते हैं जो इनके ख़िलाफ़ बोलता है। ख़ैर,

हमारी फ़रियादें तो अल्लाह तआला के समक्ष हैं और हमें उसका पूरा हक़ अदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद करे। उनके परिवारजनों को सब्र और हिम्मत प्रदान करे।

उनकी माता जी वृद्ध हैं, उनके दुख को हल्का करे। उनकी पत्नी और बच्चों को अल्लाह अपनी सुरक्षा और शांति में रखे।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर वह इसे उठा लेगा और नबुव्वत के तरीक़े पर खिलाफ़त क़ायम होगी। फिर जब अल्लाह चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार दुख पहुँचाने वाली बादशाहत क़ायम होगी। जब यह दौर समाप्त होगा तो उससे भी ज़्यादा ज़ालिम बादशाहत क़ायम होगी, जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा। उसके बाद फिर नबुव्वत के तरीक़े पर खिलाफ़त क़ायम होगी। और यह फ़रमाकर आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) चुप हो गए। (अल् -हदीस)

जब तक हम खिलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे।

"ख़ुदा ने मुझे मुख़ातिब करके फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को इतिला दूँ कि वे लोग जो ईमान लाए ऐसा ईमान जिसमें दुनिया की मिलावट नहीं, और वह ईमान जो निफ़ाक़ या बुज़दिली से आलूदा नहीं, और वह ईमान जो इताअत के किसी दर्जे से महरूम नहीं ऐसे लोग ख़ुदा के पसंदीदा लोग हैं, और ख़ुदा फ़रमाता है कि वही हैं जिनका क़दम सिद्क़ का क़दम है।"

(हज़रत मसीह मौूद अलैहिस्सलाम)

अतः हमें चाहिए कि हम खिलाफ़त से जुड़े रहें और खिलाफ़त के निज़ाम को क़ायम रखने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहें। यदि हम ऐसा करते रहेंगे, तो क़ियामत तक हम खिलाफ़त से वाबस्ता रहेंगे, हमारी नस्लें वाबस्ता रहेंगी और इसके फ़ैज़ से लाभान्वित होती रहेंगी।

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो रातों को उठकर अपनी नमाज़ों में अफ़राद-ए-जमाअत के लिए दुआ करता है। क्या कोई बादशाह ऐसा है जो यह अमल करता हो?

अल्लाह तआला ने खिलाफ़त को जारी रखने के लिए और इससे फ़ैज़ पाने के लिए हमें यह तालीम दी है कि जो लोग इस खिलाफ़त से जुड़े होंगे वे अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करें और उसके हुक्मों पर अमल करें।

अल्लाह तआला की इबादत को हमेशा सामने रखें, क्योंकि अल्लाह की कामिल इताअत करने वाले वही हैं जो हमेशा अल्लाह को याद रखते हैं और उसकी इबादत में लगे रहते हैं। हमेशा याद रखें कि खिलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़ने में ही अब दुनिया की बक़ा है। और खिलाफ़त-ए-अहमदिया उस निज़ाम का सिलसिला है, उस वादे का सिलसिला है जो अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया था।

खिलाफ़त-ए-अहमदिया की यह कड़ी है जो सीधे अल्लाह तआला की ओर ले जाती है।

निज़ाम-ए-खिलाफ़त की अहमियत और बरकात, और इससे जुड़ी हुई ताइयीदात-ए-इलाहिया का गहराई से भरा हुआ बयान।

डॉक्टर कर्नल पीर मुहम्मद मुनीर साहिब, पूर्व प्रशासक, फज़्ल उमर-ए-अस्पताल रब्वा और श्रीमती सलीमा ज़ाहिद साहिबा की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ाएब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۚ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۵﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۷﴾

(النور: ۵۴ تا ۵۷)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत-ए-अहमदिया में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम हुए एक सौ सत्रह वर्ष बीत चुके हैं।

1908 ईस्वी में यह निज़ाम स्थापित हुआ और अल्लाह तआला के वादों और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार यह क़ायम हुआ। यह अल्लाह तआला का अत्यंत महान उपकार है जमाअत-ए-अहमदिया पर कि हम एक ऐसे निज़ाम का हिस्सा हैं जिसकी भविष्यवाणी अल्लाह तआला ने फ़रमाई थी कि मसीह व महदी की आमद के पश्चात एक ऐसा युग आरंभ होगा जो इस्लाम की नवजीवन-प्राप्ति (निशात-ए-सानिया) का युग होगा और फिर इसी निज़ाम में ख़िलाफ़त का युग भी शुरू होगा, जिसके विषय में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अत्यंत स्पष्ट भविष्यवाणी फ़रमाई थी। उस भविष्यवाणी को एक हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है :

"तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर वह इसे उठा लेगा और नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार दुख देने वाली बादशाहत क़ायम होगी। फिर जब यह युग समाप्त होगा, तो उससे भी ज़्यादा ज़ालिम बादशाहत क़ायम होगी जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर अल्लाह उसे भी उठा लेगा। उसके बाद फिर नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी।" और यह कहकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चुप हो गए।

(मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, सफ़ा 285, हदीस 18596, मतबूआ आलमुल-कुतुब, बैरूत)

यह वह भविष्यवाणी थी जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी और जिसके अनुसार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मबअसत के पश्चात इस्लाम की नवजीवन का युग आरंभ हुआ और आपके विसाल के बाद ख़िलाफ़त का युग शुरू हुआ।

वे आयतें जो मैंने तिलावत की हैं, उनका अनुवाद यह है:

"और उन्होंने अल्लाह तआला की दृढ़ क़समें खाईं कि यदि तू उन्हें आदेश देगा तो वे अवश्य निकल खड़े होंगे। तो कह दे कि क़समें न खाओ, रूढ़ि के अनुसार आज्ञापालन करो। निश्चय ही अल्लाह, जो कुछ तुम करते हो, उससे सदा ही अवगत है। कह दे कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और रसूल की आज्ञा का भी पालन करो। फिर यदि तुम मुंह फेर लो, तो उस पर उतनी ही ज़िम्मेदारी है जो उस पर डाली गई है और तुम पर भी उतनी ही ज़िम्मेदारी है जो तुम पर डाली गई है। और यदि तुम उसकी आज्ञा का पालन करोगे तो हिदायत प्राप्त करोगे। और उस रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से संदेश पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है।

"तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनसे अल्लाह तआला ने पक्का वादा किया है कि वह उन्हें पृथ्वी में अवश्य ही प्रतिनिधि (ख़लीफ़ा) बनाएगा, जैसे उसने उनसे पहले लोगों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया था, और उनके लिए उनके उस धर्म को, जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है, अवश्य ही सुदृढ़ करेगा, और उनके भय की अवस्था को अवश्य ही शांति की अवस्था में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी उपासना करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी न ठहराएंगे। और जो इसके पश्चात भी कृतघ्नता करेगा, तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। और नमाज़ को क़ायम करो, और ज़कात अदा करो, और रसूल की आज्ञा का पालन करो ताकि तुम पर दया की जाए।"

तो इन आयतों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से वादा किया है कि तुम में ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम होगा। ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का समय तीस वर्षों तक रहा। अब अल्लाह तआला का वादा तीस वर्षों तक के लिए नहीं था, बल्कि यह एक संपूर्ण वादा था और इसकी व्याख्या हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमा दी थी, जैसा कि मैंने हदीस में पढ़ा। कि पहले नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त होगी, फिर बादशाही होगी, फिर ज़ालिम बादशाही होगी, फिर नबुव्वत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। और यह मसीह मौऊद के युग में क़ायम होगी।

अतः यह बात हम अहमदियों को सदैव स्मरण में रखनी चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार कर के अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने का एक वचन लिया है, और उस वचन की एक शर्त यह है कि हम सदैव ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे। इसी ओर अल्लाह तआला ने हमें ध्यान दिलाया है, बल्कि सिखाया भी है। और इस विषय में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का निर्देश है। अतः

जब तक हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे।

लेकिन इसके लिए कुछ शर्तें भी हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने उन आयतों में फ़रमाया है। अतः उन शर्तों को पूर्ण करना हमारे लिए अनिवार्य है।

उनकी व्याख्या से पहले, ख़िलाफ़त के जारी रहने के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वह कथन भी पढ़ता हूँ जो आपने "अल् वसीयत" नामक रिसाले में फ़रमाया है:

"ख़ुदा तआला दो प्रकार की क़ुदरतें प्रकट करता है: (1) पहली यह कि वह स्वयं नबियों के हाथ से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है; (2) दूसरी यह कि जब नबी की मृत्यु के बाद कठिनाइयों का सामना उत्पन्न हो जाता है, और शत्रु प्रबल हो जाते हैं, और यह समझने लगते हैं कि अब यह कार्य नष्ट हो गया, और यह विश्वास करने लगते हैं कि अब यह जमाअत समाप्त हो जाएगी, और स्वयं जमाअत के लोग भी संशय में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई दुर्भाग्यशाली लोग मुनाफ़िक़त या इरतेदाद की राह अपना लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी अत्यंत शक्तिशाली क़ुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अतः जो व्यक्ति अंत तक धैर्य करता है, वह अल्लाह की इस शक्ति का चमत्कार देखता है।

जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के समय हुआ, जब कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु को एक 'अकाल मृत्यु' समझा गया और बहुत से बदू, जो मूर्ख और अशिक्षित थे, मर्तद हो गए। और सहाबा भी दुःख से विक्षिप्त से हो गए। तब अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को खड़ा किया और दोबारा अपनी क़ुदरत का दृश्य दिखाया और इस्लाम को नष्ट होने से बचा लिया और उस वादे को पूरा किया जो यह था:

"وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا"

अर्थात: "हम अवश्य ही उनके लिए उनके उस धर्म को, जिसे हमने उनके लिए पसंद किया है, सुदृढ़ करेंगे, और उनके भय की स्थिति को अमन की स्थिति में बदल देंगे।"

ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय हुआ, जब मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र और कनआन के मार्ग में, इस वादे के अनुसार कि वह बनी इस्राईल को गंतव्य तक पहुंचाएँगे। इससे पहले ही वफ़ात पा गए और बनी इस्राईल में उनकी मृत्यु से एक महान शोक व्याप्त हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़रमाते हैं :

"...सो हे प्रियजनों! जबसे खुदा तआला की यह प्राचीन परंपरा रही है कि वह दो प्रकार की शक्तियाँ प्रकट करता है ताकि विरोधियों की दो झूठी खुशियों को रौंद दे, तो अब यह संभव नहीं कि वह अपनी इस प्राचीन परंपरा को त्याग दे। अतः मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे समक्ष कही है, उदास मत होओ और तुम्हारे हृदय व्याकुल न हों, क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी शक्ति को देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए श्रेष्ठतर होगा क्योंकि वह स्थायी है।"

यहाँ भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसी हदीस के अनुसार एक स्थायी शक्ति का संकेत दिया है "जिसकी श्रृंखला क़यामत तक खंडित नहीं होगी। और वह दूसरी शक्ति नहीं आ सकती..." आपने फ़रमाया: "और वह दूसरी शक्ति नहीं आ सकती जब तक मैं न चला जाऊँ। लेकिन जब मैं चला जाऊँगा तो फिर खुदा तआला उस दूसरी शक्ति को तुम्हारे लिए भेज देगा, जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि 'ब्रह्मीन-ए-अहमदिया' में खुदा तआला का वादा है। और वह वादा मेरी हस्ती के संबंध में नहीं है बल्कि तुम्हारे संबंध में है। जैसा कि खुदा तआला फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को, जो तेरे अनुयायी हैं, क़यामत तक दूसरों पर विजय दूँगा। तो यह अनिवार्य है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए, ताकि उसके बाद वह दिन आए जो उस स्थायी वचन का दिन है। हमारा खुदा तआला वचनों का सच्चा, वफ़ादार और सत्यप्रिय खुदा तआला है। वह तुम्हें वह सब कुछ दिखाएगा, जिसका उसने वादा किया है। यद्यपि ये दिन संसार के अंतिम दिन हैं और बहुत सी आपदाओं के उतरने का समय है, फिर भी यह संसार तब तक बाक़ी रहेगा जब तक वे सभी बातें पूर्ण न हो जाएँ जिनकी खुदा तआला ने सूचना दी है।

मैं खुदा तआला की ओर से शक्ति के रूप में प्रकट हुआ और मैं खुदा तआला की एक मूर्त शक्ति हूँ और मेरे पश्चात कुछ और हस्तियाँ होंगी जो दूसरी शक्ति की प्रतीक बनेंगी। अतः तुम खुदा तआला की दूसरी शक्ति की प्रतीक्षा में एकत्र होकर प्रार्थना करते रहो और आवश्यक है कि प्रत्येक देश में धर्मपरायण जनों की जमाअत एकत्र होकर प्रार्थना करती रहे ताकि दूसरी शक्ति आकाश से अवतरित हो और तुम्हें दिखाए कि तुम्हारा खुदा तआला कितना सामर्थ्यशाली है।"

(रसाला अल्-वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 306–304)

यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया कि दूसरी शक्ति की प्रतीक्षा में एकत्र होकर प्रार्थना करते रहो और हर देश में धर्मपरायणों की जमाअतें इकट्ठा होकर दुआ करें। जब आपने यह बात कही थी, उस समय भारत में ही जमाअत अहमदिया थी और संभवतः कुछ ही लोग विदेशों में होंगे। लेकिन आपने एक रूप में यह भविष्यवाणी भी कर दी कि हर देश में ये दुआ करने वाले लोग होंगे, यानी भविष्य में ऐसा समय आएगा जब जमाअत अहमदिया संसार भर में फैल जाएगी।

और आज हम वह समय देख रहे हैं जब जमाअत अहमदिया पूरी दुनिया में फैली हुई है और हर जगह ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा, प्रेम और स्नेह का संबंध हमें देखने को मिलता है, चाहे वह दूर-दराज़ के देशों में रहने वाले हों।

और ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के निर्वाचन के समय भी आपने देखा कि किस प्रकार दुनिया भर में फैले हुए लोगों ने एकत्र होकर निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से जुड़ने का संकल्प किया और बैअत की। और यह बैअत, इन् शा अल्लाह, भविष्य में भी क़ायम रहेगी। लोग करते रहेंगे और आगे भी उसी के अनुसार खुदा तआला अपने अनुग्रहों से हमें नवाज़ता चला जाएगा क्योंकि यह खुदा तआला का वादा है। यह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का खुदा तआला से सूचना पाकर दिया गया शुभ-संदेश है।

अतः हमें चाहिए कि हम ख़िलाफ़त से जुड़े रहें और ख़िलाफ़त के निज़ाम को क़ायम रखने हेतु हर प्रकार की बलिदानी के लिए तत्पर रहें। यदि हम ऐसा करते रहेंगे तो हम क़यामत तक ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे। हमारी पीढ़ियाँ इससे जुड़ी रहेंगी और इसके अनुग्रहों से लाभ उठाती रहेंगी।

कुछ लोगों का विचार है कि शायद जमाअत अहमदिया में भी ख़िलाफ़त राजतंत्र (मुलूकियत) में बदल जाएगी, लेकिन खुदा तआला का वादा, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी और जो हदीस मैंने पढ़ी उसमें जो कहा गया है। वह भी यही है, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें भी इसी ओर संकेत करती हैं कि जमाअत अहमदिया की ख़िलाफ़त, इन शा अल्लाह, रूहानियत वाली ख़िलाफ़त ही रहेगी और उसका सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा। कोई ऐसा समय नहीं आएगा जब यह कहा जाए कि इसमें मुलूकियत आ गई है। कुछ विद्रोही प्रवृत्ति के लोग ऐसी बातें करने लगते हैं कि जमाअत अहमदिया में राजतंत्र आ गया है। यह कभी नहीं होगा। यह खुदा तआला का वादा है कि इन् शा अल्लाह हमेशा रूहानी ख़िलाफ़त ही क़ायम रहेगी। खुदा तआला ने यह वादा फ़रमाया है कि तुम्हारे भीतर भी उसी प्रकार ख़िलाफ़त क़ायम की जाएगी जिस प्रकार पहले लोगों में की गई थी। और वह ख़िलाफ़त, राजतंत्र की नहीं थी बल्कि रूहानियत की ख़िलाफ़त थी जिसकी मिसाल खुदा तआला ने दी है। क़ुरआन-ए-करीम में वर्णित नबियों के इतिहास से हमें यही ज्ञात होता है कि वह ख़िलाफ़त का ऐसा निज़ाम था जिसे खुदा तआला सीधे स्थापित करता था। लेकिन एक दूसरा निज़ाम भी खुदा तआला ने बनाया है जो ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के युग से आरंभ हुआ और वह आगे तक चलता रहा।

एक बार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस विषय पर एक लेख लिखा। उन्हें यह आशंका हुई थी कि शायद कोई समय ऐसा आ जाए जब राजतंत्र का निज़ाम आ जाए। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को इसकी जानकारी हुई तो आपने सख़्ती से इसका खंडन किया और दृढ़ता से इसका खंडन फ़रमाया और कहा कि जमाअत अहमदिया में राजतंत्र नहीं आएगा जब तक कि रूहानियत और तक़्वा (धार्मिकता) क़ायम है।

(उद्धारित अल्-फ़ज़्ल, 3 अप्रैल 1952, पृष्ठ 3)

और यह, इन् शा अल्लाह, क़ायम रहेगा और खुदा तआला ने जो वादे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हैं, जैसा कि आपने स्वयं फ़रमाया है कि जब तक वे वादे पूरे

नहीं हो जाते, कोई ऐसा निज़ाम जमाअत अहमदिया में नहीं आएगा जो आपकी ख़िलाफ़त को हानि पहुँचाने वाला हो या उसे नुक़सान पहुँचाने वाला हो। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़िलाफ़त के दर्जे को समझने वाले और पूर्ण वफ़ादारी से ख़िलाफ़त से जुड़े हुए थे। अतः यह बात सोच में भी नहीं आ सकती कि उसके बाद कोई अपनी अलग राय रखे। बल्कि आप फ़रमाया करते थे कि यदि मैं किसी मामले में कोई राय रखता हूँ और ख़लीफ़तुल मसीह उसके विपरीत निर्णय लें, और उनकी राय भिन्न हो, तो मेरे मन में कभी यह विचार भी नहीं आता कि मेरी भी कोई अलग राय है। यही थी पूर्ण वफ़ा।

बहरहाल, इस दृष्टि से भी हमें ख़ुदा तआला के वचनों पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त ख़ुदा तआला के अनुग्रह से ऐसा निज़ाम है जो ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार क़ायम हुआ है और उसी के अनुसार चलता रहेगा, न कि उसमें किसी प्रकार का सांसारिक राजतंत्र आ जाएगा।

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त तो रातों को उठकर अपनी नमाज़ों में जमाअत के लोगों के लिए प्रार्थना करता है। क्या कोई राजा ऐसा करता है?

अतः यदि हम इस बात को याद रखें और उसके अनुसार आचरण करें तो ही हम सफल हो सकते हैं। ख़ुदा तआला ने वादा फ़रमाया है कि यह उन लोगों को मिलेगा जो ख़ुदा तआला और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे। अतः जब तक हममें वे लोग रहेंगे जो ख़ुदा तआला और उसके रसूल की आज्ञाओं का पालन करते रहेंगे, तब तक वे भी इस वचन से लाभान्वित होते रहेंगे और हम भी इस वादे से हिस्सा पाते रहेंगे। और यदि नहीं, तो ऐसे लोग अलग हो जाएँगे, लेकिन ख़ुदा तआला का वचन, इन् शा अल्लाह, कभी टलेगा नहीं। ख़ुदा तआला ने तो फ़रमाया है:

''وَ اِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا'' यदि तुम उसकी आज्ञा का पालन करोगे तो मार्गदर्शन पाओगे और मार्गदर्शन पाते रहोगे। और फिर ख़ुदा तआला ने फ़रमाया: ''وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ'' ''ख़ुदा तआला ने तुममें से उन लोगों से वादा किया है जो ईमान लाए और सत्कर्म किए...''

''وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ'' ''अल्लाह ने तुममें से उन लोगों से वादा किया है जो ईमान लाए और सत्कर्म किए।'' यह प्रतिज्ञा अल्लाह तआला ने उन लोगों के साथ की है जो सच्चे ईमान वाले हैं और जिन्होंने अपने आचरण को भी सुधार लिया है। ईमान और सत्कर्म का जो स्तर है, वह पहली आयत में स्पष्ट कर दिया गया है कि जब तक पूर्ण आज्ञापालन का जुआ अपने गले में नहीं डाला जाएगा, तब तक कोई वास्तविक मोमिन नहीं कहलाएगा। तभी नेक कार्यों की ओर प्रवृत्ति उत्पन्न होगी और उनमें प्रगति करने की भावना जगेगी। जब यह स्तर प्राप्त हो जाएगा, तभी हम ख़िलाफ़त की नेअमत से निरंतर लाभान्वित होते चले जाएँगे।

अतः अल्लाह तआला ने हमें यह निर्देश दिया है कि ख़िलाफ़त को क़ायम रखने के लिए और इससे फ़ैज़ पाने के लिए जो लोग इससे जुड़े हैं, वे अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करें और उनके आदेशों के अनुसार अपने जीवन को ढालें।

अब मुसलमानों की स्थिति देख लीजिए। इतिहास गवाही देता है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस के अनुसार भी हमें यही देखने को मिलता है कि मुसलमानों में वास्तविक ख़िलाफ़त ख़िलाफ़त-ए-राशिदा तब तक ही क़ायम रही जब तक लोगों ने आज्ञापालन का जुआ अपने गले में डाले रखा। लेकिन जब उन्होंने आज्ञापालन को त्याग दिया, तो ख़िलाफ़त से भी वंचित हो गए। इसलिए यह बात सदैव स्मरण में रहनी चाहिए कि यदि जमाअत अहमदिया से जुड़कर इससे लाभ पाना है, तो ख़िलाफ़त से जुड़ना और उसकी पूर्ण आज्ञा मानना प्रत्येक अहमदी का कर्तव्य है। और ख़लीफ़ा-ए-वक्त के आदेशों का पालन करना तथा उनसे वफ़ादार संबंध बनाए रखना भी हर अहमदी का दायित्व है।

केवल तब ही कोई व्यक्ति हिदायत प्राप्त करने वाला होगा, केवल तब ही वह उस फ़ैज़ से लाभान्वित होता रहेगा जो एक सच्चे मोमिन और ख़िलाफ़त से जुड़ने वाले व्यक्ति के लिए अल्लाह तआला ने अनिवार्य ठहराया है। अल्लाह तआला का ख़िलाफ़त का जो यह निज़ाम है, वह ऐसा निज़ाम है जिसमें अल्लाह स्वयं दिलों को परिवर्तित करता है। यही ख़ुदा तआला सहायता है, और हमने हमेशा हर ख़िलाफ़त के युग में यह देखा है। जब हज़रत ख़लीफ़ा तुल मसिह़ अव्वल, हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ख़िलाफ़ा के पद पर आसीन हुए, तब भी आपके साथ अल्लाह की विशेष ताइदात थीं और लोगों ने आपके हाथ पर बैअत की।

हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में भी हमने देखा कि फ़ित्नों और फसादों के बावजूद अल्लाह की सहायता आपके साथ थीं और यह ताइदात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वचनों की पूर्ति थीं। फिर जमाअत अहमदिया एक हाथ पर संगठित हो गई और जो लोग ख़िलाफ़त के विरुद्ध थे, या जो भविष्य में ख़िलाफ़त को जारी रखने के विरोधी थे, वे अलग हो गए और उनकी कोई हैसियत नहीं रही।

फिर हमने ख़िलाफ़त-ए-सालिसा में भी देखा कि किस प्रकार लोग एक हाथ पर इकट्ठा हुए। फिर ख़िलाफ़त-ए-राबेआ में भी हमने देखा कि कैसे जमाअत संगठित रही और कोई भी बुराई उसे विघटित नहीं कर सकी। और अब भी, ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में, जैसा कि मैंने कई बार पहले भी वर्णन किया है, हमने देखा कि कैसे लोग इकट्ठे हुए। यह एक ऐसी मिसाल है जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। कि दूर-दराज़ देशों के लोग संगठित हुए और उन्होंने ऐसी वफ़ादारी का परिचय दिया जिसकी भी कोई मिसाल नहीं है।

आज की दुनिया में आप देख लें। जमाअत अहमदिया ही एक ऐसी जमाअत है जो एक सुसंगठित निज़ाम में बंधी हुई है। और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, जमाअत और ख़िलाफ़त से जुड़ने की वजह से, उस पर विशेष कृपाएँ हो रही हैं। यह बात सत्य है कि शत्रुओं की ओर से, विशेषकर पाकिस्तान में और कुछ अन्य देशों में, जमाअत अहमदिया पर अत्यधिक अत्याचार किए जा रहे हैं। किंतु अल्लाह के फ़ज़्ल से सभी अपने ईमान पर दृढ़ हैं और इस बात पर भी स्थिर हैं कि ये कठिनाइयाँ उन्हें उनके धर्म से विमुख नहीं कर सकतीं। और इसके बदले में अल्लाह तआला जो इन पर और उनकी संतानों पर अनुग्रहों की वर्षा कर रहा है, उसका कोई मुकाबला नहीं।

आप पाकिस्तान में देखिए 1974 में जब जमाअत के विरुद्ध बड़ा फसाद हुआ, उसके बावजूद जमाअत निरंतर प्रगति करती चली गई और दुनिया भर में फैल गई। 1984 में जमाअत के विरुद्ध जो क़ानून पारित किए गए, उन्होंने भी जमाअत की प्रगति को नहीं रोका। हज़रत ख़लीफ़ा-ए-वक्त को यद्यपि पाकिस्तान से, रब्वा से निकलना पड़ा, लेकिन जमाअत की तरक़्क़ी रुकी नहीं बल्कि बाहर आकर एक नई गरिमा से ख़िलाफ़त पर अल्लाह के फ़ज़्ल की बरसात शुरू हुई और एक नया युग आरंभ हुआ।

फिर ख़िलाफ़त-ए-राबेआ में हमने देखा कि जमाअत कैसे प्रगति करती गई। और अब भी हम देख रहे हैं कि जमाअत प्रगति की राह पर अग्रसर है, यद्यपि विरोधियों ने अत्याचार की सभी सीमाएँ पार कर दी हैं। विशेष रूप से 2010 के बाद, जब विरोधियों ने हमारी मस्जिदों पर व्यापक हमले किए और अहमदियों को शहीद किया। इसके बाद भी समय-समय पर शहादतें होती रहीं। कभी अधिक, कभी कम। ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के युग में तो अनेकों शहादतें हुईं, लेकिन हम देख रहे हैं कि अल्लाह तआला इसके बावजूद लोगों के ईमान को डिगने नहीं दे रहा।

अल्लाह का फ़ज़्ल है कि लोगों के ईमान में प्रगति हो रही है। न केवल वे अपने ईमान पर स्थिर हैं, बल्कि उसमें और अधिक मज़बूती आ रही है। यह सही है कि कुछ लोग कमज़ोर ईमान वाले होते हैं, कुछ पीछे भी हटे होंगे। लेकिन बहुसंख्या अपने ईमान पर स्थिर है और अल्लाह उन्हें इनायत भी कर रहा है। उन्हें और भी अनेक माध्यमों से नवाज़ा गया। उन्हें बाहर निकलने के अवसर प्राप्त हुए और इस प्रकार उन्हें सांसारिक उन्नति भी प्राप्त हुई।

इसी प्रकार हम विदेशों में देखते हैं कि अन्य देशों में जमाअत अहमदिया बड़ी संख्या में फैलती चली जा रही है। यह अल्लाह तआला का वही वादा है जो उसने ख़िलाफ़त के साथ किया था। जिसके परिणाम आज प्रकट हो रहे हैं। आज हम 214–213 देशों में जमाअत अहमदिया के निज़ाम को क़ायम कर चुके हैं, और अल्लाह के फ़ज़्ल से, वहां पर सच्चे मुखलिस की जमाअतें क़ायम हो रही हैं।

दूर-दराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले ऐसे लोग भी हैं जिनसे जुड़ी घटनाएँ सुनकर आश्चर्य होता है कि कैसे उनका ख़िलाफ़त से संबंध है। मैंने पहले भी कई बार यह घटनाएँ सुनाई हैं। कि अफ़्रीका के गाँवों में रहने वाले लोग किस प्रकार ख़िलाफ़त से जुड़े हुए हैं। हानि होने के बावजूद भी वे अपने ईमान पर स्थिर हैं।

अब देखिए, बुर्किना फ़ासो में डोरी नामक स्थान पर, जहाँ आठ-नौ अहमदी शहीद हुए। उन्होंने ईमान पर स्थिर रहते हुए अपनी जानों की आहुति दी। उनकी संतानें और वंशज ईमान पर स्थिर हैं और यह कहते हैं कि :

हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर वैसे ही ईमान रखते हैं जैसे हमारे शहीदों ने ईमान रखा और अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं। और हम भी क़ुर्बानी देने को तैयार हैं। हम ख़िलाफ़त के लिए और उसके निज़ाम को क़ायम रखने के लिए हर प्रकार की बलिदानी के लिए तैयार हैं।

वे ऐसे प्रेम-पूर्ण संदेश भेजते हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि वे दूर बैठे हुए लोग, जिन्हें हम कभी-कभी अनपढ़ समझते हैं, उनके भीतर ईमान की ऐसी ऊष्मा है। उनके शब्द, उनकी भावना, उनका प्रेम और ख़िलाफ़त से उनका लगाव एक अनकहा और अनुपम दृश्य है।

अतः यह अल्लाह तआला का अनुग्रह है। कि उसने ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के संबंध में जो वादा किया था कि यह सदैव क़ायम रहेगी। उसके लिए वह लोगों के दिलों को ईमान से भर रहा है और भरता चला जा रहा है।

मैं एक अफ़्रीकी देश गया। वहाँ एक व्यक्ति जिसकी भुजाएँ भी ठीक से काम नहीं कर रही थीं। विकलांग था। उसने मुझसे सलाम किया और इतनी मज़बूती से मेरा हाथ पकड़ा कि लगा मेरा हाथ किसी शिकंजे में आ गया है। उसने जिस प्रेम से गले लगाया, वह अत्यंत आश्चर्यजनक था। केवल ख़िलाफ़त का प्रेम था। लोग उसे देखकर रोने लगते थे। पहले कभी मुलाक़ात नहीं हुई थी, कोई परिचय नहीं, लेकिन वह इतने प्रेम से गले लगकर रोने लगता कि यह देखकर हैरत होती कि किस प्रकार अल्लाह ने उसके दिल में ख़िलाफ़त के लिए ऐसा प्रेम भर दिया है।

वे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को क़ायम रखने के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी देने को तैयार हैं। यह केवल हमारा संकल्प नहीं, बल्कि हम इसे पूरा करके दिखाएँगे। हर वर्ष मुझे अनेकों पत्र प्राप्त होते हैं। छोटे बच्चों से लेकर स्त्रियों, युवाओं और वृद्धों तक के पत्रों में ऐसा प्रेम प्रकट होता है कि देखकर मन चकित रह जाता है कि अल्लाह तआला ने कैसे उनके दिलों में ख़िलाफ़त, जमाअत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए इतना प्रेम उत्पन्न कर दिया है। और इस्लाम की उन्नति के लिए उनके दिलों में कितना गहरा दर्द भर दिया है।

यह वही शक्ति है जो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के माध्यम से अल्लाह ने क़ायम की

है। और इसे क़ायम रखने के लिए अल्लाह हमें कहता है कि यदि तुम इस पर क़ायम रहोगे। यदि तुम नेकी पर स्थिर रहोगे। यदि तुम्हारे कर्म शुभ होंगे। तो फिर तुम इससे लाभ भी प्राप्त करते रहोगे।

अल्लाह तआला ने इन्हीं आयतों में यह भी कहा है कि :

वे ईमान में प्रगति करने वाले ऐसे लोग हैं जो कभी भी शिर्क नहीं करते...।

इसलिए हमारे लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सदैव हर प्रकार की शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से बचते रहें। हाल ही में यूनाइटेड किंगडम की शूरा में मैंने जो भाषण दिया था, उसमें भी मैंने यही बात कही थी और हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दूसरे खलीफ़ा) के विभिन्न उद्धरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया था कि यदि हमारे भीतर, किसी भी ज़िम्मेदार व्यक्ति के भीतर। और यहाँ केवल पदाधिकारी ही संबोधित नहीं हैं, बल्कि हर अहमदी संबोधित है। यदि किसी में भी अहम (अहंकार) है, हमारे भीतर घमंड है, तो हमारे भीतर शिर्क की मिलावट है।

इसलिए यदि हमें ख़िलाफ़त के फ़ैज़ से सच्चा लाभ उठाना है और वास्तव में अल्लाह के अनुग्रहों का वारिस बनना है, तो हमें हर प्रकार की शिर्क से, अपने अहं से और घमंड से अपने आपको मुक्त कराना होगा, अपने को इन विकारों से शुद्ध करना होगा। और ऐसे ही पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता भी तभी जमाअत के लिए उपयोगी और प्रभावशाली सिद्ध हो सकेंगे जब उनका अहं समाप्त हो जाएगा, जब उनका घमंड मिट जाएगा, और जब वे पूरी तरह से अल्लाह की रज़ा को प्राप्त करने के लिए निःस्वार्थ रूप से कार्य करेंगे।

फिर अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि वे लोग वे हैं जो नमाज़ों को क़ायम करने वाले हैं, जो ज़कात की अदायगी करने वाले हैं। और फिर यह कहा कि वे अल्लाह और उसके रसूल की पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हैं। और ऐसे ही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला अपनी विशेष कृपा करता है।

इसलिए जब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा यह नेअमत का सिलसिला। ख़िलाफ़त की नेअमत का सिलसिला आरंभ किया है, तो इससे लाभान्वित होने के लिए प्रत्येक अहमदी को अल्लाह के इस आदेश को सदैव स्मरण में रखना चाहिए कि उसका वादा ख़िलाफ़त के फ़ैज़ को क़ायम रखने और इससे लाभ प्राप्त करने के लिए उन्हीं लोगों से है जो पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हैं।

अल्लाह की उपासना को सदैव अपने सम्मुख रखें, क्योंकि पूर्ण आज्ञापालन करने वाले वे ही हैं जो हमेशा अल्लाह को याद करते हैं और उसकी उपासना करते हैं। और उपासना के लिए, जैसा कि हम जानते हैं, अल्लाह ने बारंबार यह आदेश दिया है कि तुम नमाज़ों को क़ायम करो। अतः नमाज़ों का क़ायम करना अत्यंत आवश्यक कार्य है। हर अहमदी को जो अपने आपको ख़िलाफ़त से जुड़ा मानता है, या जो जुड़ना चाहता है और उससे फ़ैज़ पाना चाहता है। उसके लिए यह बात सदैव ध्यान में रखनी होगी कि हमें नमाज़ों को क़ायम करने की ओर पूर्ण रूप से सजग रहना है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ों के क़ियाम की व्याख्या करते हुए एक स्थान पर बहुत सुंदर ढंग से यह कहा कि नमाज़ (सलात) का सर्वोत्तम भाग जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ है, जिसमें इमाम ख़ुत्बा देता है और उपदेश करता है। और ख़लीफ़ा-ए-वक्त, समय की परिस्थितियों और विभिन्न क़ौमों की आवश्यकताओं को देखते हुए उपदेश देता है, जिससे क़ौमी एकता और सामूहिकता उत्पन्न होती है।

(संदर्भ: तफ़सीर-ए-कबीर, ज़िल्द 8, पृष्ठ 575, संस्करण 2022)

ख़लीफ़ा-ए-वक्त सबका क़िबला एक ओर कर देता है। आज हम इसकी वास्तविक छवि अपने सामने देखते हैं। अब तो एम.टी.ए. (MTA) के माध्यम से अल्लाह ने ऐसा अद्भुत व्यवस्था स्थापित कर दी है कि ख़लीफ़ा-ए-वक्त का ख़ुत्बा संसार के हर देश, हर क्षेत्र, हर नगर, हर गाँव में सुना और देखा जा रहा है।

और यह केवल उन्हीं लोगों के लिए नहीं है जो उसके सामने बैठे हुए होते हैं, बल्कि अफ़्रीका, तुर्की, रूस जैसे देशों से मुझे जो पत्र प्राप्त होते हैं, उनमें यह कहा जाता है कि आप जो बातें कह रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है मानो वे हमारे ही हालात के अनुसार कही जा रही हैं। और इन्हें सुनकर हमें आत्म-सुधार की प्रेरणा मिलती है। यह एहसास होता है कि वास्तव में ख़िलाफ़त का यह निज़ाम एक ऐसा एकीकृत प्रणाली है जिसने हमें एकता में बाँध दिया है।

इसलिए यह सोच लेना कि जो कुछ कहा जा रहा है वह केवल पाकिस्तानियों के लिए है, या केवल यूरोप में रहने वाले कुछ लोगों के लिए है। यह गलत है। मुझे जो पत्र प्राप्त होते हैं उनसे यह ज्ञात होता है कि संसार के हर कोने में, हर देश में, वहां की अपनी परंपराओं के भीतर भी कुछ न कुछ ऐसी समान बातें होती हैं जो उस उपदेश से मेल खाती हैं, और इस कारण लोगों को आत्म-सुधार का अवसर प्राप्त हो जाता है।

आजकल मैं इस्लामी इतिहास पर भाषण दे रहा हूँ, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी पर चर्चा कर रहा हूँ। इन बातों में भी बहुत सी ऐसी बातें आती हैं जो हमारे लिए शिक्षा और उपदेश हैं, और लोग उनसे अत्यधिक लाभ उठा रहे हैं।

साथ ही उन्हें इस्लाम के इतिहास की भी जानकारी हो रही है, इस्लाम के मूल सिद्धांतों का ज्ञान हो रहा है। इन्हीं व्याख्यानों के माध्यम से उन्हें सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की जीवनी का भी ज्ञान प्राप्त हो रहा है, और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विभिन्न अवसरों पर जो उत्तम उदाहरण (उसवह-ए-हसना) प्रस्तुत हुआ, उसका भी ज्ञान प्राप्त हो रहा है। इनमें भी अनेक बातें ऐसी हैं जो उनकी आत्म-सुधार के लिए सहायक सिद्ध हो रही हैं, और लोग स्वयं इसकी प्रशंसा करते हैं।

इसलिए यह ख़िलाफ़त ही वह माध्यम है जिसे अल्लाह तआला ने हमारे बीच स्थापित किया है। जिसके द्वारा जमाअत अहमदिया में एक एकता उत्पन्न हो गई है। आज दुनिया के 215 देशों में रहने वाला हर अहमदी एक इकाई बनकर इस निज़ाम से जुड़ा हुआ है और आत्म-सुधार की कोशिश करता है।

अल्लाह तआला ने ज़कात की अदायगी का आदेश भी दिया है। यह भी धन की पवित्रता के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि तुम अपने धन को शुद्ध करो। इसमें अन्य आर्थिक बलिदान भी सम्मिलित हैं।

आज हम यह देखते हैं कि केवल जमाअत अहमदिया के माध्यम से यह वित्तीय प्रणाली सक्रिय है। और ख़लीफ़ा-ए-वक्त की आज्ञा का पालन करते हुए संसारभर में चंदा देने के माध्यम से जमाअत के सदस्यों और विभिन्न देशों की आवश्यकताएँ पूरी हो रही हैं।

यदि किसी एक देश में कुछ कमी है तो किसी अन्य देश के माध्यम से वह कमी पूरी की जा रही है। अफ़्रीका में यद्यपि लोग बहुत बलिदान करते हैं, लेकिन उनके हालात ऐसे हैं कि उनके ख़र्चे उनकी आमदनी से बहुत अधिक हैं इसलिए वहाँ बाहर के देशों से धन भेजना पड़ता है। उसी के माध्यम से वहाँ विद्यालय, अस्पताल, मिशन हाउस और मस्जिदें चलाई जा रही हैं। और वहाँ के लोग भी इसके लिए अत्यंत कृतज्ञ हैं कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने हमें एक ऐसे संगठन में रखकर उससे लाभ उठाने की क्षमता प्रदान की।

विरोधी इन देशों में पहुँचते हैं, और कुछ स्थानों पर तो वे यह कहते हैं कि तुम क़ादियानियत छोड़ दो, मिर्ज़ाइयत या अहमदियत छोड़ दो ये लोग इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार आचरण नहीं करते। लेकिन लोग, विशेषकर नौ मुबाईन (नव सम्मिलित लोग), इन ग़ैर-अहमदियों को यही उत्तर देते हैं कि अब तक तुमने हमें कुछ नहीं सिखाया। आज जब जमाअत अहमदिया आई है, तो उसने हमारे गाँवों, क़स्बों, नगरों में मस्जिदें बनवाईं, हमारी शिक्षा की ओर ध्यान दिया, हमें विद्यालयों की सुविधाएँ प्रदान कीं, अस्पताल बनाए और हमें धर्म सिखा रहे हैं। हमें कुरआन शरीफ़ पढ़ाया जा रहा है, उसका अनुवाद सिखाया जा रहा है। तुमने तो अब तक कुछ नहीं किया और अब केवल इस आधार पर विरोध कर रहे हो कि ये मुसलमान नहीं हैं?

यदि ये मुसलमान नहीं हैं तो फिर संसार में कोई भी मुसलमान नहीं है यही उत्तर होते हैं उन नौ मुबाईन लोगों के। अतः यह भी ख़िलाफ़त का ही एक सशक्त, जीवित और जारी व्यवस्था है जिसके द्वारा अल्लाह तआला ने लोगों के दिलों में आर्थिक बलिदान की भावना उत्पन्न की और ज़कात और चंदों के माध्यम से, फिर निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के अंतर्गत, उसका जो उचित और वास्तविक उपयोग है, वही संपन्न हो रहा है। निर्धनों का पालन-पोषण हो रहा है, ज़रूरतमंदों की आवश्यकताएँ पूरी हो रही हैं, और इस्लाम के प्रचार-प्रसार का कार्य भी आगे बढ़ रहा है।

"बहरहाल, जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, कुछ ऐसे हालात हैं जिनके कारण कुछ स्थानों पर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। बांग्लादेश है, कुछ अरब देश हैं, अफ़्रीका के कुछ देश हैं, पाकिस्तान है, और कुछ अन्य स्थान भी फिलिस्तीन में भी इन दिनों, जहाँ थोड़े से अहमदी हैं, वे अत्यंत कठिन परिस्थितियों में हैं।

सामान्य रूप से तो वहाँ की पूरी फिलिस्तीनी कौम ही मुसीबत में घिरी हुई है और उन पर बेहद क्रूर तरीके से अत्याचार किए जा रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी इन अत्याचारों से मुक्ति दे, जो फिलिस्तीनियों पर ढाए जा रहे हैं। इन अत्याचारियों का प्रयास तो यह है कि वे उनकी पूरी नस्ल ही समाप्त कर दें और वे ऐसा ही कर रहे हैं। अल्लाह ही उनकी हालत पर रहम करे।

लेकिन फिर भी, जो अहमदी हैं, वे इन सभी कठिनाइयों के बावजूद अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि हमारे बीच खिलाफत की व्यवस्था स्थापित है, जो हमें सांत्वना देती है और हमारी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास भी करती है।

दुनिया में हम देखते हैं और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कई घटनाएँ घटित होंगी। कुछ प्राकृतिक आपदाओं के रूप में होंगी और कुछ इंसानों की अपनी गलतियों और अहंकार के कारण जिससे दुनिया में फसाद और युद्ध फैल रहे हैं।

यदि अब भी लोगों ने अल्लाह की ओर ध्यान नहीं दिया, तो एक विनाशकारी तबाही इस दुनिया पर आने वाली है जिसकी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई बार भविष्यवाणी की है।

इसलिए, जो लोग निज़ाम-ए-खिलाफत से जुड़े हैं, उनका कर्तव्य है कि वे इस बात पर ध्यान दें कि हमें दुनिया को इस विनाश से बचाना है। और जब हम यह संकल्प लेंगे, तो इसके लिए प्रयास भी करेंगे। यह प्रयास यही है कि हम दुनिया को अल्लाह की ओर लाने के लिए हर संभव साधन और अपनी क्षमताओं का उपयोग करें और इसके लिए अपनी जान, माल और समय को कुर्बान करने के लिए हमेशा तैयार रहें।

और इसी तरह, स्वयं भी अल्लाह तआला से अपना रिश्ता इतना मजबूत करें कि अल्लाह की खास कृपा हर अहमदी पर हो और वे उसकी नजदीकी हासिल करने वाले बनें। और जब वे नजदीकी पा लेंगे, तो वे न सिर्फ दुनिया को बचाने वाले बनेंगे, बल्कि अपनी संतानों और खुद को भी आपदाओं से सुरक्षित रख पाएँगे। क्योंकि ये आपदाएँ इतनी भयानक होती जा रही हैं कि भविष्य में उनका रूप क्या होगा, यह अनुमान लगाना भी मुश्किल है।

इसलिए हमेशा याद रखें कि अब दुनिया का अस्तित्व केवल खिलाफत-ए-अहमदिया से जुड़ने में है। और खिलाफत-ए-अहमदिया उस व्यवस्था की निरंतरता है, उस वादे की पूर्ति

है, जो अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया था।

और जिसकी भविष्यवाणी स्वयं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी और जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से पुनः स्थापित हुई। इसलिए, खिलाफत-ए-अहमदिया की यह कड़ी अल्लाह तआला तक पहुँचने का माध्यम है और उसके निज़ाम को स्थापित करने वाली एक शृंखला है। हर अहमदी को इसके लिए प्रयास करना चाहिए। और जब हम ऐसा करेंगे, तो अल्लाह तआला हमें अपनी कृपा का वारिस बनाएगा और यह कृपा इतनी विशेष होगी कि दुनिया में किसी और को इस तरह नहीं मिल सकती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक वचन मैं अंत में पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं:

"यह मत सोचो कि अल्लाह तुम्हें बर्बाद कर देगा। तुम अल्लाह के हाथ का बीज हो जो धरती में बोया गया है। अल्लाह फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा, फलेगा-फूलेगा और इसकी शाखाएँ चारों ओर फैलेंगी। यह एक विशाल वृक्ष बन जाएगा। इसलिए धन्य है वह जो अल्लाह के वचन पर ईमान रखे। धन्य है वह जो बीच में आने वाली कठिनाइयों से न डरे, क्योंकि कठिनाइयाँ आनी भी जरूरी हैं, ताकि अल्लाह तुम्हारी परीक्षा ले सके कि तुम्हारे बैअत के दावे में कौन सच्चा है और कौन झूठा।

जो कोई कठिनाई में फिसल जाएगा, वह अल्लाह को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा, लेकिन दुर्भाग्य से वह नरक तक पहुँच जाएगा। यदि वह पैदा ही न होता, तो उसके लिए बेहतर होता।

लेकिन वे सभी लोग जो अंत तक धैर्य रखेंगे, जिन पर मुसीबतों के तूफान आएँगे, संकटों की आँधियाँ चलेंगी, कौमें उनका मजाक उड़ाएँगी और दुनिया उनसे घृणा करेगी वे अंत में जीतेंगे और उन पर बरकतों के दरवाजे खोल दिए जाएँगे।

अल्लाह ने मुझसे कहा कि मैं अपनी जमाअत को बता दूँ कि जो लोग सच्चा ईमान लाए वह ईमान जिसमें दुनियावी मिलावट नहीं, जो न तो दिखावे से दूषित है और न ही कायरता से, और जो पूर्ण आज्ञाकारिता से भरपूर है ऐसे लोग अल्लाह को प्रिय हैं। और अल्लाह फ़रमाता है कि यही वे लोग हैं जिनके कदम 'सिद्क' (सच्चाई) के कदम हैं।"

(रिसाला-ए-वसीयत, रूहानी खज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 309)

इसलिए, यह अल्लाह तआला का फजल (अनुग्रह) है, जैसा कि मैंने कहा, कि दुनिया के हर कोने में अल्लाह ने जमाअत अहमदिया, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खिलाफत-ए-अहमदिया को ऐसे लोग दिए हैं जो अपनी कुर्बानियों के स्तर को लगातार बढ़ा रहे हैं और हम देख रहे हैं कि अल्लाह तआला उस वादे को पूरा कर रहा है जो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा किया है कि यह दुनिया तब तक खत्म नहीं होगी जब तक कि वह मेरे सभी वादों को पूरा न कर दे कुछ मेरी जिंदगी में और कुछ मेरे बाद। और हम देख रहे हैं कि अल्लाह तआला आज तक उन्हें पूरा कर रहा है। और जो लोग निज़ाम-ए-खिलाफत से जुड़े हैं, वे इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं और इन् शा अल्लाह आगे भी करते रहेंगे।

इसलिए, हम में से हर एक का यह कर्तव्य है कि जो शुभ समाचार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से सुनकर हमें दिए हैं, उनसे लाभ उठाने के लिए, अल्लाह तआला के अनुग्रह के वादे को पाने के लिए हम अल्लाह की महानता को अपने दिलों में, दुनिया के दिलों में और अपनी संतानों के दिलों में बिठाने वाले बनें। और व्यवहारिक रूप से अल्लाह की एकता को प्रकट करने वाले बनें। मानवता से सच्ची हमदर्दी रखने वाले बनें, अपने दिलों से द्वेष और ईर्ष्या को दूर करने वाले बनें, हर भलाई की ओर बढ़ने वाले बनें, अपने ईमान की रक्षा करने वाले बनें, पूर्ण आज्ञाकारिता का उदाहरण पेश करने वाले बनें और ईमान में लगातार बढ़ने वाले बनें ताकि अल्लाह तआला के नजदीक हमारे कदम 'सच्चाई के कदम' समझे जाएँ और हम उसके वादों से लाभ उठाने वाले बनें।

अल्लाह तआला हमें यह ताकत दे कि हम में से हर व्यक्ति खिलाफत-ए-अहमदिया को कायम रखने के लिए हर कुर्बानी देने को तैयार रहे और जो संकल्प हम विभिन्न मौकों पर करते हैं जैसे कि ज़िलाई तंज़ीमों (सहायक संगठनों) में भी उनके सदस्य करते हैं उन्हें पूरा करने वाले बनें। और अल्लाह तआला हमारे जीवन में वह समय लाए जब हम देखें कि दुनिया के हर कोने में अल्लाह की एकता का झंडा लहरा रहा है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी में लोग झुंड-के-झुंड शामिल हो रहे हैं और अल्लाह तआला के पूर्ण आज्ञाकारी बनने का प्रयास कर रहे हैं।

और जब यह होगा, तभी वह दिन होगा जो हमारे लिए खुशी का दिन होगा। वही दिन हमारे लिए सबसे शुभ दिन होगा, जब हम कह सकेंगे कि अल्लाह तआला ने जो खिलाफत का वादा किया था आज हम उसके फैज़ (अनुग्रह) से लाभान्वित हो रहे हैं। और यही दिन वह होगा जो इस दुनिया को विनाश से बचाने वाला होगा।

अल्लाह तआला हमें आत्म-सुधार की तौफीक (सामर्थ्य) दे और अल्लाह तआला का संदेश दुनिया तक पहुँचाने की भी तौफीक दे। आमीन।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े भी पढ़ाऊँगा। पहला ज़िक्र..."

श्रीमान कर्नल डॉक्टर पीर मोहम्मद मुनीर साहब का है। ये फ़ज़ल-ए-उमर अस्पताल, रब्वा के एडमिनिस्ट्रेटर भी रह चुके हैं। हाल ही में पचासी वर्ष की आयु में इनका देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ये मोसी थे। 1963 में डॉक्टर साहब ने स्वयं बैअत कर के जमाअत में शमूलियत प्राप्त की थी। इसके पश्चात 1967 में आपने वसीयत की और वसीयत के निज़ाम में सम्मिलित हुए। 1991 में आपके अमल को देखकर आपके माता-पिता ने भी बैअत की सआदत प्राप्त की।

कर्नल पीर मोहम्मद मुनीर साहब ने अपनी नौकरी से रिटायर होने के पश्चात ज़िला मुलतान के नायब अमीर के रूप में भी सेवा करने का सौभाग्य पाया। 2004 में रबवा स्थानांतरित हो गए और फिर वक्फ़ बाद-अज़-रिटायरमेंट किया गया। फ़ज़ल-ए-उमर अस्पताल में इन्हें नियुक्त किया गया जहाँ आपने जनरल फिज़िशन के रूप में सेवाएँ दीं। कुछ समय बाद आपको फ़ज़ल-ए-उमर अस्पताल का एडमिनिस्ट्रेटर बनाया गया और इस पद पर भी आपने बारह वर्षों तक अत्यंत ही ख़ूलूस, मेहनत और हमदर्दी के साथ अपने कर्तव्यों को निभाया। 2017 में स्वास्थ्य की कमजोरी के कारण इस पद से आपको मुक्त किया गया, लेकिन डॉक्टर के रूप में आपने अस्पताल में सेवा जारी रखी और ईएनटी विभाग में कार्य किया।

जमाअत के लिए आपकी वाक़्फ़-ए-ज़िंदगी के रूप में सेवाएँ उन्नीस वर्षों की रहीं। आपकी पत्नी उम्मतुल मालिक साहिबा, जो हज़रत डॉक्टर मीर मोहम्मद इस्माईल साहब की नवासी हैं, कहती हैं कि वह अत्यंत ही स्नेही पिता, दयालु पति और पूरे ख़ानदान से सिल-ए-रहमी रखने वाले थे। जमाअत और ख़िलाफ़त से अत्यंत गहरा संबंध था। अपने वक्फ़ को बड़ी ईमानदारी से निभाने का भरसक प्रयास करते। वे कहती हैं कि हमारा साठ वर्षों का साथ रहा। बहुत ही कोमल स्वभाव के और सभी का ध्यान रखने वाले थे। मेरे माता-पिता और मेरे भाई-बहनों का और अपने माता-पिता का भी समान रूप से ध्यान रखते। इंसानियत को सभी चीज़ों पर प्राथमिकता देते थे।

ड्यूटी से देर से घर आते तो जब भी पूछती कि देर क्यों हुई, तो कहा करते: "लोगों का काम फाइलों के साथ है, जब चाहें फाइलें बंद कर दें। लेकिन मेरा काम इंसानों के साथ है, मैं उनसे डील करता हूँ और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना मेरा फ़र्ज़ है।" एक दिन वह कहती हैं कि बहुत देर से घर लौटे, पूछा तो कहा: "किसी अस्पताल का एक सफ़ाईकर्मी था, हमारे अस्पताल का भी नहीं, उसकी सर्जरी थी और उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था, तो मैं उसके पास बैठा रहा ताकि उसकी देखरेख कर सकूँ।"

वे तहज्जुदगुज़ार थे, नियमित रूप से सौम-ओ-सलात (रोज़ा और नमाज़) और नवाफ़िल के पाबंद थे। हर गुरुवार को रोज़ा रखने वाले थे। और जैसा कि पहले भी बताया गया, उनके अमल को देख कर ही उनके माता-पिता ने 1991 में बैअत की।

उनकी माताजी कहा करती थीं कि हम यह समझते थे कि अहमदी नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं मानते और केवल मिर्ज़ा साहब को मानते हैं। मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। लेकिन जब मैंने देखा कि मेरा बेटा तहज्जुद पढ़ने वाला है और नमाज़ों का पाबंद है, तो मैंने सोचा कि अहमदी ग़लत नहीं हो सकते। इस प्रकार उनका स्वयं का आचरण ही उनके माता-पिता की जमाअत में शमूलियत का कारण बना।

चूँकि उन्होंने स्वयं अध्ययन करके बैअत की थी, इसलिए बड़े कर्मठ और व्यवहारिक अहमदी थे। ख़िलाफ़त से प्रेम और श्रद्धा का गहरा संबंध था। सदैव स्वयं को ख़िलाफ़त से जोड़कर रखा और स्वयं भी तथा अपने बच्चों को भी सदा यह ताकीद करते रहते कि किसी भी कठिन समय में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को अवश्य लिखें। और सेवा के लिए उन्हें किसी पद की कोई लालसा नहीं थी बल्कि उन्होंने स्वयं मुझे यह लिखा था कि "जहाँ भी आप नियुक्त करें, जिस सेवा में भी रखें, मैं तैयार हूँ।"

आपके पृष्ठभूमि में आपकी पत्नी और तीन बेटे हैं। पौत्र-पौत्रियाँ भी सम्मिलित हैं। अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करे और उन पर रहम का व्यवहार करे।

दूसरा उल्लेख श्रीमती सलीमा ज़ाहिद साहिबा का है जो समीउल्लाह ज़ाहिद साहिब मरबी सिलसिला (हाल कनेडा) की पत्नी थीं। वे हाल ही में स्वर्ग सिधार गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूमा मोसीया थीं। उनके पीछे पति के अल्ावा एक बेटी और तीन बेटे हैं। उनके एक बेटे अता अल्-मोमिन ज़ाहिद साहिब मरबी सिलसिला हैं और जामिआ अहमदिया यूके के उस्ताद हैं।

अताउल मोमिन ज़ाहिद साहिब के पिता ने लिखा है कि उनकी माता, बिला-मुबालगा (बिना अतिशयोक्ति) साठ-सत्तर बच्चों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाया करती थीं और उनके देहांत के बाद मरहूमा जिनका अब मैं उल्लेख कर रहा हूँ ने इस कार्य को आगे जारी रखा और क़ुरआन करीम सिखाती रहीं। बल्कि बहुत से अहले हदीस और अहले सुन्नत लोग स्पष्ट रूप से इस बात को स्वीकार करते थे कि हमारे बच्चों को क़ुरआन करीम इन्हीं ने पढ़ाया है।

वे लिखते हैं कि वे अत्यंत सौभाग्यशाली, सरल स्वभाव की, वफ़ादार और सेवा भावना से ओतप्रोत महिला थीं। सदा दूसरों की सेवा करतीं और ज़रूरतमंदों को स्वयं से अधिक महत्व देतीं।

उनके बेटे अता अल्-मोमिन ज़ाहिद साहिब कहते हैं कि आर्थिक तंगी के हालात में भी वे अपनी आवश्यकताओं पर खर्च करने के बजाय ज़रूरतमंदों की सहायता को प्राथमिकता देती थीं।

अल्लाह तआला उन्हें माफ़ करे और उन पर रहम का व्यवहार करे।

★ ★ ★

सीरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
(युद्धों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उच्चतम आदर्श)

(मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी, नाज़िर आला, सदर अंजुमन अहमदिया, क़ादियान) भाषण : जलसा सालाना क़ादियान 2024

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ﴿الاحزاب:22﴾

यक़ीनन तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है। (अल्अहज़ाब : 22)

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ

और निश्चय ही तू महान् चरित्र के उच्च शिखर पर है। (अल्-क़लम : 5)

सम्माननीय श्रोताओं! हमारे आका, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की श्रेष्ठतम नैतिक विशेषता यह रही कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर संभव हद तक युद्ध और संघर्ष से बचते थे और सदैव शांति के मार्ग अपनाते थे। मक्का के तेरह वर्षीय युग में आप आका और आपके साथी भारी अत्याचारों का शिकार हुए। यह युग आप आका और आपके पवित्र साथियों की अत्यंत दारुण पीड़ाओं और काफ़िरों द्वारा ढाए गए जुल्मों की दुखांत गाथाओं से भरा हुआ है। जब भी आपके किसी साथी ने ज़ुल्म से तंग आकर आपसे फ़रियाद की, तो आपका उत्तर सदा यही होता: "इन्नी उमिरतु बिलअफ़्वि फ़ला तुक़ातिलू", अर्थात मुझे क्षमा और सहनशीलता का आदेश दिया गया है, अतः तुम लोग युद्ध से बचो।

इसके बावजूद जब मक्का के काफ़िरों के अत्याचार अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गए और अल्लाह के एकत्व का प्रचार जो आपके मिशन का मुख्य उद्देश्य था, उसके सारे मार्ग बंद कर दिए गए, तब अल्लाह ने आपको हिजरत की अनुमति प्रदान की और अपनी निगरानी, अपनी संगति और अपनी सुरक्षा के साये में आपको उस नगर, जिसे तब "यसरीब" कहा जाता था, आज के "मदीना मुनव्वरा" पहुँचा दिया। वहाँ आप स्वतंत्र रूप से एकमात्र खुदा तआला का संदेश पहुँचा सकें।

परंतु काफ़िरों को यह कैसे सहन होता कि वह मिशन, जिसे मिटाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किया था, अब मदीना से निकलकर सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप में फैलने लगे। अतः इस चिंता और अधीरता में कि इस्लाम और इसके प्रवर्तक को मदीना से भी समाप्त कर दिया जाए, उन्होंने बाहरी और भौतिक साधनों से सुसज्जित होकर मदीना पर आक्रमण की तैयारी आरंभ कर दी।

तब अल्लाह ने उन पीड़ित मुसलमानों को आत्मरक्षा और अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए तलवार के सम्मुख तलवार उठाने की अनुमति दे दी, जबकि मुसलमानों के पास युद्ध का पूरा सामान उपलब्ध नहीं था। लेकिन अल्लाह ने यह वचन दिया: "व-इन्नल्लाहा अल् नस्रिहिम लक़दीर" (सूरह हज्ज : 40) अर्थात चिंता मत करो, अल्लाह उनके विरुद्ध तुम्हारी सहायता करने में पूर्णतः सक्षम है।

हिजरत मदीना के केवल एक वर्ष ही बीता था कि 2 हिजरी के पवित्र रमज़ान माह में मक्का के काफ़िर एक हज़ार युद्धक योद्धाओं की विशाल सेना के साथ युद्ध हेतु निकल पड़े। यह सेना उस युग के सभी युद्ध-सामग्रियों से सुसज्जित थी इनके पास सात सौ ऊँट, सौ घोड़े, तथा संपूर्ण सेना कवचों, भालों, तलवारों, धनुष-बाण आदि से पूरी तरह लैस थी।

जबकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ केवल 310 या 313 साथी थे, जिनमें कुछ नवयुवक भी शामिल थे। उनके पास केवल दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, जिन पर वे बारी-बारी से सवार होते थे। कवचधारी केवल छह या सात थे और शेष युद्धसामग्री अत्यंत कमज़ोर और अपर्याप्त थी।

सम्माननीय श्रोताओं! यह मेरा उद्देश्य नहीं कि मैं युद्ध-ए-बद्र की विस्तृत कथा प्रस्तुत करूँ। आइए हम यह दृष्टि डालें कि इस पहले युद्ध में जिसे कुरआन शरीफ़ ने "यौमुल-फ़ुरक़ान" कहा है आख़िरकार नबी-ए-करीम आका के कौन-कौन से महान नैतिक गुण प्रकट हुए।

सबसे पहले उस दृश्य को स्मरण कीजिए जब आप आका युद्ध-भूमि बद्र में बनाए गए एक छायाच्छन्न मंडप के नीचे अल्लाह के समक्ष अत्यधिक विनय और रुदन के साथ प्रार्थना कर रहे थे। इतना अधिक आग्रह कि बार-बार आपकी चादर आपके कंधों से सरक जाती थी और हज़रत अबू बकर (रज़ि.) बार-बार उसे ठीक करते रहे। जब हज़रत अबू बकर (रज़ि.) ने आपकी विनती और प्रबल रुदन को देखा तो अत्यंत चिंतित होकर अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! अब बस कीजिए, क्या अल्लाह ने अपनी सहायता का वादा नहीं किया है?"।

आप आका ने फ़रमाया: "हाँ, वादा किया है, लेकिन मुझे उसकी स्वावलंबिता (ग़िना) के गुण से डर लगता है कि कहीं हमारी कोशिश या रणनीति में कोई त्रुटि न रह गई हो, जिससे अल्लाह की मदद आने में देर न हो जाए।"

लेकिन जब आप आका की दुआएँ अपनी चरम सीमा तक पहुँच गईं, और अल्लाह की सहायता को खींच लाने के लिए तथा उसकी ग़ैरत को उत्तेजित करने के लिए आप आका ने अत्यधिक व्याकुलता की स्थिति में प्रार्थना की:

"अल्लाहुम्मा इन्नी अंशुदुका 'अह्दका व व'अदका। अल्लाहुम्मा इन तुह्लिक हाज़िहिल 'इसाबत मिनेहल-इस्लाम, ला तुअबद फिल-अर्ज़।"

अर्थात: "हे मेरे प्रभु! तू अपने वादों को पूरा कर! हे मेरे आका! यदि आज इस्लाम के ये अनुयायी इस रणभूमि में मारे गए, तो फिर धरती पर तेरी पूजा करने वाला कोई न बचेगा।"

फिर अल्लाह की सहायता पर पूर्ण विश्वास के साथ आप आका युद्धभूमि की ओर प्रस्थान कर गए और अल्लाह की यह शुभवाणी सुनाई: "स-युहज़मुल-जम'उ व-युवल्लूनद्दुबुर" (सूरह क़मर : 46) अर्थात यह काफ़िरों की सेना अवश्य ही परास्त होगी और पीठ दिखाकर भागेगी।

इसके पश्चात आपने एक मुट्ठी रेत और कंकरियाँ उठाईं और काफ़िरों की सेना की ओर जोर से फेंकते हुए जोश से कहा: "शाहतिल-वुजूद", अर्थात दुश्मनों के चेहरे विकृत हो जाएँ।

उस एक मुट्ठी रेत ने चमत्कार कर दिखाया ऐसी आँधी उठी कि काफ़िरों की आँखें, मुँह और नाक रेत से भर गईं। फिर हज़रत रसूल-ए-करीम आका के आदेश पर मुसलमानों की सेना ने एकाएक आक्रमण कर दिया और चंद ही क्षणों में अबू जहल, उत्बा, शैबा आदि क़ुरैश के बड़े-बड़े सरदार मारे जाकर धूल में मिल गए। अंततः काफ़िर-ए-मक्का अपने सत्तर मारे गए और सत्तर बंदी साथियों को मैदान-ए-बद्र में छोड़कर, शेष पराजित सेना को लेकर हताश और अपमानित होकर मक्का वापस लौट गए।

इस अवसर पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक और महान नैतिक गुण यह सामने आया कि शत्रु की सेना अपने मरे हुए लोगों को खुले मैदान में छोड़कर भाग गई थी, लेकिन आपने यह स्वीकार नहीं किया कि प्रचलित रीति के अनुसार उन शवों को विकृत अवस्था में पड़ा रहने दिया जाए या उन्हें जानवरों की खुराक बनने दिया जाए। आपने एक गड्ढा खुदवाया और उसमें चौबीस (24) मुशरिक सरदारों को दफन करवा दिया। इसी स्थान को "क़लीब-ए-बद्र" कहा जाता है।(संदर्भ: बुख़ारी, किताबुल-मग़ाज़ी)

सम्माननीय श्रोताओं! यह मुसलमानों और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए पहली महान और निर्णायक विजय थी, जिसने काफ़िरों की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। किंतु इस विजय पर न तो आपने और न ही आपके साथियों ने कोई उत्सव मनाया बल्कि अपने प्रभु की महिमा के नारे ही बुलंद किए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) वर्णन करते हैं कि अबू जहल को मारने और उसे अंतिम वार देने के बाद, मैं हज़रत रसूलुल्लाह आका की सेवा में हाज़िर हुआ और सूचना दी कि अबू जहल मारा गया। उस समय भी आपने "ला इलाहा इल्लल्लाह" एकेश्वरवाद का नारा बुलंद किया और कहा: "क्या अल्लाह वह नहीं है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं?" मैंने अर्ज़ किया: हाँ, या रसूलल्लाह!

फिर जब आप आका अबू जहल की लाश के पास पहुँचे तो कहा: "उस अल्लाह के लिए सारी प्रशंसा है, जिसने ऐ अल्लाह के शत्रु! तुझे अपमानित किया।" इसके बाद आपने फ़रमाया: "यह इस उम्मत का फ़िरऔन था।"

(संदर्भ: मुअज्जम अल्-कबीर लित्-तबरानी, जिल्द 9, पृष्ठ 81, बैरूत हवाला: तालीफ़ उस्वा-ए-इन्सान-ए-कामिल)

सम्माननीय श्रोताओं! यह सदैव स्मरण में रहना चाहिए कि हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने युद्ध के दौरान अपने सहाबा को नैतिक नियमों और स्थायी हिदायतों के रूप में पहले से ही यह बातें सिखा दी थीं:

युद्ध के समय किसी वृद्ध व्यक्ति, छोटे बालक और किसी स्त्री की हत्या नहीं करनी चाहिए।

शत्रु पर रात के समय, सोते हुए, आक्रमण नहीं करना चाहिए और न ही गुप्त छापामार हमला करना चाहिए।

किसी भी धर्म के धार्मिक नेताओं की हत्या नहीं करनी चाहिए और अन्य धर्मों के पूजा स्थलों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।

हरे-भरे फलों वाले वृक्षों को नहीं काटना चाहिए और किसी भी जीवित प्राणी को आग में नहीं जलाना चाहिए।

शत्रु के शवों का अंग-भंग (मुस्ला) नहीं करना चाहिए और उन्हें यूँ खुला न छोड़ना चाहिए कि उन्हें जंगली जानवर खा जाएँ।

संक्षेप में कहा जाए तो जब दुश्मन के आक्रमण से विवश होकर अल्लाह के आदेश से हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आत्मरक्षा हेतु तलवार

उठानी पड़ी, उस समय जब संसार युद्ध की स्थिति में सब कुछ जायज़ मानती थी, आपने पहली बार मानवता को युद्ध के नैतिक सिद्धांतों से अवगत कराया। इन नैतिक नियमों के साथ जब आप आका युद्ध के लिए निकलते, तो आपका संपूर्ण विश्वास और आश्रय केवल अल्लाह की ज़ात पर होता।

हज़रत अनस (रज़ि.) वर्णन करते हैं कि जब भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ग़ज़वे के लिए निकलते तो यह दुआ किया करते थे:"अल्लाहुम्मा अंता अज़ूदी वा अंता नसीरी, व बिक उक़ातिल"

(मुसनद अहमद बिन हंबल)

अर्थात: "हे अल्लाह! तू ही मेरा सहारा है, तू ही मेरा मददगार है और तेरे ही भरोसे मैं युद्ध करता हूँ।"

अब ग़ज़वा-ए-उहुद की उस नाज़ुक घड़ी में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के जो उच्च नैतिक गुण प्रकट हुए, उनमें से दो का इस समय उल्लेख करना पर्याप्त होगा। पहला तो आपकी जान के ख़तरे के बावजूद अल्लाह की ग़ैरत के प्रति आपका स्वाभाविक और प्रबल भावनात्मक प्रत्युत्तर था।

जब कुछ सहाबा ने आपकी बार-बार दी गई स्पष्ट हिदायत की उपेक्षा कर पहाड़ी दर्रे की रक्षा छोड़ दी, तो एक जीती हुई लड़ाई अस्थायी हार में बदल गई। ख़ालिद बिन वलीद की नेतृत्व में काफ़िरों की सेना ने पीछे से अचानक हमला किया जिससे मुस्लिम सेना बिखर गई और हज़रत रसूलुल्लाह आका कुछ सहाबा के साथ घिर गए। इस संघर्ष में आप आका घायल हो गए और एक गहरे गड्ढे में सहाबा के नीचे गिर जाने की वजह से यह आशंका फैल गई कि शायद आप आका शहीद हो गए हैं।

इसी बीच अबू सुफ़ियान उस दर्रे के पास खड़ा होकर चिल्लाया: "ऐ मुसलमानों! क्या तुममें मुहम्मद आका हैं?" आपने आदेश दिया: "कोई उत्तर मत दो।" फिर उसने हज़रत अबूबकर (रज़ि.) और हज़रत उमर (रज़ि.) के बारे में पूछा, तब भी किसी ने आपके आदेश के अनुसार उत्तर नहीं दिया।

इस पर अबू सुफ़ियान ने यह अनुमान लगाते हुए कि ये सभी मारे जा चुके हैं, ऊँचे स्वर में नारा लगाया: "उ'लु हुबल! हे हुबल (मूर्तिपूजक देवता), तू सर्वोच्च है!"

तब आपने आका कहा: "तुम उत्तर क्यों नहीं दे रहे?"

सहाबा ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! हम क्या उत्तर दें?"

आप आका ने फ़रमाया: "घोषणा कर दो: अल्लाहु अ'ला वा अजल", अर्थात "सर्वोच्चता और महानता केवल अल्लाह ही को प्राप्त है।"

फिर अबू सुफ़ियान ने कहा: "लना अल्-'उज़्ज़ा व ला 'उज़्ज़ा लकुम", अर्थात "हमारे पास 'उज़्ज़ा देवी है और तुम्हारे पास कोई 'उज़्ज़ा नहीं।"

आप आका ने फ़रमाया: "कहो: अल्लाहु मोलाना व ला मौला लकुम", अर्थात "'उज़्ज़ा क्या चीज़ है? हमारे साथ अल्लाह है जो हमारा मददगार है और तुम्हारे साथ कोई मददगार नहीं।"

(संदर्भ: सही बुख़ारी, किताबुल-जिहाद वस्सियर)

सम्माननीय श्रोताओं! यह दूसरा प्रसंग भी उसी अवसर का है जिसमें रहमतुल्लिल्-आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जानलेवा शत्रुओं के लिए भी केवल माफी और मार्गदर्शन की ही दुआ करते हैं।

जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है, इस युद्ध में हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुशरिक़ीन की ओर से ज़ख़्म पहुँचे और आपकी खुद (लोहे की टोपी) आपके चेहरे में धँस गई, जिसके कारण आपके दो दाँत मुबारक शहीद हो गए।इस गहन पीड़ा और आघात की अवस्था में भी आपने अत्यंत करुणा और पीड़ा के साथ फ़रमाया:

"कैफ़ युफलिहु क़ौमुन ख़ज़्बू वज्हा नबीय्यिहिम बिद्दमि वहुवा यदऊहुम इला रब्बिहिम",

अर्थात "वह क़ौम कैसे सफल हो सकती है जिसने अपने नबी के चेहरे को ख़ून से रंग डाला, महज़ इसलिए कि वह उन्हें उनके रब की ओर बुलाता है।"

फिर कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद, जब आपकी रहमत का सागर उमड़ा, तो आपने फ़रमाया:

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर लि-क़ौमी फ़ इन्नहुम ला यालमून"

अर्थात "हे मेरे अल्लाह! मेरी क़ौम को क्षमा कर दे, क्योंकि यह अपराध उन्होंने अज्ञान और अज्ञानता में किया है।"

(सही बुख़ारी किताब अहादीसुल-अंबिया)

ग़ज़वा-ए-बद्र और ग़ज़वा-ए-उहुद के बाद काफ़िर-ए-मक्का की जलन और मुसलमानों से शत्रुता और अधिक बढ़ गई। उसी समय निर्वासित यहूदियों के क़बीले बनू नज़ीर ने अन्य अरब क़बीलों को उकसाकर क़ुरैश-ए-मक्का की ईर्ष्या की आग में और अधिक घी डालने का कार्य किया।

जब अबू सुफ़ियान के नेतृत्व में क़ुरैश की सेना मक्का से निकली, तो अन्य क़बीले जैसे ग़त्फ़ान, बनू असद, फ़ज़ारा, अशजअ, बनू मुर्राह आदि भी उस सेना में शामिल होते गए। यहाँ तक कि जब यह सेना मदीना पहुँची, तो वह अरब के विभिन्न क़बीलों की संयुक्त फ़ौज के रूप में लगभग दस हज़ार की विशाल संख्या में बदल चुकी थी। यह एक बाढ़ की तरह मदीना पर टूटी और यह शपथ ली कि जब तक इस्लाम को धरती के पृष्ठ से समाप्त नहीं कर देंगे, तब तक वापस नहीं लौटेंगे।

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निगरानी और गुप्तचर व्यवस्था इतनी दृढ़ और व्यवस्थित थी कि अभी क़ुरैश की सेना मक्का से निकली ही थी कि आपको इसकी सूचना प्राप्त हो गई। आपने सहाबा को एकत्र कर परामर्श लिया और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की यह राय स्वीकार की कि मदीना के असुरक्षित भाग के सामने एक लम्बी और गहरी खाई (ख़ंदक़) खोदकर सुरक्षा का प्रबंध किया जाए।

इस प्रकार खंदक की खुदाई का कार्य आरंभ हुआ उस समय ऐसी कठिन परिस्थिति थी कि मुसलमानों को कई-कई समय भूखा रहना पड़ रहा था। यहाँ तक कि स्वंय रहमतुल्लिल्-आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी पेट पर पत्थर बाँधकर भूख की पीड़ा को सहन कर रहे थे।

उस कठिन समय में आपके जो नैतिक गुण प्रकट हुए, उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जाता है।

सबसे पहले यह कि जहाँ एक ओर सहाबा मजदूरों की भाँति खुदाई में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर हमारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी कोई ड्यूटी सौंपकर घर में विश्राम नहीं कर रहे थे, बल्कि सहाबा के साथ मिलकर खुदाई का काम कर रहे थे, मिट्टी ढो रहे थे और उनके उत्साह और प्रसन्नता को बनाए रखने के लिए काव्यपंक्तियाँ भी पढ़ रहे थे।

आपकी जुबान से विशेष रूप से यह शेर सुनने में आया:

"अल्लाहुम्म इन्नल-'ऐशा 'ऐशुल-आख़िरह फ़ग़्फ़िर लिल-अंसरि वल-मुहाजिर"अर्थात "हे अल्लाह! वास्तविक जीवन तो केवल परलोक का जीवन है, अतः तू अपने फ़ज़्ल से अंसार और मुहाजिरीन को क्षमा कर।"

इसी प्रकार कुछ अन्य शेरों को सहाबा के साथ स्वर मिलाकर पढ़ने का भी वर्णन मिलता है।

एक और महान नैतिक गुण जो प्रशासनिक अधिकारियों और सेनापतियों के लिए आदर्श है, उसका वर्णन इस प्रकार है:

जब खंदक की खुदाई के दौरान एक बड़ी चट्टान सामने आ गई जिसे सहाबा की कई कोशिशों और वारों के बावजूद तोड़ा नहीं जा सका, तब वे हज़रत रसूलुल्लाह आका की सेवा में उपस्थित हुए और परिस्थिति बताई। आपने केवल कोई उपाय या निर्देश देकर उन्हें वापस नहीं भेजा, बल्कि स्वंय खड़े हुए और स्थल पर पहुँचकर कुदाल अपने हाथ में लिया। आपने पहली, दूसरी, यहाँ तक कि तीसरी वार में चट्टान को चकनाचूर कर दिया।

इस महान नैतिकता को परम प्रभु की बारगाह से जिस प्रकार की स्वीकृति प्राप्त हुई, वह अत्यंत विलक्षण थी। आपने हर बार जब चट्टान पर प्रहार किया, तो "अल्लाहु अकबर" का उद्घोष किया। जब सहाबा ने इसका कारण पूछा, तो आपने फ़रमाया: पहली वार पर अल्लाह ने मुझे एक दिव्य दृश्य दिखाया जिसमें शाम (सीरिया) की सल्तनत की चाबियाँ मुझे प्रदान की गईं और शाम के लाल महलों का दर्शन कराया गया। दूसरी वार पर फ़ारस की सल्तनत की चाबियाँ मुझे दी गईं और मदायन के सफेद महल मुझे दिखाई दिए। तीसरी वार पर जो चिंगारी निकली, उसमें मुझे यमन की चाबियाँ दी गईं और आपने फ़रमाया: "ख़ुदा की क़सम! उस समय मुझे सन'आ के दरवाज़े दिखाए जा रहे थे।" इसीलिए हर दृश्य पर, जो खुदा तआला की क़ुदरत का प्रतीक था, मैंने "अल्लाहु अकबर" का नारा बुलंद किया, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान, सर्वाधिकार युक्त और महत्ता का आका प्रभु हमारी इस अत्यंत निर्बल अवस्था में हमें भविष्य की विजय और इस्लाम की श्रेष्ठता के दर्शन करा रहा था।

सम्माननीय श्रोताओं! यह कोई कथा या दंतकथा नहीं, बल्कि वास्तविक इतिहास है जिसकी साक्षी स्वयं संसार है। ये वादे, कुछ तो स्वयं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के अंतिम दिनों में और अधिकतर आपके ख़ुलफ़ा के युग में पूर्ण होकर इन दिव्य दृश्यों की पुष्टि कर गए कि वास्तव में ये भविष्यवाणियाँ उसी काल की गई थीं जब मुसलमान अत्यंत कमज़ोर अवस्था में थे और ये विजय केवल अल्लाह की कृपा से हुई थी।

इस ग़ज़वा-ए-अहज़ाब का अंत बीस दिनों के अत्यंत कठिन और कष्टप्रद घेरे के बाद बिना किसी रक्तपात के, केवल हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ और अल्लाह की चमत्कारी शक्ति के द्वारा हुआ। जबकि सहाबा इस घेरे से अत्यंत दुःखी हो गए थे और अंततः उन्होंने हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि "या रसूलुल्लाह! आप अल्लाह से दुआ करें कि वह अपने फ़ज़्ल से इस मुसीबत को दूर करे और हमें कोई दुआ सिखाएं जिसे हम इस अवसर पर अल्लाह से प्रार्थना करें।"

तब आपने उन्हें ढांढस बंधाया और फ़रमाया कि "तुम अल्लाह से यह दुआ किया करो कि वह तुम्हारी कमज़ोरियों को ढाँक दे, तुम्हारे दिलों को मज़बूती दे और

तुम्हारी घबराहट को दूर करे।"

और फिर आपने स्वयं यह दुआ की:

"अल्लाहुम्म मुनज़िलल किताब, सरीअल् हिसाब, इहज़िमिल अहज़ाब,
अल्लाहुम्म इहज़िमहुम वंसुरना अलैहिम व ज़लज़िल्हुम"

अर्थात "हे उस अल्लाह! जिसने किताब को उतारा, जो शीघ्र हिसाब लेने वाला है तू इन अहज़ाब (शत्रु क़बीलों) को पराजित कर, हमें इन पर विजय दे और इन्हें अच्छी तरह से कंपा दे।"

सम्माननीय श्रोताओं! अब देखिए इन दुआओं का प्रभाव कि अल्लाह तआला ने पृथ्वी और आकाश, दोनों से ऐसे साधन जुटा दिए कि एक ओर तो अहज़ाब के बीच आपसी मतभेद उत्पन्न हो गया और दूसरी ओर रात के समय एक भयंकर आँधी चली जिससे काफ़िरों के तंबू उखड़ गए, पर्दे टूटकर उड़ गए, हाँडियाँ उलटकर चूल्हों में जा गिरीं और रेत व कंकड़ की वर्षा ने लोगों के कान, आँख और नथुनों को भर दिया।

और सबसे बढ़कर यह कि वह अग्नियाँ जो अरब की परंपरा के अनुसार रात को ज़रूर जलाकर रखी जाती थीं, बुझने लगीं। इन दृश्यों ने उन भ्रमित हृदयों को, जो पहले ही लम्बे घेरे से पीड़ित थे, पूर्णतः विचलित कर दिया। अंततः सेनापति अबू सुफ़ियान ने क़ुरैश के नेताओं को बुलाकर कहा कि हमारी परेशानियाँ अत्यंत बढ़ चुकी हैं, अब यहाँ रुकना उचित नहीं है। यह कहकर उसने अपने लोगों को वापसी का आदेश दिया और स्वयं अपने ऊँट पर सवार हो गया। घबराहट का आलम यह था कि उसे ऊँट की रस्सियाँ खोलने का ध्यान तक नहीं रहा।

इस प्रकार दस हज़ार की सेना उस रणक्षेत्र से इस प्रकार भागी कि सुबह होने से पहले मदीना की फ़िज़ा शत्रुओं की गर्द-ओ-गुबार से बिल्कुल साफ हो गई।

इस दृश्य को देखकर हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुदा तआला की शक्ति और महिमा की घोषणा करते हुए फ़रमाया:

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू व नसर अब्दहू व हज़मल अहज़ाब वह्दहू" अर्थात "उस अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, जिसने अपने बंदे की मदद की और स्वयं अकेले ही सारे सेनाओं को परास्त कर दिया।"

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिं व आले मुहम्मद।"

सम्माननीय श्रोताओं! अन्य ग़ज़वात के विवरण को छोड़ते हुए अब मैं अंत में फ़त्ह-ए-मक्का के अवसर पर प्रकट हुए उन अनुपम और अतुलनीय नैतिक गुणों में से कुछ का उल्लेख करना चाहता हूँ, किंतु इससे पूर्व सुल्ह-ए-हुदैबिया और फ़त्ह-ए-ख़ैबर पर एक दृष्टि डालना भी आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि सुल्ह-ए-हुदैबिया की घटना ही अंततः फ़त्ह-ए-मक्का की भूमिका बनी थी।

यह बात स्मरण में रहनी चाहिए कि हुदैबिया की यात्रा किसी युद्ध अथवा संघर्ष के उद्देश्य से नहीं की गई थी, बल्कि हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी एक रुया (स्वप्न) को काबा का तवाफ करने का खुदा तआला संकेत समझते हुए, छठे हिजरी वर्ष के ज़िलक़ादा महीने में अपने चौदह सौ सहाबा के साथ मक्का की ओर कूच किया। किंतु अल्लाह की मर्ज़ी यह थी कि मक्का से नौ मील पहले, हुदैबिया के स्थान पर ही पड़ाव डालना पड़ा, क्योंकि क़ुरैश मक्का की ओर से रोका जा रहा था, जबकि हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ज़ुलहुलैफ़ा से एहराम बाँध चुके थे और तवाफ के उपरांत क़ुर्बानी देने हेतु जानवर साथ लाए थे।

इन सब तैयारियों के बावजूद, हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तलवार के ज़ोर से मक्का में दाख़िल होने का कोई इरादा नहीं था। इसलिए मक्कावालों को समझाने हेतु आपने अपने दमाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बतौर प्रतिनिधि मक्का भेजा, लेकिन उनकी वापसी में देर हुई और यह अफ़वाह फैल गई कि हज़रत उस्मान को शहीद कर दिया गया है।

यह समाचार सुनते ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा में ऐलान करके उन्हें एक कीकर के वृक्ष के नीचे इकट्ठा किया और फ़रमाया कि "यदि यह ख़बर सच है, तो ख़ुदा की क़सम, हम यहाँ से तब तक नहीं हटेंगे जब तक उस्मान का बदला न ले लें।" फिर आपने सहाबा से फ़रमाया: "आओ, मेरे हाथ पर हाथ रखकर यह वचन दो कि तुममें से कोई भी पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान की क़ीमत पर भी सही, अपने स्थान से पीछे नहीं हटेगा।"

इसके पश्चात रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों को स्पष्ट शब्दों में यह पैग़ाम दिया:

"हमारा उद्देश्य युद्ध नहीं है। हम केवल तवाफ-ए-काबा की नियत से आए हैं। इस उद्देश्य में यदि कोई बाधा बनेगा, तो विवश होकर हमें युद्ध करना पड़ेगा सिवाय इसके कि क़ुरैश हमसे किसी निश्चित अवधि की सुलह कर लें।"

तब क़ुरैश मक्का की ओर से प्रतिनिधि सुहैल बिन अम्र के साथ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक समझौता किया, जो सुल्ह-ए-हुदैबिया के नाम से प्रसिद्ध है। इस समझौते की कुछ शर्तें ऐसी थीं, जो सहाबा को अप्रिय प्रतीत हो रही थीं, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तो अत्यंत व्यग्र हो उठे थे। लेकिन रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर्वत समान धैर्य के साथ यही चाहते थे कि बैतुल्लाह का सम्मान किसी प्रकार भी भंग न हो। आपने फ़रमाया:

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, यदि क़ुरैश मुझसे कोई ऐसा प्रस्ताव करें जिससे अल्लाह की पवित्र वस्तुओं का सम्मान बरक़रार रहे, तो मैं अवश्य उसे स्वीकार करूंगा।"

इस प्रकार यह समझौता संपन्न हुआ और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस सुलह को अभूतपूर्व स्वीकार्यता प्रदान की। हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह सुलह का कदम, जो उस समय बहुतों को अप्रिय प्रतीत हो रहा था, उसी यात्रा से लौटते समय अल्लाह तआला ने आप पर वह महान सूरह नाज़िल फ़रमाई जो क़ुरआन में सूरह अल्-फ़त्ह के नाम से दर्ज है। बिस्मिल्लाह के बाद इसकी पहली ही आयत में इस सुलह को स्पष्ट विजय घोषित करते हुए फ़रमाया गया:

"إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا" (الفتح:2)

"निःसंदेह, हमने तुम्हें खुली-खुली विजय प्रदान की है।"

फिर इस सुलह के अवसर पर, जब सहाबा ने अपनी जानों की क़ुर्बानी देने का संकल्प लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की, तो इस संबंध में अल्लाह ने फ़रमाया:

"إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ" (الفتح:11)

निःसंदेह जो लोग तुम्हारी बैअत करते हैं, वे वास्तव में अल्लाह की बैअत"
"करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है।

तो देखिए, वह कितना महान रसूल है जिसका हाथ स्वयं अल्लाह ने अपना हाथ कहा, और कितने भाग्यशाली हैं वे सहाबा जो गोया कि स्वयं अल्लाह के हाथ पर बैअत कर रहे थे।

इसी सूरह की आयत नंबर 19 में इन बैअत करने वालों को अपनी प्रसन्नता की सनद प्रदान करते हुए, अल्लाह ने फ़रमाया:

"لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا"

"निःसंदेह, अल्लाह उन मोमिनों से प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तुम्हारी बैअत कर रहे थे। उसने जान लिया जो उनके दिलों में था, फिर उसने उन पर सुकून उतारा और उन्हेंएक निकटवर्ती विजय प्रदान की।"

तो जैसे कि इस सूरह अल्-फ़त्ह की आरंभिक आयत में "फ़त्हे मुबीन" की शुभसूचना दी गई थी, जो आगे चलकर फ़त्हे मक्का के रूप में पूरी हुई, वैसे ही तात्कालिक सांत्वना के लिए "फ़त्हे क़रीब" की भी बशारत दी गई, जो बिना किसी युद्ध के फ़त्हे ख़ैबर के रूप में प्रकट हुई।

अब मैं फ़त्हे ख़ैबर की घटनाओं के वर्णन को छोड़ते हुए, केवल इस विजय के पश्चात प्रकट हुए एक उत्कृष्ट चरित्र का उल्लेख करके, फ़त्हे मक्का के अवसर पर प्रकट हुए नैतिक गुणों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करूंगा।

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में शरीक थे। ख़ैबर का शासक एक बहुत कठोर और उद्दंड व्यक्ति था। जब विजय हुई तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आया और बोला "ऐ मुहम्मद! क्या तुम्हें यह अधिकार है कि हमारे जानवरों को ज़बह करो, हमारे फलों को खाओ और हमारी स्त्रियों को मारो?" यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत क्रोधित हुए। आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से ऐलान करवा कर लोगों को नमाज़ के लिए इकट्ठा किया और सहाबा को संबोधित करते हुए फ़रमाया:

"क्या तुममें से कोई व्यक्ति तकिए पर टेक लगाकर यह समझता है कि अल्लाह ने केवल वही चीज़ें हराम की हैं जो कुरआन में हैं? सुनो! मैंने भी कुछ आदेश दिए हैं और कुछ बातों से रोका है वे भी कुरआन की तरह ही हैं।

अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए यह जायज़ नहीं ठहराया कि तुम अहले किताब के घरों में बिना अनुमति के दाख़िल हो, न ही उनकी स्त्रियों को मारने की इजाज़त है और न ही उनके फल खाने की जबकि (समझौते के अनुसार) वे तुम्हें वह सब दे रहे हैं जो उनके ज़िम्मे है, अर्थात् जज़िया अदा कर रहे हैं।"

(अबू दाऊद)

सुलह हुदैबिया के फलों में से एक यह था कि "निकटवर्ती विजय" की बशारत, फ़त्ह-ए-ख़ैबर के रूप में पूरी हुई। फिर इसके दो वर्ष पश्चात्, आठ हिजरी में दुनिया ने फ़त्ह-ए-मक्का का अद्भुत दृश्य देखा। यह विजय दरअसल क़ुरैश मक्का द्वारा सुलह हुदैबिया को तोड़ने की घोषणा का ही परिणाम थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार पाक साफ़ और समर्पित सहाबा की जमाअत के साथ मदीना से मक्का की ओर प्रस्थान कर गए। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इतने विशाल सैन्य बल की तैयारी और गति को गोपनीय रखना सामान्यतः असंभव प्रतीत होता था, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर कठिन परिस्थिति में दुआ और रणनीति को साथ लेकर चलते थे। आपने दुआ की:

"اللّٰهُمَّ خُذِ الْعُيُونَ وَالْأَخْبَارَ عَنْ قُرَيْشٍ"

"हे अल्लाह! क़ुरैश के जासूसों को रोक ले और हमारी ख़बरें उन्हें न पहुँचें।"

और रणनीति यह अपनाई कि मदीना से मक्का की ओर जाने वाले सभी रास्तों पर निगरानी चौकियाँ स्थापित कर दी गईं।

अल्लाह तआला ने आपकी दुआओं और रणनीति को इस प्रकार क़ुबूल फ़रमाया कि यह विशाल सेना मक्का की वादी में बिना किसी सूचना या प्रतिरोध के प्रवेश कर गई। आपने सहाबा को आदेश दिया कि वे विभिन्न टीलों पर फैल जाएँ और हर व्यक्ति एक मशाल जलाए। उस रात दस हज़ार मशालें मरा-ज़्ज़हरान की पहाड़ियों पर जल उठीं, जिससे एक अत्यंत भव्य और डरावना दृश्य सामने आया।

(बुख़ारी)उधर अबू सुफ़यान और उसके साथी रात में मक्का की गश्त पर निकले तो यह अनगिनत जलती मशालें देखकर स्तब्ध रह गए।

चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू सुफ़यान के लिए पहले ही अमन का ऐलान कर चुके थे और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें पनाह दी थी, इसलिए जब सुबह अबू सुफ़यान को हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में लाया गया, तो आपने फ़रमाया:

"अबू सुफ़यान! क्या अब भी वह समय नहीं आया कि तुम गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं?"

तब वही अबू सुफ़यान, जिसने ग़ज़वा-ए-उहुद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की अफ़वाह से आनंदित होकर 'हबल' नामक मूर्ति की महानता का नारा लगाया था और 'उज्ज़ा' को अपना आका घोषित किया था अब वही अबू सुफ़यान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समक्ष बेसाख्ता यह गवाही देता है:

"मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों। आप अत्यंत सहनशील, शरीफ़ और रिश्तों को निभाने वाले हैं। यदि अल्लाह के सिवा कोई और पूज्य होता तो वह अवश्य हमारी सहायता करता।" (इब्न हिशाम)

सम्मानित श्रोतागण! जब हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने मलिका सबा को तौहीद और अधीनता का पैग़ाम भेजा, तो उसने अपने दरबारियों से परामर्श किया। उस अवसर पर मलिका सबा ने, जो अत्यंत चतुर और विजेता शासकों के आचरण से भलीभाँति परिचित थी, यह कथन किया:

"إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً. وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ" (النمل:35)

"स्मरण रखो! जब विजेता बादशाह किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं, तो वे वहाँ तबाही मचा देते हैं और वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित करके रख देते हैं, और वे ऐसा ही किया करते हैं।"

लेकिन आइए देखें कि फ़त्ह-ए-मक्का के दिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कैसे चरित्र प्रकट होते हैं। मक्का के उन मुशरिकों के साथ क्या व्यवहार किया जाता है जिन्होंने मक्का में तेरह वर्षों तक आपकी ज़ात, आपके परिवार और आपके साथियों पर ऐसे अत्याचार किए जिनको पढ़कर या सुनकर शरीर कांप उठता है। फिर जब आपने मदीना की ओर हिजरत कर ली, तब भी वे आपको और आपके साथियों को चैन से बैठने न दे सके। बद्र और उहुद में निहत्थे मुसलमानों को तलवारों से काट डालने और इस्लाम के नाम को मिटा देने के लिए भारी सेना के साथ चढ़ दौड़े। फिर आसपास के क़बीलों को इकट्ठा करके दस-बारह हज़ार की बड़ी फौज लेकर मदीना पर चढ़ आए और कमज़ोर मुसलमानों ने भूखे-प्यासे रहकर खाई खोदकर अपनी रक्षा के साधन जुटाए। फिर जब आप तवाफ़-ए-काबा के लिए आए तो हुदैबिया के स्थान पर ही रोक दिया गया और अपनी शर्तों पर सुलह करके लौट जाने पर विवश कर दिया गया। इन सब अत्याचारों की करुण कथा के संदर्भ में जब आप रहमतुल्लिल आलमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च चरित्र को देखते हैं तो वह अनुपम प्रतीत होता है।

शांति और सुरक्षा के सम्राट, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से जब उन ज़ालिम काफ़िरों से पूछा गया कि अब तुम किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा रखते हो, तो उन्होंने उत्तर दिया: "आप जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन आप जैसे करमदिल इंसान से हमें वही व्यवहार मिलने की आशा है जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से किया था।"

सम्माननीय श्रोतागण! यह विजय केवल मक्का नगर और उसके वासियों पर ही नहीं, बल्कि हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान चरित्र की भी विजय थी, जिसका दुश्मन भी स्वीकार कर रहा था। बहरहाल, उनकी आशाओं से कहीं अधिक रहमतुल्लिल आलमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे दया और क्षमा का व्यवहार किया और उनके सभी अत्याचारों को नज़रअंदाज़ करते हुए फ़रमाया:

اِذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ

"इज़हबू अंन्तुमुत्-तुलक़ा, ला तस्रीबा 'अलैकुमुल्-यौम, यग़फ़िरुल्लाहु लकुम।"

"जाओ, तुम सब आज़ाद हो। आज तुम पर कोई पकड़ नहीं की जाएगी। मैं न केवल तुम्हें क्षमा करता हूँ, बल्कि अपने पालनहार से भी तुम्हारे लिए क्षमा की दुआ करता हूँ।"(इब्न हिशाम)

और अमन की गारंटी के साथ यह सार्वजनिक घोषणा भी करवा दी गई:"आज मस्जिदे हराम में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति को सुरक्षा दी जाएगी। सुरक्षा दी जाएगी हर उस व्यक्ति को जो अबू सुफ़यान के घर में प्रवेश कर जाए या जो अपने हथियार डाल दे और अपना द्वार बंद करके बैठा रहे। हाँ, उस व्यक्ति को भी पनाह दी जाएगी जो बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु के झंडे के नीचे आ जाए।"

(अल्-हल्बिया)

सम्माननीय श्रोतागण! यदि ग़ज़वात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्कृष्ट चरित्र का वर्णन किया जाए और युद्धों की आपाधापी में आपके इबादत के हालात का उल्लेख न किया जाए तो यह वर्णन अधूरा रहेगा।

संक्षेप में कहा जाए तो युद्धों के दौरान भय और संकट की स्थिति में भी आपने कभी जमाअत के साथ नमाज़ नहीं छोड़ी। ऐसी हालत में भी आपने इस तरह सहाबा को जमाअत से नमाज़ पढ़ाई कि एक समूह दुश्मन के सामने खड़ा रहा और दूसरा समूह आपके पीछे खड़ा होकर आधी नमाज़ पढ़ता रहा, फिर पहला समूह आया और आधी नमाज़ पढ़ी, फिर दोनों ने शेष नमाज़ स्वयं पूरी की। इस तरह आपने अपने व्यावहारिक उदाहरण से उम्मत को समझा दिया कि मृत्यु जैसे सबसे बड़े खतरे की स्थिति में भी फ़र्ज़ नमाज़ माफ़ नहीं होती।

रिवायतों में आता है कि ग़ज़वा-ए-अहज़ाब में दुश्मन की सख़्त निगरानी और उनके लगातार हमलों के कारण ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, यहाँ तक कि सूरज डूब गया। तब आपने समय पर नमाज़ अदा न कर पाने पर व्याकुल होकर कहा: "ख़ुदा उन्हें तबाह करे जिन्होंने हमें नमाज़ से रोक दिया।" फिर आपने सहाबा को इकट्ठा किया और छूटी हुई नमाज़ें अदा करवाईं। (बुख़ारी)

आजकल हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ भी विभिन्न ग़ज़वात के संदर्भ में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी का उल्लेख कर रहे हैं। एक ग़ज़वा के वर्णन में फ़रमाया:

"हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी। अर्थात आपके दिल में उन (मुशरिकों) के प्रति कोई व्यक्तिगत शत्रुता नहीं थी, बल्कि यह युद्ध अल्लाह तआला के दीन को मिटाने वालों के विरुद्ध था... फिर आपने युद्ध के सिद्धांत और नियम निर्धारित किए, अनुबंधों का सम्मान किया और इन बातों पर अत्यंत स्तर तक अमल किया। आज की दुनिया की तरह नहीं कि सिद्धांत तो बहुत बनाए हैं लेकिन अमल कोई नहीं करता, बल्कि दोहरे मापदंड अपनाए जाते हैं।"

(ख़ुत्बा जुमा, 1 दिसंबर 2023, मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड, यूके)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह भी ख़िलाफ़त पर आसीन होने से पूर्व, जुलूस सालाना के अवसर पर ग़ज़वात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्कृष्ट चरित्र पर भाषण फ़रमाते रहे हैं। ग़ज़वा-ए-उहुद के वर्णन में एक स्थान पर फ़रमाया:

"यद्यपि ग़ज़वाते नब्वी पर दृष्टिपात करने से हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अद्वितीय युद्ध कुशलता भी उजागर होती है, जो कि एक सेनापति के रूप में आप में पूरी तरह विद्यमान थीं, लेकिन आपकी प्राथमिक और अंतिम हैसियत एक युद्ध विशेषज्ञ की नहीं बल्कि एक नैतिक और आत्मिक नेता की थी, जिनके हाथों में उत्कृष्ट नैतिकताओं का ध्वज सौंपा गया था। इस ध्वज को ऊँचा रखने और और ऊँचा करने के महान प्रयत्न में आप जीवन भर संलग्न रहे, जो शांति के समय भी उसी तरह जारी रहा जैसे युद्ध की स्थिति में। दिन में भी आपने इस ध्वज की रक्षा की और रात में भी... और विजयी महानायक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर नैतिक युद्ध में महान विजय प्राप्त हुई।"

(उद्धारित "तक़ारीर जलसा सालाना क़ब्ल-ए-ख़िलाफ़त", पृष्ठ 334–335)

हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि आज की मुस्लिम संस्थाओं को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन पवित्र आदर्शों को सदैव सामने रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

वा आख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।

★ ★ ★

अल्लाह तआला की सत्ता "समीउद्दुआ" (दुआएँ सुनने की विशेषता के आलोक में)

मोहम्मद हमीद कौसर साहिब पद: नाज़िर दावत-इलल्लाह, उत्तरी भारत, क़ादियान भाषण जलसा सालाना क़ादियान 2024

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ۔ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ.
وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَإِنِّيْ قَرِيْبٌ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (सूरह बक़रह आयत 187)
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْ أَسْتَجِبْ لَكُمْ (सूरतुल मोमिन आयत 61)
أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ (सूरतुन नमल आयत 63)

सम्माननीय अध्यक्ष महोदय एवं आदरणीय श्रोतागण!

मैंने ख़ुदा तआला की सत्ता को उसकी एक विशेषता "समीउद्दुआ" अर्थात् "प्रार्थनाएँ सुनने वाला" के प्रकाश में कुछ विचार प्रस्तुत करने हैं, जिससे कि हम उस परम सत्ता की यथार्थ पहचान प्राप्त कर सकें।

श्रोतागण! ख़ुदा तआला स्वयं कहता है "मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार अवश्य सुनूँगा।"

परंतु आज की आधुनिक पीढ़ी धर्म और ख़ुदा तआला से इस कारण विमुख होती जा रही है कि उनके धार्मिक पथप्रदर्शक उन्हें उस सच्चे ख़ुदा तआला की पहचान कराने का जो मार्ग दिखाते हैं, वह प्रभावी सिद्ध नहीं होता। इसे हम एक सरल उदाहरण से समझ सकते हैं: यदि कोई व्यक्ति अपनी किसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु किसी घर का द्वार खटखटाए और यह आशा करे कि भीतर रहने वाला उसकी सहायता करेगा, लेकिन बार-बार खटखटाने पर भी यदि द्वार नहीं खुलता, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि भीतर कोई है ही नहीं। और यदि होता, तो उत्तर अवश्य देता। अतः वह निराश होकर यह विश्वास कर बैठता है कि ख़ुदा तआला का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

इसके उलट, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जो खोजता है, वह पाता है; जो माँगता है, उसे दिया जाता है; और जो द्वार खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है।"

(ब्राहीन-ए-अहमदिया, भाग 4, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 429-430)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक भावपूर्ण कविता में कहते हैं

"बारगाह-ए-ईज़दी से तू न यूँ मायूस हो,
मुश्किलें क्या चीज़ हैं मुश्किलकुशा के सामने।
हाजतें पूरी करेंगे क्या तेरी आजिज़ बशर,
कर बयाँ सब हाजतें हाजतरवा के सामने।"

इन छंदों में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्रत्येक मनुष्य को यह उपदेश देते हैं कि जीवन में दुख, पीड़ा, चिंता, व्यथा और निराशा का आना अनिवार्य है, किंतु इन कठिनाइयों का एक ही उपाय है तू उस प्रभु से निराश मत हो, जो सच्चा "हाजतरवा" (प्रार्थनाएँ स्वीकार करने वाला) है। तू बार-बार उसकी बारगाह में अपनी आवश्यकताओं को निवेदन करता चला जा; वही तेरी ज़रूरतें पूरी करेगा। यह कोई केवल उपदेश नहीं, बल्कि एक ऐसा आध्यात्मिक प्रयोग है जिसे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लाखों अनुयायियों ने आज़माया है।

उन्होंने उस "समीउद्दुआ" प्रभु का दरवाज़ा खटखटाया, और उनके लिए वह दरवाज़ा खोल दिया गया। इसी प्रकार, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी भी साक्षी है कि उन्होंने हर कठिनाई में उस प्रभु की बारगाह में झुककर दुआ की और वह कृपालु प्रभु उनकी दुआओं को सुनकर उन पर कृपा करता गया।

श्रोतागण! इस विषय को और स्पष्ट करने हेतु कुछ ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत हैं:

एक प्रामाणिक अनुमान के अनुसार, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पहली वह्यी (ख़ुदा तआला प्रकाशना) 20 अगस्त 610 ईस्वी को नाज़िल हुई। आरंभ में लोगों का विरोध बहुत तीव्र नहीं था, परंतु जब इस्लाम में प्रवेश करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ने लगी, तब मक्का के लोगों ने कठोर विरोध आरंभ कर दिया। वे आपको इस्लाम के प्रचार से रोकने के लिए हर वैध-अवैध उपाय करने लगे। जब विरोध की यह लहर अत्यंत तीव्र हो गई, तब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी तड़प के साथ यह दुआ की:

اللَّهُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ

(मिश्कात, किताब अल्-फितन: 5787)

हे अल्लाह! अबू जहल या उमर बिन ख़त्ताब के माध्यम से इस्लाम को सामर्थ्य एवं समर्थन प्रदान कर।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन दिनों पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रबल विरोधियों में से थे। उसी समय उनके मन में यह विचार आया कि क्यों न मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ही समाप्त कर दिया जाए। यह विचार आते ही उन्होंने तलवार उठाई और पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मारने के इरादे से घर से निकल पड़े। मार्ग में एक व्यक्ति ने पूछा "उमर! कहाँ जा रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया "मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मारने जा रहा हूँ।" उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए कहा "पहले अपने घर की तो ख़बर ले लो। तुम्हारी बहन और बहनोई तो पहले ही मुसलमान हो चुके हैं।"

यह सुनते ही उमर तुरंत अपनी बहन के घर पहुँचे। बाहर से ही उन्होंने सुना कि वे लोग क़ुरआन की तिलावत कर रहे हैं। भीतर जाते ही वे अपने बहनोई को पीटने के लिए आगे बढ़े। उनकी बहन ने पति को बचाने के लिए बीच में हस्तक्षेप किया। उमर ने पहले ही हाथ उठा रखा था और उनकी बहन अचानक सामने आ गईं, जिसके कारण उनका हाथ उनकी बहन की नाक पर ज़ोर से लग गया और रक्त बहने लगा। अपनी बहन का खून बहता देख उनके मन में कोमलता आई वह वही घड़ी थी जब पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह दुआ असर कर रही थी।

उमर ने पूछा "तुम क्या पढ़ रहे थे?"

बहन ने कहा "मैं यह पाक चीज़ तुम्हारे जैसे व्यक्ति को नहीं दूँगी।"

उमर ने पूछा "तो अब क्या करूँ?"

उत्तर मिला "वहाँ पानी है, जाकर स्नान करो, तब मैं तुम्हें यह क़ुरआन दूँगी।"उमर ने स्नान किया, लौटकर आए और क़ुरआन की वे आयतें पढ़ीं। वे आयतें थीं।

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى...

(ता हा, 20:1-2)

हे मुहम्मद, हमने यह क़ुरआन आपको कष्ट देने के लिए नहीं उतारा...

जब उन्होंने वे आयतें समाप्त कीं, तो उनके भीतर एक अद्भुत परिवर्तन आ चुका था। वे बेइख़्तियार पुकार उठे।

"अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अश्हदु अन्न मुहम्मदन रसूलुल्लाह।"

इसके पश्चात उन्होंने पूछा "पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहाँ हैं?" उत्तर मिला "दार-ए-अरक़म में।"

उमर उसी अवस्था में वहाँ पहुँचे। दरवाज़ा खटखटाया। मुसलमानों ने जब यह सुना कि उमर आए हैं, तो भयभीत हो गए। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु जो हाल ही में मुसलमान हुए थे, और स्वभाव से योद्धा थे, उन्होंने कहा "दरवाज़ा खोलो, मैं देखता हूँ वह क्या करता है।"

दरवाज़ा खोला गया। उमर भीतर आए। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "उमर! किसलिए आए हो?"

उमर बोले "या रसूलुल्लाह! मैं आपके ग़ुलाम बनने आया हूँ।"

यह सुनकर मुसलमानों में अपार हर्ष उत्पन्न हुआ। सबने जोर से तकबीर के नारे लगाए।

(संदर्भ: तफ़्सीर-ए-कबीर, खंड 6, पृष्ठ 141 से 143)

श्रद्धालु साथियो! ज़रा विचार कीजिए! हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अत्यंत तीव्र विरोध का सामना था और आपने प्रार्थनाएँ स्वीकार करने वाले परमेश्वर के द्वार को खटखटाया, और अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को स्वीकार किया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हृदय को इस्लाम के लिए खोल दिया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि यह केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर का ही अस्तित्व था जो इतने कट्टर विरोधी के मन में परिवर्तन लाकर उसे इस्लाम स्वीकार करने के लिए तैयार कर सकता था, अन्यथा कोई और सत्ता इस परिवर्तन की शक्ति नहीं रखती थी।

श्रद्धालु साथियो! इसी प्रकार का एक अद्भुत प्रसंग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन में भी मिलता है। आप अपनी एक अरबी अभिव्यक्ति में कहते हैं, जिसका उर्दू सार यह है:

''मैं रात-दिन रोते-बिलखते हुए पुकारा करता था कि, ऐ मेरे पालनहार! इन बंदों

में मेरा सहायक कौन है? हे अल्लाह! मैं एक दुर्बल व्यक्ति हूँ। जब मैं बार-बार दुआ के लिए हाथ उठाता रहा और मेरी प्रार्थनाओं से आकाश की दिशाएँ भर गईं, तो मेरी दुआ स्वीकार कर ली गई और परमार्थ के आका, परम कृपालु ने अपनी दया को जोश में लाकर मुझे एक सच्चा मित्र प्रदान किया, जिसका नाम उसकी प्रकाशमय विशेषताओं के समान 'नूरुद्दीन' है।''

(सारांश, अरबी मूल से आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 5, पृष्ठ 581–582)

हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अपनी पहली भेंट का वर्णन करते हुए कहते हैं:

"मैं जम्मू से बटाला आया और वहाँ से एक तांगा लेकर क़ादियान पहुँचा। क़ादियान में, जहाँ अब मस्जिद मुबारक के पूरब में बड़ा द्वार है, मैं वहाँ पहुँचा और तांगेवाले से पूछा कि मिर्ज़ा साहिब का घर कौन-सा है। उसने मुझे मिर्ज़ा इमाम दीन से मिला दिया। उन्हें देखकर मेरे मन में एक प्रकार की घुटन उत्पन्न हुई, और मैंने सोचा कि मैं तो इस व्यक्ति से मिलने के लिए नहीं आया हूँ...। इसी व्यक्ति ने कहा कि अगर आपको मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब से मिलना है तो उनका घर पीछे की ओर है। यह सुनकर मुझे जैसे जीवनदान मिल गया कि अब मुझे वह मिर्ज़ा मिल जाएगा जिसे मैं खोजता हुआ आया हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अस्र की नमाज़ के बाद मस्जिद मुबारक की उत्तर-पश्चिमी छोटी सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। मौलाना नूरुद्दीन साहिब की दृष्टि जैसे ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक चेहरे पर पड़ी तो उन्होंने मन ही मन कहा कि बस यही वह मिर्ज़ा है, और मैं इस पर सब कुछ कुर्बान कर दूँगा।''

(तारीख़-ए-अहमदियत, खंड 1, पृष्ठ 212)

श्रद्धालु साथियो! इस घटना से सूर्य के समान स्पष्ट रूप से यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर का अस्तित्व विद्यमान है और वह हर व्यथित की प्रार्थना को स्वीकार करता है बशर्ते वह प्रार्थना उसके स्वीकार्य मानदंडों के अनुसार हो।

श्रद्धालु साथियो! इस्लामी इतिहास में सबसे पहली लड़ाई ग़ज़वा-ए-बद्र थी, जो 17 रमज़ान 2 हिजरी, अर्थात 14 मार्च 624 ईस्वी को बद्र के मैदान में लड़ी गई। काफ़िरों यानी मक्का के विरोधियों के पास लगभग एक हज़ार अनुभवी योद्धाओं की सेना थी, जो उस समय के नवीनतम हथियारों और युद्ध सामग्री से सुसज्जित थी। दूसरी ओर मुसलमानों की संख्या केवल 313 थी, जो इस शक्ति के समक्ष खड़े थे। इनमें से अधिकांश अनुभवहीन थे और उनके पास युद्ध सामग्री लगभग नहीं के बराबर थी। वे मक्का से पलायन करके अभी दो वर्ष पूर्व आए थे और उनके पास न तो समुचित भोजन था, न ठहरने का कोई निश्चित स्थान। ऐसे में वे युद्ध की तैयारी क्याकरते!

जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने खड़ी थीं, तो यदि उस समय कोई तटस्थ व्यक्ति इस परिस्थिति का अवलोकन करता, तो वह आसानी से यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य हो जाता कि मक्का की सेना मुसलमानों को कुछ ही क्षणों में समाप्त कर देगी। क्योंकि यह एक अत्यंत असमान युद्ध था। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुसलमानों की इस बाह्य दुर्बलता का पूरा भान था, इसलिए आपने परवरदिगार-ए-समीउद्दुआ के दरवाज़े पर दस्तक दी और अत्यंत विनम्रता एवं करुणा से यह प्रार्थना की:

"अल्लाहुम्म इन्नका इन तुह्लिक हाज़िहिल इसाबा मिन अहलिल इस्लाम ला तुअबद फिल अरज़।"

(हे मेरे अल्लाह! यदि यह इस्लाम के अनुयायियों का यह दल नष्ट कर दिया गया, तो फिर इस धरती पर तेरा नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा।)

परमेश्वर ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह पुकार सुन ली और मुट्ठी भर मुसलमानों को कुशल एवं अनुभवी योद्धाओं पर एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण विजय प्रदान की। मक्का के 24 प्रमुख व्यक्ति, जिनमें अबू जहल भी सम्मिलित था, मारे गए और मुसलमानों ने उनके 70 बंदी बना लिए।

"जिस प्रार्थना-स्वीकार करने वाले परमेश्वर ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ को सुना, वही परमेश्वर आज भी उनके सेवकों की प्रार्थनाओं को सुनता है और उनके लिए भी स्वीकृति के द्वार खोल देता है।"

श्रोतागण! वर्तमान युग में भी परमेश्वर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रार्थनाओं को स्वीकार करके संसार के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि खुदा तआला हर युग और हर स्थान में विद्यमान है और वही संकटमोचक और आवश्यकताओं को पूरा करने वाला है। इस संदर्भ में एक प्रसंग उल्लेखनीय है।

जिस प्रकार हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अबू लहब और उनके निकट संबंधियों ने इस्लाम के प्रचार के हर मार्ग को रोकने की भरपूर चेष्टा की, ठीक उसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चचेरे भाइयों ने भी हर वह रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश की जिससे अहमदियत के प्रचार को रोका जा सके।

दिनांक 5 जनवरी 1900 को मिर्ज़ा इमाम दीन और निज़ाम दीन ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके साथियों को कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से मस्जिद मुबारक के नीचे से जो गली मस्जिद अक्सा की ओर जाती है, उसके रास्ते में एक दीवार खड़ी कर दी और मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिला प्रशासन, डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर से संपर्क कर इस दीवार को हटवाने की कोशिश की, मगर उनका रवैया अत्यंत विरोधपूर्ण और आक्रामक था। अंततः आपने गुरदासपुर के ज़िला न्यायालय में मुकदमा दायर किया, परंतु इस मुकदमे के दौरान भी आरंभिक स्थिति आशाजनक नहीं थी।

इन चिंताजनक परिस्थितियों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़मीउद्दुआ खुदा तआला के द्वार को खटखटाया तो परमेश्वर ने आपको एक ईश्दर्शन के माध्यम से यह शुभ सूचना प्रदान की:

"अर्र-रह़ा तदूरु व यंज़िलुल-क़ज़ा। इन्ना फ़ज़्लल्लाहि ला-आतिन् व लयैसा लि-अहदिन् अं-युरद्दा मा अताः।"

(तारीख़ अहमदियत, खंड 2, पृष्ठ 73)

अर्थात चक्की घूमेगी और निर्णय प्रकट होगा। यह उस परमेश्वर का वचन है जो अवश्य पूरा होगा और किसी में सामर्थ्य नहीं कि उसे रोक सके।

श्रोतागण! जब परमेश्वर की ओर से यह शुभ-संदेश मिला, तब उस न्यायाधीश ने अपने विरोधी स्वभाव के बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में फ़ैसला सुनाया और दीवार गिराने का आदेश दिया। मिर्ज़ा निज़ाम दीन पर मुकदमे के ख़र्चों के अतिरिक्त ₹100 का जुर्माना भी ठोंका गया और दिनांक 12 अगस्त 1901 को उन्हीं हाथों से उस दीवार को ढहा दिया गया जिन्होंने इसे खड़ा किया था।

सय्यदना हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो समस्त संसार के लिए रहमत थे, उसी प्रकार आपके दूसरे अवतार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, एक सजीव रहमत का प्रतीक थे। आपने अपने इन कट्टर विरोधियों को क्षमा कर दिया और उनसे किसी प्रकार का हर्जाना नहीं लिया।

मगर इस परिवार पर, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विरोधिता के कारण, कष्टों और विपत्तियों की एक अनवरत श्रृंखला शुरू हो गई जो आपकी वफ़ात के बाद भी जारी रही। इन दुखों से परेशान होकर अंततः मिर्ज़ा निज़ाम दीन, हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के निवास स्थान पर पहुँचे और चौखट पर सिर रखकर ज़ार-ज़ार रोने लगे और कहने लगे: "मौलवी साहब! क्या हमारी मुसीबत का कोई इलाज नहीं?" इस पर खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया: "मिर्ज़ा साहब, मैं खुदा तआला निर्णय को कैसे बदल सकता हूँ?"

(सिरतुल महदी, भाग 3, पृष्ठ 654, रिवायत नंबर 720)

श्रोतागण! इस घटना पर चिंतन करने से स्पष्ट होता है कि इसमें अहमदियत के विरोधियों और दुश्मनों के लिए एक चेतावनी और सख़्त इशारा है। जो लोग अहमदियत की प्रगति और प्रचार में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि चाहे जल्दी हो या देर से, "अर्र-रह़ा तदूरु व यंज़िलुल-क़ज़ा" ख़मीउद्दुआ खुदा तआला की चक्की अवश्य चलेगी और विरोधियों पर उसकी सज़ा उतरेगी। तब यही रुकावट खड़ी करने वाले लोग खलीफ़तुल मसीह की चौखट पर सिर रखकर पुकारेंगे कि "क्या हमारी मुसीबत का कोई इलाज नहीं?" उस समय खलीफ़तुल मसीह अपना फ़ैसला सुनाएँगे।

जमाअत-ए-अहमदिया अपने विरोधियों को सच्ची हमदर्दी के साथ यह नसीहत देती है कि जिस खुदा तआला ने अतीत में बाधाएँ खड़ी करने वालों को सबक़ सिखाया, वही ख़मीउद्दुआ परमेश्वर वर्तमान और भविष्य में भी दंड देने में सक्षम है। अतः हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस (नसरहुल्लाह नसरन अज़ीज़न) की उपदेशों को ध्यान से सुनिए और पश्चात्ताप करते हुए जमाअत-ए-अहमदिया में सम्मिलित हो जाइए। "व मा अल्ैना इल्लल-बलाग़।" (हम पर केवल संदेश पहुँचाना ही है।)

श्रोतागण! क़ादियान से लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर एक नगर है कपूरथला। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में यहाँ एक सच्ची और समर्पित जमाअत थी, और मुनशी हबीबुर्रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक पारिवारिक मस्जिद थी जो उनके अहमदियत स्वीकार करने के बाद अहमदी भाइयों के अधिकार में थी। उसी में नमाज़ें अदा होती थीं और वहीं जमाअती कार्यक्रम आयोजित होते थे।

मगर अहमदियत विरोधियों ने अदालत में यह मुकदमा दायर कर दिया कि यह मस्जिद ग़ैर-अहमदी मुसलमानों को मिलनी चाहिए। यह मुकदमा कई अदालतों और सुनवाइयों से होता हुआ अपने अंतिम चरण में पहुँच गया, और अहमदी भाइयों को यह ज्ञात हुआ कि इस मुकदमे का फ़ैसला करने वाला न्यायाधीश जमाअत-ए-

अहमदिया का प्रबल विरोधी है और उसने अहमदियत के ख़िलाफ़ फ़ैसला लिख भी दिया है, जिसे वह अदालत में सुनाने वाला है।

जिस प्रार्थना-स्वीकार करने वाले परमेश्वर ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ को सुना, वही परमेश्वर आज भी उनके सेवकों की प्रार्थनाओं को सुनता है और उनके लिए भी स्वीकृति के द्वार खोल देता है।

इस परिस्थिति में, कपूरथला की जमाअत ने घबराकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पत्र लिखे और दुआ के लिए अनुरोध किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें उत्तर लिखा: "यदि मैं सच्चा हूँ तो यह मस्जिद तुम्हें अवश्य मिल जाएगी।" लेकिन जज ने अपनी विरोधी प्रवृत्ति को यथावत् रखा। अंततः उसने अहमदियों के विरुद्ध फ़ैसला लिख दिया। जिस दिन वह यह फ़ैसला सुनाने वाला था, उस दिन वह प्रातःकाल अपने कपड़े पहनकर कोठी के बरामदे में आया और अपने नौकर से कहा: "जूते पहनाओ।" और स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गया। नौकर ने जब जूते पहनाकर फीते बाँधना प्रारंभ किया, तभी अचानक "खट" की सी आवाज़ आई। उसने ऊपर देखा तो देखा कि जज कुर्सी पर औंधे मुँह गिर पड़ा है। उसने हाथ लगाकर देखा तो ज्ञात हुआ कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। ऐसा प्रतीत हुआ मानो अचानक उसके दिल की धड़कन रुक गई और प्राण निकल गए। उसके पश्चात उस जज की जगह एक हिन्दू जज को नियुक्त किया गया, जिसने पूरे प्रकरण की दोबारा जाँच कर पहले जज के निर्णय को रद्द करते हुए अहमदियों के पक्ष में फ़ैसला सुना दिया।

(सिरतुल महदी, भाग 1, पृष्ठ 57, रिवायत नंबर 79)

मौजूद श्रोतागण! विचार करें कि फ़ैसले को बदलवाना किसी भी अहमदी के वश में नहीं था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई को सिद्ध करना, और मस्जिद का अहमदियों को मिल जाना ये सब उस जज को जीवन के पटल से मिटा देना, केवल और केवल उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला के अधिकार में था। और ग़मीउद्दुआ परमेश्वर ने अपने क्रियात्मक साक्ष्य से यह सिद्ध कर दिया कि वह आज भी अपने नेक सेवकों की प्रार्थनाओं को स्वीकार कर अपनी उपस्थिति का प्रमाण देता है।

श्रोतागण! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अरबी भाषा की शिक्षा किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय से प्राप्त नहीं की थी, बल्कि बचपन में आपने केवल कुछ व्याकरण की पुस्तकें एक शिक्षक से पढ़ी थीं। इसके अतिरिक्त आपने कोई औपचारिक अरबी शिक्षा नहीं ली थी। जब ख़ुदा तआला ने आपको मसीह मौऊद, महदी मअहूद और उम्मती नबी व रसूल के आध्यात्मिक पद पर प्रतिष्ठित किया, तब आपने उर्दू और फ़ारसी में लेखन का आरंभ किया। 1893 ई. में आप अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम" लिख रहे थे, तो हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनुरोध किया कि इस पुस्तक का कुछ भाग अरबी में भी लिखा जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यंत सरलता और विनम्रता से उत्तर दिया: "मैं अरबी नहीं जानता।" इस उत्तर में वही झलक थी जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ग़ारे हिरा में जिब्रील अमीन के सामने दी थी: "मा अना बि-कारिईं" (मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ)। इस पर मौलाना अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "मैं यह नहीं कहता कि आप अरबी जानते हैं, मेरी इच्छा यह है कि आप कोह-ए-तूर पर जाएँ और वहाँ से कुछ लेकर आएँ।" इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उत्तर दिया: "मैं प्रार्थना करूँगा।"

और ग़मीउद्दुआ ख़ुदा तआला ने आपकी प्रार्थना को स्वीकार किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक अंजाम-ए-आथम में लिखा:

"उल्लिम्तु अरबा'ईना अल्फ़न मिन अल्-लुग़ात अल्-अरबिया"

मुझे चालीस हज़ार अरबी मूलधातुएँ सिखाई गई हैं।"

इस दुआ की स्वीकृति के पश्चात आपने लगभग 20 अरबी ग्रंथों की रचना की। सूरह फातिहा की तफ़सीर अरबी भाषा में लिखी और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "इ'जाज़ुल मसीह" में साहसपूर्वक यह चुनौती दी:

"यदि संसार के समस्त विद्वान, दार्शनिक, फ़क़ीह, बड़े-छोटे सभी एकत्र होकर भी इस जैसी तफ़सीर लिखना चाहें, तो वे कदापि नहीं लिख सकते।"

(तारीख़-ए-अहमदियत, खंड 2, पृष्ठ 168)

फिर 15 नवम्बर 1902 को आपने इ'जाज़-ए-अहमदी नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उर्दू लेख के अतिरिक्त अरबी भाषा में 533 शेर मुनाज़रा-ए-लुद्ध के संदर्भ में लिखे, और यह भी कहा:

"मैंने यह पुस्तक और 533 अरबी शेर केवल पाँच दिनों में लिखे हैं। यदि विरोधी उलेमा 12 दिनों में ऐसा क़सीदा लिखकर प्रस्तुत करें, तो मैं बिना किसी विलंब के उन्हें दस हज़ार रुपये पुरस्कार में दे दूँगा।"

अब 122 वर्ष बीत चुके हैं, किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि इसका उत्तर दे सके।

श्रोतागण! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो मौलाना अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से कह रहे थे कि "मैं अरबी नहीं जानता, मैं दुआ करूँगा।"

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि ग़मीउद्दुआ परमेश्वर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ को स्वीकार करते हुए चालीस हज़ार मूलधातुएँ नहीं सिखाईं, तो फिर यह ज्ञान उन्हें किसने सिखाया? और फिर किस प्रकार आपने अरबी भाषा में ऐसी क्रांतिकारी और विलक्षण पुस्तकें एवं क़सीदे लिखे?

आपने स्वयं सत्य कहा:

"क़ुदरत से अपनी ज़ात का देता है हक़ सुबूत,
इस बे-निशाँ की चेहरा-नुमाई यही तो है।"

श्रोतागण! इस घटना से यह सिद्ध होता है कि जमाअत-ए-अहमदिया जो क़ुरआन-ए-करीम और हमारे मुखिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार ख़ुदा तआला की पहचान, उसके अस्तित्व और उस तक पहुँचने के जो तरीके और सिद्धांत बताती है, वह हज़ारों अहमदियों के व्यक्तिगत अनुभवों से पूर्णतः प्रमाणित है कि वह मार्ग एकदम सत्य और यथार्थ है। उसी मार्ग को अपनाकर आज भी हर मनुष्य उस दुआ को स्वीकार करने वाले ख़ुदा तआला के समक्ष प्रार्थनाएँ करके उसके अस्तित्व को पहचान सकता है और अपने ईमान को सुदृढ़ कर सकता है।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल राजेकी साहिब एक घटना वर्णन करते हैं कि:

हज़रत मौलाना साहिब क़ादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाकात करने के बाद अपने गाँव लौट रहे थे। जब आप दरिया चिनाब को नाव के द्वारा पार करने के लिए किनारे पहुँचे तो मल्लाह ने धूलभरे मौसम को देखते हुए नाव चलाने से इनकार कर दिया। लेकिन एक बारात के लोगों के बहुत आग्रह पर वह नाव चलाने पर तैयार हो गया। हज़रत मौलाना साहिब भी उनके साथ नाव में सवार हो गए। जब नाव दरिया के बीच पहुँची और सूरज डूबने ही वाला था, तभी अचानक आँधी शुरू हो गई, जिस पर मल्लाह ने कहा, "अब आपको ख़ुदा के सिवा कोई नहीं बचा सकता।" दरिया उफान पर था। जब नाव में सवार सभी यात्रियों ने मायूसी का आलम देखा तो वे सब अचानक ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे "पीर बुख़ारी!",

"ख़्वाजा ख़िज़्र!", "पीर जिलानी!" मगर स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया।

हज़रत मौलाना साहिब वर्णन करते हैं कि जब उन्होंने इन लोगों की चीख़-पुकार देखी, तो उन्होंने भी उसी समय प्रार्थना करना शुरू कर दी। उनके पास हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ किताबें थीं, इसलिए उन्होंने ख़ुदा तआला के समक्ष उन किताबों का वास्ता देते हुए इस प्रकार प्रार्थना की:"हे मेरे प्रभु! यदि हम सब लोग वास्तव में इस योग्य हैं कि हमें दरिया में डुबो दिया जाए, और हमारा कोई ऐसा कर्म नहीं जो हमारी मुक्ति का कारण बन सके, तो फिर तू अपने पवित्र और प्रिय मसीह की उन पुस्तकों के सदके में, जिन्हें उन्होंने लोगों की हिदायत और उद्धार के लिए प्रकाशित किया है – इस आँधी को रोक दे और हमें सकुशल किनारे पर पहुँचा दे।"

हज़रत मौलाना साहिब कहते हैं कि उन्होंने यह दुआ के शब्द केवल एक-दो बार ही दोहराए थे कि अचानक आँधी थम गई और वे सभी लोग सलामती के साथ किनारे तक पहुँच गए।

(हयात-ए-क़ुद्सी, पृष्ठ 34)

इस घटना से यह स्पष्ट है कि आज के युग में भी ख़ुदा तआला का अस्तित्व मौजूद है और वह प्रार्थनाओं की स्वीकृति के माध्यम से पहचाना जाता है – जिसे कोई भी भाग्यशाली सत्यप्रेमी व्यक्ति नकार नहीं सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक अल्-वसीयत में नबुव्वत को "क़ुदरत-ए-ऊला" (प्रथम शक्ति) और ख़िलाफ़त को "क़ुदरत-ए-सानिया" (द्वितीय शक्ति) कहा है। अर्थात् ख़ुदा तआला अपने अस्तित्व का प्रमाण प्रथम शक्ति (नबी के ज़माने में) के माध्यम से भी देता है और द्वितीय शक्ति (ख़िलाफ़त के युग में) के माध्यम से भी। इसी प्रकार आज के युग में क़ुदरत-ए-सानिया के प्रतिरूप हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ईमानवर्द्धक अनुभवों से यह प्रमाणित होता है कि ख़ुदा तआला उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर विश्व को अपने अस्तित्व का प्रमाण प्रदान करता है।

श्रीमान अब्दुल माजिद ताहिर साहिब (एडिशनल वकील-उत्तबशीर, लंदन) वर्णन करते हैं:

मई 2006, गुरुवार का दिन था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने फार ईस्ट देशों के दौरे पर थे और उस समय फिजी

के "नादी" क्षेत्र में ठहरे हुए थे। रात क़रीब ढाई-तीन बजे से रब्वा, लंदन और दुनिया के विभिन्न देशों से लगातार फोन आने लगे कि टीवी पर समाचार आ रहे हैं कि टोंगा (Tonga) द्वीप पर एक भयंकर सूनामी आई है। और यह सूनामी शक्ति के दृष्टिकोण से इंडोनेशिया वाले सूनामी से भी अधिक विनाशकारी है जिसने लाखों लोगों को डुबो दिया था और कई देशों में भारी तबाही मचाई थी।

जब टीवी खोला गया तो यह रिपोर्टें आ रही थीं कि यह सूनामी लगातार अपनी तीव्रता में बढ़ रही है और सुबह होते-होते नादी (फिजी) का पूरा क्षेत्र जलमग्न हो जाएगा और इसके आसपास के द्वीप भी नष्ट हो जाएँगे। ऑस्ट्रेलिया का एक भाग भी डूब जाएगा और यहाँ तक कि न्यूज़ीलैंड का एक बड़ा हिस्सा भी इसकी चपेट में आ जाएगा।

सुबह साढ़े चार बजे जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के लिए तशरीफ़ लाए तो इस सूनामी की रिपोर्ट और दुनियाभर से आए संदेशों को उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया। फ़ज्र की नमाज़ के बाद आपने लंबे सजदे किए और प्रभु की दरगाह में गिड़गिड़ाकर प्रार्थनाएँ कीं। फिर नमाज़ से फ़ारिग होकर जब आप लोगों से मुख़ातिब हुए तो फ़रमाया:

"चिंता मत करें। अल्लाह तआला फ़ज़्ल करेगा। कुछ नहीं होगा।"

इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल वापस पधारे।

लौटने के बाद जब हमने टीवी ऑन किया तो टीवी पर यह ख़बरें आनी शुरू हो गईं कि उस सूनामी की तीव्रता अब टूट रही है और धीरे-धीरे उसकी शक्ति समाप्त हो रही है। फिर लगभग ढाई घंटे बाद यह समाचार आया कि उस सूनामी का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है।

इस प्रकार उस दिन दुनिया ने यह अजीब दृश्य देखा कि वह सूनामी जो कुछ ही घंटों में लाखों लोगों को डुबो कर पूरे क्षेत्र को मानचित्र से मिटा देने वाली थी, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की प्रार्थना के प्रभाव से कुछ ही घंटों में स्वयं अपना अस्तित्व खो बैठी। उस दिन फ़िज़ी के समाचार पत्रों ने यह खबरें छापीं कि उस सूनामी का टल जाना किसी चमत्कार से कम नहीं था।

श्रीमान अब्दुल माजिद ताहिर साहिब कहते हैं: "मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ और मैं स्वयं इस बात का गवाह हूँ कि यह चमत्कार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की प्रार्थना के परिणामस्वरूप प्रकट हुआ।"

(अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, दिनांक 21 नवम्बर 2014, पृष्ठ 16-15)

श्रोतागण! खलीफ़ा-ए-वक़्त की प्रार्थनाएँ और उनके द्वारा प्रदत्त तबर्रुक (पवित्र वस्तुएँ) बहुतों के लिए उपचार का कारण बनी हैं, जिनके माध्यम से अल्लाह तआला अपने अस्तित्व और दुआ को सुनने वाला होने का प्रमाण दिखाता है।

हज़रत मसीह मौऊद के सुपुत्र और ख़लीफ़ा सानी, हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक बार कैसर (रोम का राजा) को सिर में बहुत तीव्र दर्द हुआ, और हर प्रकार के इलाज के बावजूद उसे राहत नहीं मिली। किसी ने उसे सुझाव दिया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी स्थिति लिखकर भेजो और उनसे किसी तबर्रुक (पवित्र वस्तु) की याचना करो। वे तुम्हारे लिए दुआ भी करेंगे और कोई तबर्रुक भी भेजेंगे। उनकी दुआ से तुम्हें अवश्य शिफा मिलेगी।

कैसर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास अपना दूत भेजा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा कि ये लोग घमंडी हैं, मेरे पास कहाँ आने वाले थे? अब जब यह संकट में पड़ा है तो उसने दूत भेजा है। यदि मैं उसे कोई सुंदर तबर्रुक भेजूंगा, तो संभव है कि वह उसे तुच्छ समझे और उपयोग न करे। इसलिए मुझे कुछ ऐसा भेजना चाहिए जो तबर्रुक भी हो और उसके अहंकार को भी तोड़ दे।

इसलिए उन्होंने अपनी एक पुरानी टोपी, जो जगह-जगह से दागदार और मैल के कारण काली हो चुकी थी, उसे तबर्रुक के रूप में भेज दिया। जब कैसर ने वह टोपी देखी, तो उसे बहुत बुरा लगा और उसने टोपी नहीं पहनी। लेकिन अल्लाह तआला यह दिखाना चाहता था कि अब तुम्हें बरकत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।

उसे सिर में इतना भयंकर दर्द हुआ कि उसने अपने सेवकों से कहा, "वही टोपी लाओ जो उमर ने भेजी थी, ताकि मैं उसे सिर पर रख सकूँ।"

जब उसने वह टोपी पहनी, तो उसका दर्द चला गया। क्योंकि उसे हर आठवें-दसवें दिन सिर में दर्द हो जाता था, इसलिए अब उसकी यह आदत बन गई कि वह जब भी दरबार में बैठता, तो वही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की पुरानी टोपी उसके सिर पर होती।

(स्रोत: सैर-ए-रूहानी, पृष्ठ 326)

दुआ और तबर्रुक से शिफा पाने वाले चमत्कार आज के ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के युग में भी घटित हो रहेहैं। समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए उनमें से एक घटना यहाँ प्रस्तुत है:

अल्जीरिया देश से संबंधित एक नव-अहमदी महिला नाज़िया काज़मी साहिबा ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात में अपनी माँ के कैंसर से मुक्ति के लिए दुआ की दरख़्वास्त की। इस पर हज़रत अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला शिफा देगा और फ़ज़्ल करेगा।"

साथ ही आपने एक अंगूठी जिस पर लिखा था: "अलैसल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहू" (क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं?) उन्हें दी, जिसे उनकी माँ ने पहन लिया।

कुछ समय बाद जब उनकी माँ जाँच के लिए गईं, तो डॉक्टरों ने बताया कि अब उन्हें किसी प्रकार की जांच या कीमोथेरेपी की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनकी सेहत अब कैंसर से पहले वाली अवस्था से भी बेहतर है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इस दुआ की क़बूलियत ने पूरे परिवार के दिलों को बदल दिया, और इस निशानी को देखकर 36 व्यक्तियों का यह परिवार बाइअत कर जमाअत में शामिल हो गया।

(अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, दिनांक 21 नवम्बर 2014, पृष्ठ 14)

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"सच तो यह है कि हमारा ख़ुदा तो दुआओं से पहचाना जाता है... बोलने वाला ख़ुदा एक ही है – जो इस्लाम का ख़ुदा है। जिसे क़ुरआन करीम ने पेश किया है। जिसने कहा है: 'उद्अूनी अस्तजिब लकम' तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार का उत्तर दूँगा। यह बिल्कुल सत्य बात है कि यदि कोई व्यक्ति सत्यनिष्ठ नीयत से खुदा तआला पर विश्वास करे, संघर्ष करे और प्रार्थनाओं में लगा रहे, तो अंततः उसकी दुआओं का उत्तर उसे अवश्य मिलेगा।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 201, संस्करण 1984)

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को संबोधित करते हुए फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा इस जमाअत को एक ऐसी क़ौम बनाना चाहता है, जिनके नमूनों से लोगों को ख़ुदा याद आ जाए।"

(मजमूआ इश्तेहारात, जिल्द 3, पृष्ठ 504, संस्करण 1989)

अंत में प्रार्थना है कि अल्लाह तआला हम में से हर एक को उस क़ौम में शामिल कर दे जिनके आदर्शों को देखकर लोगों को ख़ुदा याद आए।

आमीन, अल्लाहुम्मा आमीन।

व अख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

"इस्लामी शिष्टाचार और नैतिकताएँ"
(खाने पीने, सफ़ाई रास्तों के अधिकार, आँखों को नीचा रखने के बारे में निर्देश, सभा एवं मस्जिद के शिष्टाचार)

(मौलाना अता-उल मुजीब लोन साहिब, सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत भाषण जलसा सालाना कादियान 2024)

इमाम-ए-दौरां हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

الطریقۃ کلھا ادب "अत्तरीक़तु कुल्लुहा अदब"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 640, संस्करण 1988)

अर्थात्, सम्पूर्ण आध्यात्मिकता की नींव ही शिष्टाचार (अदब) पर आधारित है। आत्मिक प्रगति के लिए यह अनिवार्य है कि हम इस्लाम द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी शिष्टाचारों को सदैव ध्यान में रखें। यही वह कुंजी है जिसके माध्यम से हम उत्तम नैतिक गुणों की ओर कदम बढ़ा सकते हैं, और फिर धीरे-धीरे उच्च आध्यात्मिक अवस्थाओं की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन करीम वे सभी शिष्टाचार सिखाता है जिनका जानना मनुष्य के लिए इंसान बनने के लिए अत्यंत आवश्यक है, और वह हर प्रकार के भ्रष्टाचार का उसी तीव्रता से प्रतिरोध करता है जिस तीव्रता से वह आजकल फैल रहा है। इसकी शिक्षाएँ अत्यंत सीधी, सशक्त और संतुलित हैं। यह ख़ुदा तआला आदेशों का एक दर्पण प्रतीत होती हैं और प्रकृति के नियमों की एक प्रतिबिंबित छवि हैं।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग 2, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 82)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" में इस्लाह (सुधार) के तीन तरीकों का उल्लेख किया है। उनमें से पहला तरीक़ा यह बताया गया है कि "अशिष्ट और जंगली लोगों को कम से कम उस आधारभूत नैतिक स्तर पर लाया जाए कि वे खान-पान, विवाह और अन्य सामाजिक मामलों में मानवता के तरीक़ों पर चल सकें। नंगे न घूमें, न ही कुत्तों की भाँति सड़ा-गला खाएँ और न ही कोई अन्य अशोभनीय व्यवहार करें। यह प्राकृतिक अवस्थाओं के सुधार में सबसे निम्न स्तर का सुधार है। यह ऐसा सुधार है कि यदि, उदाहरणस्वरूप, पोर्ट ब्लेयर के किसी जंगली व्यक्ति को मानवता की बुनियादी आवश्यकताएँ सिखाई जाएँ, तो सर्वप्रथम उसे मानवीय नैतिकताओं और शिष्टाचार के तरीक़े सिखाए जाएँगे।" (इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी)

सम्मानीय श्रोताओं!

हमारे प्यारे आका, सैयदना हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा ख़ातिमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस महान क्रांति की बुनियाद अरब के निर्जन प्रदेश में रखी, वह मानवता के शिष्टाचार और नैतिकताओं को सिखाने के ज़रिए ही रखी। इस संदर्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वास्तव में यह पूर्ण सुधार केवल आप ही के माध्यम से विशेष रूप से हुआ कि आपने एक ऐसी जाति को, जो स्वभाव से जंगली और पशुवत प्रवृत्ति की थी, उन्हें मानव आदतें सिखाईं। या यूँ कहें कि पशुओं को इंसान बनाया, और फिर इंसानों को शिक्षित इंसान बनाया, और फिर उन शिक्षित इंसानों को ख़ुदा तआलाप्राप्त, भक्त आत्माएँ बनाया। उनमें आत्मिक चेतना फूँकी और उन्हें सच्चे ख़ुदा तआला से जोड़ दिया।"

(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 206-207)

हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस युग में इस संसार में भेजे गए, उस समय मानवता की दशा कैसी थी, इसका वर्णन स्वयं परमेश्वर ने इस प्रकार किया :

ظھر الفساد فی البر و البحر

"ज़हर अल्-फ़सादु फ़िल-ब़र्री वल-बहर" (अर-रूम : 42)

अर्थात् नैतिक, आध्यात्मिक तथा मानवीय शिष्टाचारों हर दृष्टिकोण से मनुष्य की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। सर्वत्र भ्रष्टाचार ही व्याप्त था और मनुष्य की स्थिति एक मृत व्यक्ति जैसी हो चुकी थी। ऐसे समय में हज़रत रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भेजे जाने का उद्देश्य स्वयं ख़ुदा तआला ने यूँ वर्णन किया :

اِعلموا انّ اللہ یُحی الارض بعد موتھا

"इअल्मू अन्नल्लाह युह्यिल-अर्ज़ा बअदा मौतिहा" (अल्-हदीद : 18)

अर्थात् जान लो कि अब अल्लाह तआला मृतप्राय धरती को पुनः जीवित करने जा रहा है।

अतः हज़रत रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे समय में भेजे गए जब अरब की क़ौम मानवीय शिष्टाचारों से पूर्णतः अनभिज्ञ थी। इसी कारण अल्लाह तआला ने उनके बारे में यह फ़रमाया :

اولئک کالانعام بل ھم اضل

"उलाएक कल-अनआम बल हम अज़ल्लु" (अल्-अराफ़ : 180)

अर्थात् वे पशुओं के समान, बल्कि उनसे भी अधिक गुमराह थे।

यही वह अवस्था थी जहाँ से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें उठा कर इस मुक़ाम तक पहुँचा दिया कि उन्होंने न केवल मानवीय शिष्टाचार सीखे, बल्कि उन्होंने नैतिकता के भी सर्वोच्च मानदंड प्राप्त किए और फिर आध्यात्मिकता के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ हुए यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनके बारे में यह ऐलान किया :

"रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु"

अर्थात् अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो गया और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए।

हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें उठने-बैठने और चलने-फिरने के संस्कार सिखाए, खाने-पीने और दावतों के संस्कार, मिलने-जुलने के नियम, बड़ों और वृद्धों का सम्मान, बातचीत और संवाद के शिष्टाचार, सोने-जागने के संस्कार, वस्त्र पहनने के नियम, स्वच्छता के आदर्श, विवाह और निकाह के शिष्टाचार, संबंधों के अधिकार और कर्तव्य, पड़ोस के संबंधों के नियम, व्यापार और दैनिक कार्यकलापों के तौर-तरीके, खरीद-फरोख्त के नियम, यात्रा के शिष्टाचार, मेल-मिलाप और भेंट करने की विधियाँ, किसी के घर जाने के नियम, घर से बाहर निकलने और लौटकर आने के नियम, बीमार की सेवा के संस्कार, शोक-संवेदना प्रकट करने की विधियाँ, अंतिम संस्कार से संबंधित नियम, सभाओं के शिष्टाचार, मस्जिदों के आदर्श, इबादत और दुआ के शिष्टाचार संक्षेप में कहें तो हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बात उन्हें सिखाई। यहाँ तक कि शौचालय के भी शिष्टाचार सिखाए गए। फिर उन्होंने इन शिष्टाचारों और नैतिक आदर्शों को ऐसे ढंग से आत्मसात किया कि समस्त मानवता के लिए अनुकरणीय बन गए। और रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह प्रमाणपत्र दिया कि:

"मेरे सहाबी सितारों की भाँति हैं, तुम उनमें से जिस किसी का भी अनुसरण करोगे, मार्गदर्शन पाओगे।"हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अवस्था का कितना सुंदर चित्रण किया है:

صادفتھم قوما کروث ذلۃً فجعلتھم کسبیکۃ العقیان

अर्थात: तूने उन्हें गोबर के समान नीच अवस्था में पाया और फिर उन्हें स्वर्ण की ईंट के समान बना दिया।

आइए अब संक्षिप्त रूप से उन शिष्टाचारों का अवलोकन करें जिन्हें इस्लाम और इसके प्रवर्तक ने हमें सिखाया है।

खाने-पीने के शिष्टाचार:

सबसे पहले भोजन के शिष्टाचार की बात करते हैं। भोजन मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है। यह न केवल शरीर की वृद्धि और पोषण का साधन है, बल्कि यह मनुष्य के चरित्र और नैतिकता पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इस सत्य को दृष्टिगत रखते हुए, इस्लामी शिष्टाचार में न केवल यह बात सम्मिलित है कि किस प्रकार भोजन करना चाहिए, बल्कि यह भी बताया गया है कि क्या भोजन करना चाहिए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"कुलू मिं त़य्यिबाति मा रज़क़नाकुम" (البقرہ: 173)

अर्थात: "हमने जो तुम्हें प्रदान किया है उसमें से पवित्र वस्तुएँ खाओ।"

फिर फ़रमाया:

"कुलू मिम्मा फ़िल-अर्ज़ हिलालं त़य्यिबन" (البقرہ: 169)

अर्थात: "ऐ लोगो! जो कुछ भी पृथ्वी में है उसमें से वैध और पवित्र खाओ।"

हालाँकि अल्लाह ने हलाल और हराम की विशिष्टताओं को स्पष्ट कर दिया है, फिर भी इन आदेशों में बार-बार पवित्र (त़य्यिब) वस्तुओं के सेवन पर बल दिया गया है। पवित्र वस्तुओं में हर वह हलाल वस्तु सम्मिलित है जो न केवल शरीर की वृद्धि में सहायक हो, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का भी माध्यम बने। अतः यह

एक मौलिक सिद्धांत है जो यह मार्गदर्शन करता है कि हमें क्या खाना चाहिए।

फिर भोजन से पूर्व हाथ धोना, स्वच्छ बर्तन में भोजन करना, अल्लाह का नाम लेकर "बिस्मिल्लाह अल्ा बरकति-ल्लाह" कहकर आरंभ करना, और भोजन समाप्त होने पर "अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अतअ'मना व स़क़ाना व जअल्ना मिनल-मुस्लिमीन" पढ़ना तथा बाद में कुल्ला करना और हाथ व बर्तन साफ करना ये ऐसे नियम हैं जिन्हें हममें से हर कोई जानता है और उन पर अमल भी करता है। स्वास्थ्य-रक्षा के दृष्टिकोण से ये ऐसे सिद्धांत हैं जिनके लिए किसी प्रकार के प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

कोई भी खाद्य या पेय वस्तु दाएँ हाथ से ग्रहण करना भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। इस विषय में हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विशेष निर्देश भी मौजूद है। कुछ लोग यह कहते हैं कि जब दोनों हाथ अल्लाह ने दिए हैं तो किसी भी हाथ से खा लेने में क्या बुराई है। ऐसे लोगों को विचार करना चाहिए कि जो हाथ शौचालय में गंदगी साफ करने के लिए प्रयोग किया जाता है, क्या उसी हाथ से भोजन करना मानव स्वभाव को स्वीकार्य है? हाँ, दाएँ हाथ की सहायता के लिए बाएँ हाथ की कोई भागीदारी हो तो उसमें कोई अपमानजनक बात नहीं।

अल्लाह द्वारा प्रदत्त आजीविका का सम्मान और कद्र करना भी हम पर अनिवार्य है। कुछ लोग लेटे हुए या तकिए का सहारा लेकर भोजन करते हैं। रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तकिए के सहारे भोजन करने से मना किया है (बुख़ारी किताबुल अतइमा), क्योंकि यह एक घमंडी स्वभाव को दर्शाने वाला ढंग है और यह अल्लाह के दिए हुए आजीविका की अवमानना के समतुल्य है।

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे पेट भरकर इतना अधिक भोजन कर लेते हैं कि डकार लेने लगते हैं। इस संदर्भ में ध्यान में रखना चाहिए कि एक सच्चे मोमिन की विशेषता यह होती है कि वह संयमित भोजन करता है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आहार अत्यंत सादा और अल्प मात्रा में होता था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अक्सर फ़रमाते थे कि दो व्यक्तियों का भोजन तीन के लिए और तीन का चार के लिए पर्याप्त होता है।

(मुस्लिम, किताबुल अशरिबा)

कुछ क्षेत्रों में लोग विवाह-शादी के अवसर पर, दावतों और वलीमों में आवश्यकता से कहीं अधिक खर्च करते हैं। यहाँ तक कि कभी-कभी निर्धन लोग इस फ़िज़ूलखर्ची में फँसकर आर्थिक संकटों का शिकार हो जाते हैं। इस्लाम ने हमें यह तरीका बिल्कुल नहीं सिखाया है। बल्कि यह शिक्षा दी है कि आवश्यकता अनुसार खाओ और पियो और फ़िज़ूलखर्ची से पूर्णतः बचो। इस संबंध में यह बुनियादी और अत्यंत महत्वपूर्ण आदेश है:

"कुलू व अश्रबू व ला तुसरिफ़ू" खाओ, पियो, परंतु फ़िज़ूलखर्ची न करो।

(सूरतुल आराफ़: 32)

दावतों के शिष्टाचार में एक अनिवार्य तत्व यह भी है कि जब धनाढ्य व्यक्ति दावत दे, तो केवल अमीरों को न बुलाए बल्कि ग़रीबों को भी उसमें सम्मिलित करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि सबसे बुरी दावत वह होती है जिसमें केवल अमीरों को आमंत्रित किया जाए और ग़रीबों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए। (बुख़ारी, किताबुन निकाह)

इसी प्रकार यदि कोई निर्धन व्यक्ति किसी धनवान को भोजन पर आमंत्रित करे, तो उस पर अनिवार्य है कि वह उस आमंत्रण को स्वीकार करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:"लो दू'ईतु इला किरा'इन ल-अजबतु" यदि कोई मुझे बकरी के खुर पर भी आमंत्रित करे, तो मैं अवश्य उस दावत में सम्मिलित होऊँगा।

(शमाइल तिरमिज़ी, बाब मा जा' फ़ी तवाज़ु' रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

दावतों में भोजन आवश्यकता अनुसार ही लेना चाहिए ताकि उसका अपव्यय न हो। सालाना जलसे के अवसर पर हम हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलामके लंगर से तैयार की गई दावतों से लाभान्वित होते हैं। ऐसे अवसरों पर भी हमें भोजन के इन शिष्टाचारों को भलीभाँति स्मरण रखना चाहिए। भोजन की लालसा प्रदर्शित करने की बजाय, केवल भूख मिटाने की सीमा तक खाना चाहिए। भोजन बर्बाद करने से परहेज़ करना चाहिए, भोजन के बर्तनों, स्थान और आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ और साफ़-सुथरा रखना चाहिए। यही वे इस्लामी आदर्श हैं जो खाने-पीने से संबंधित हैं।पेयजल या अन्य पेय पदार्थों के प्रयोग में यह बात भी सम्मिलित है कि पीने वाला पात्र दाएँ हाथ से पकड़ा जाए। अनावश्यक रूप से खड़े होकर पानी न पिया जाए। एक अवसर पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऊँट की भाँति एक ही साँस में न पियो, बल्कि दो या तीन साँसों में पीओ।(तिरमिज़ी, अबवाबुल अशरिबा)इसी प्रकार आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह भी मना फ़रमाया कि पीते समय पात्र के भीतर साँस न ली जाए।(मुस्लिम, किताबुल अशरिबा)यह भी उल्लेखनीय है कि पानी के उपयोग के शिष्टाचारों में यह बात अत्यंत आवश्यक है कि पानी को व्यर्थ न किया जाए। आजकल जल संकट की समस्या विश्वभर में उत्पन्न हो रही है, जल की कमी हो रही है, लोग चिंतित हैं। किन्तु हमारे प्यारे आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज से पंद्रह सौ वर्ष पूर्व ही हमें पानी की बर्बादी से बचने की शिक्षा दी थी। एक बार आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक सहाबी को वुज़ू करते हुए आवश्यकता से अधिक जल का प्रयोग करते देखा तो उन्हें समझाया:"पानी बर्बाद मत करो, चाहे बहते हुए दरिया के किनारे पर ही क्यों न हो।"(मुस्नद अहमद बिन हंबल)यह विचारणीय बात है कि जहाँ पानी की कोई कमी नहीं होती एक बहते हुए दरिया के किनारे वहाँ भी पानी की बचत की शिक्षा दी जा रही है, तो अपने घरों और अन्य स्थानों पर हमें कितनी अधिक सावधानी बरतनी चाहिए।फिर आते हैं स्वच्छता के शिष्टाचार पर। कौन इस बात से इनकार कर सकता है कि स्वच्छता और सफ़ाई की देखभाल आवश्यक नहीं है? अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:"इन्नल्लाहा युहिब्बुत-तव्वाबीन व युहिब्बुल मुत-तह्हिरीन"(सूरतुल बक़रा, आयत 223)अर्थात: निस्संदेह अल्लाह तआला तौबा करने वालों से प्रेम करता है और उन लोगों से भी जो बाह्य रूप से स्वच्छता अपनाते हैं।अहमदिया जमाअत के संस्थापक, सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:"इस आयत से केवल यह नहीं सिद्ध होता कि अल्लाह तआला तौबा करने वालों को अपना प्रिय बना लेता है, बल्कि यह भी ज्ञात होता है कि सच्ची तौबा के साथ-साथ सच्ची पवित्रता और पाकीज़गी भी अनिवार्य है। हर प्रकार की गंदगी और अशुद्धता से अलग रहना ज़रूरी है।"

(अल्-हकम, 17 सितम्बर 1904, जिल्द 8, नंबर 31; सन्दर्भ: तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 1, पृष्ठ 705)

इस्लाम इस बात पर विशेष बल देता है कि यदि तुम आंतरिक अर्थात आत्मिक शुद्धता प्राप्त करना चाहते हो, तो उसके लिए बाहरी स्वच्छता और पवित्रता अनिवार्य है। बाहरी स्वच्छता के बिना आत्मिक शुद्धता और आध्यात्मिक पवित्रता संभव नहीं हो सकती।इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वच्छता को ईमान का एक आवश्यक भाग बताया है। आपने फ़रमाया: "अत-तहूरु शत्रुल ईमान" अर्थात् स्वच्छता ईमान का आधा हिस्सा है।(मुस्लिम, किताबुत-तहारा)फिर अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में आदेश दिया:"व स़ियाबका फ़तह्हिर, व रुज्झा फ़ह्जुर" अर्थात अपने वस्त्रों को स्वच्छ रखो; अपने शरीर, घर, मोहल्ला और हर उस स्थान को जहाँ तुम निवास करते हो, गंदगी, मैल और अपवित्रता से बचाओ।(सूरतुल मुद्दस्सिर: 5-6)(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी)एक बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को देखा जिसकी सिर और दाढ़ी के बाल अस्त-व्यस्त थे। आपने फ़रमाया: अपने सिर और दाढ़ी के बालों को ठीक करो। जब वह व्यक्ति अपने बालों को सँवारकर आया तो आपने फ़रमाया: क्या यह सुंदर रूप अधिक भला है या वह जिसमें बाल इतने अस्त-व्यस्त हों कि इंसान शैतान या भूत की तरह लगे।(मुवत्ता इमाम मालिक, बाब मा जा फ़ी ताआम वश-शराब व इस्लाहुश-शअर)इसी प्रकार इस्लाम में घरों, गलियों और सड़कों की सफाई का भी आदेश दिया गया है। एक हदीस में आता है कि यदि रास्ते में कोई काँटा, पत्थर या गंदी चीज़ होती, तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं उसे उठाकर एक ओर कर देते और फ़रमाते: जो व्यक्ति रास्तों की सफाई का ध्यान रखता है, अल्लाह तआला उस पर प्रसन्न होता है और उसे पुण्य प्रदान करता है।(मुस्लिम, किताबुल बिर्र व स़िल्ला)हज़रत अमीरुल मोमिनीन, खलीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:"तीसरी दुनिया के देशों में प्रायः यह देखने को मिलता है कि जहाँ घर का कूड़ा-कचरा उठाने का कोई व्यवस्थित प्रबंध नहीं है, वहाँ लोग घर से बाहर गंदगी फेंक देते हैं, जबकि पर्यावरण को साफ़ रखना उतना ही आवश्यक है जितना अपने घर को। यदि बाहर गंदगी फैलाई जाए, तो यह वातावरण को दूषित करने और बीमारियाँ फैलाने का कारण बनता है। इसलिए अहमदियों को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए और ऐसा प्रबंध करना चाहिए कि घर के बाहर कहीं गंदगी न दिखे।"(ख़ुत्बा जुमा, 23 अप्रैल 2004)दाँतों की सफाई के संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे: "यदि मुझे यह भय न होता कि यह मेरी उम्मत के लिए कठिन हो जाएगा, तो मैं उन्हें आदेश देता कि हर नमाज़ से पहले

मिसवाक करें।"(बुखारी, किताबुस-सलात, बाबुस-सिवाक यौमल-जुमुआ)इस विषय में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:"एक शोध यह कहती है कि जब इंसान सुबह उठता है तो उसके दाँतों पर 600 भिन्न-भिन्न प्रकार की जीवाणुओं की असंख्य प्रजातियाँ होती हैं। केवल प्रकार ही 600 हैं; संख्या का तो कोई अनुमान नहीं। लेकिन देखिए, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें 1500 वर्ष पहले ही यह हिदायत दी कि जब नींद से जागो तो सबसे पहले अपने दाँत साफ़ करो।"(ख़ुत्बा जुमा, 23 अप्रैल 2004)शारीरिक स्वच्छता के परिप्रेक्ष्य में ही भोजन से पूर्व और पश्चात हाथ धोने का आदेश है, भोजन के बाद कुल्ला करने का निर्देश है, मूँछें काटने, नाक साफ़ रखने, नाखून नियमित रूप से काटने, बगलों के बाल हटाने, इस्तिंजा करने, समय-समय पर ग़ुस्ल करने और प्रत्येक नमाज़ से पहले वुज़ू करने जैसे नियम दिये गये हैं। फिर यह भी निर्देश है कि मस्जिदों और सामाजिक सभाओं में बदबूदार चीज़ें खाकर न जाएँ। ये सभी आदेश स्वच्छता और स्वास्थ्य-सुरक्षा के सिद्धांतों के अनुकूल हैं और बाहरी पवित्रता के विविध शिष्टाचारों से संबंधित हैं।इस्लामी शिक्षाओं की यही सुंदरता है कि मानव की शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए जो भी बात आवश्यक है, उसे हर पहलू से पूर्ण रूप में स्पष्ट किया गया है।हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, स्वच्छता और शारीरिक पवित्रता के नियमों का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:"हमारी शारीरिक पवित्रता का हमारी आत्मिक पवित्रता से बहुत गहरा संबंध है, क्योंकि जब हम शारीरिक स्वच्छता की उपेक्षा कर उसके दुष्परिणाम, जैसे घातक रोगों का सामना करते हैं, तो उस समय हमारे धार्मिक कर्तव्यों में भी बाधा उत्पन्न हो जाती है। हम बीमार होकर इतने अक्षम हो जाते हैं कि कोई भी धार्मिक सेवा अदा नहीं कर सकते और कुछ दिनों की पीड़ा भोगकर इस संसार से विदा हो जाते हैं। बल्कि इसके बजाय कि हम मानवता की सेवा कर सकें, हम अपनी शारीरिक अशुद्धियों और स्वास्थ्य-नियमों की अवहेलना के कारण दूसरों के लिए भी संकट का कारण बन जाते हैं।"

(अय्यामुस्सुलह, पृष्ठ 95, 96। सन्दर्भ: तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग 4, पृष्ठ 496, 497

अब मैं मार्गों के अधिकारों और शिष्टाचारों का उल्लेख करता हूँ (नज़र नीची रखने के विषय में)। दो जहानों के आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें जहाँ एक ओर खुदा तआला तक पहुँचने का मार्ग दिखाया, वहीं दूसरी ओर सामान्यतः चलने-फिरने वाले मार्गों तथा उन पर स्थित बैठकों के उपयोग के शिष्टाचार भी सिखाए, ताकि एक मुसलमान के हाथ, उसकी ज़बान, यहाँ तक कि उसकी नज़र से भी किसी को कोई कष्ट या पीड़ा न पहुँचे। आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिना कारण रास्तों पर बैठने से मना फ़रमाया है। आपने कहा:"إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوسَ عَلَى الطُّرُقَاتِ" अर्थात "सावधान! मार्गों पर न बैठो।"

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:"आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रास्तों पर बैठने से बचो। जब सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम मजबूर हैं बैठने के लिए, क्योंकि उस समय न व्यापारिक स्थल होते थे, न कार्यालय जहाँ बैठकर व्यापारिक काम निपटाए जा सकें, इसलिए बाज़ारों और रास्तों में बैठकर ये काम किए जाते थे। इस पर आपने फ़रमाया कि फिर मार्गों के अधिकारों को अदा करो। जब अर्ज़ किया गया कि 'या रसूलल्लाह! मार्गों के अधिकार क्या हैं?' तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: नज़रों को नीचा रखा करो, किसी को कष्ट न पहुँचाओ, यह मार्ग का अधिकार है। सलाम का उत्तर दो, यह भी मार्ग का अधिकार है। भलाई की बात कहो और बुराई से रोको, यही मार्ग के अधिकार हैं।"(सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम वल ग़ज़ब, सन्दर्भ: ख़ुत्बा जुमा, 1 दिसम्बर 2017)तकलीफ़देह वस्तु को रास्ते से हटाने के संबंध में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने एक व्यक्ति को जन्नत में सैर करते देखा, उस कार्य के प्रतिफल में कि एक पेड़ मुसलमानों के रास्ते में तकलीफ़ पहुँचाता था, उसने उसकी कष्टकारी शाखा को काटकर अलग कर दिया।(सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब)फिर मार्गों के शिष्टाचारों में से यह भी है कि यदि किसी मजबूरी के कारण रास्ते में खड़े रहना भी पड़े तो नज़रों को नीचा रखा जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:"قُلْ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ" अर्थात "हे नबी! तुम मोमिनों से कह दो कि वे अपनी नज़रों को नीचा रखें।"(सूरह नूर : 31) इसी प्रकार स्त्रियों को भी रास्तों से गुज़रते समय अपनी शोभा को प्रकट न करने और नज़रों को नीचा रखने का आदेश है। फ़रमाया:"وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ" अर्थात "हे नबी! मोमिन स्त्रियों से कह दो कि वे भी अपनी नज़रों को नीचा रखें, अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें और अपनी शोभा को प्रकट न करें।"(सूरह नूर : 32)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:"मोमिन को नहीं चाहिए कि वह बदज़बान हो या बिना रोक-टोक अपनी आँखें इधर-उधर घुमाता फिरे, बल्कि "يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ" (नूर : 31) पर अमल करते हुए नज़र को नीचा रखना चाहिए और बुरी नज़रों के साधनों से बचना चाहिए।"(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 53, प्रकाशित रब्वा)मार्ग में आने-जाने वालों को एक-दूसरे को सलाम करके दुआ देने का भी आदेश है। हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम को प्रचलन में लाने की शिक्षा दी है। आपने फ़रमाया:"أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ", अर्थात अपने बीच सलाम को आम करो। स्वयं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान सभी को सलाम कहा करते थे। एक हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसी सभा के पास से गुज़रे जिसमें मुसलमान, मुश्रिक, मूर्तिपूजक और यहूदी सभी मिश्रित रूप से बैठे थे आपने उन सबको सलाम कहा।(सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तीधान)वार्ता के शिष्टाचार:आपसी बातचीत और वार्तालाप के भी इस्लाम ने शिष्टाचार बताए हैं। ज़बान वह अंग है जिससे मनुष्य जन्नत या जहन्नम की ओर मार्ग तय करता है।क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:"مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ" अर्थात "मनुष्य कोई भी बात नहीं कहता, परंतु उसके पास एक निगरानी करने वाला सदा मौजूद रहता है।"(सूरह क़ाफ़ : 19)रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को यह भी फ़रमाया करते थे कि जहन्नम की आग में उल्टा गिराए जाने का मुख्य कारण मनुष्यों की ज़बानों के फल होंगे।(तिर्मिज़ी, अबवाबुल ईमान)आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सिद्धांत भी वर्णन फ़रमाया है:"الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ" अर्थात "सच्चा मुसलमान वह है जिससे अन्य मुसलमान उसकी ज़बान और हाथ से सुरक्षित रहें।"

(सहीह बुख़ारी, हदीस 6484)

अल्लाह तआला ने हमे बातचीत और वाणी के शिष्टाचार में सबसे मूलभूत बात यह सिखाई है कि **قولوا قولا سديدا** अर्थात्, सच्ची और सीधी बात कहा करो। इसका परिणाम यह होगा कि वह तुम्हारे कर्मों को सुधार देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा। (सूरह अल्-अहज़ाब: 71, 72) फिर यह भी कहा गया कि **وقولوا للناس حسنا** अर्थात्, लोगों से स्नेहपूर्ण और मधुरता से बात किया करो। (अल्-बक़रह: 84) इसी प्रकार, अल्लाह ने **قولا لينا** अर्थात्, कोमल वाणी से बात करने का भी आदेश दिया है। (ताहा: 45)क़ुरआन-ए-करीम में मोमिनों की विशेषता यह भी बताई गई है कि **كاظمين الغيظ** अर्थात् वे लोग जो अपने क्रोध को पी जाते हैं और कोमलता और स्नेह से बात करते हैं। इस संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह पवित्र कथन है कि असली पहलवान वह नहीं जो दूसरों को पछाड़ दे, बल्कि वह है जो क्रोध के समय अपने आप को नियंत्रण में रखे। (बुख़ारी, किताबुल-अदब)वाणी, नैतिकता के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसीलिए, एक मुसलमान के लिए यह आवश्यक है कि वह बातचीत के शिष्टाचार का ध्यान रखे। उसकी वाणी कठोर न हो, वह दूसरों को बुरे नामों से न पुकारे, न गालियाँ देने वाला हो, न लानत-मलानत करने वाला हो, न चुगली करने वाला हो, न झूठा आरोप लगाने वाला हो, अपनी बातों से किसी का अपमान करके उसकी हँसी उड़ाने वाला न हो। वह व्यर्थ की बातों से बचे और उनसे दूर रहे। उसके कथनों में न तो चुगली हो, न दोष निकालने की प्रवृत्ति, न ही दूसरों के प्रति मन में बुराई रखने की भावना हो। वह किसी प्रकार का कटाक्ष या दिल दुखाने वाला मज़ाक न करे। उसकी वाणी सच्ची और स्पष्ट हो। वह हमेशा कोमल और नेक बातें करने वाला हो। उसकी वाणी लोगों के बीच दूरी पैदा करने वाली नहीं, बल्कि उन्हें जोड़ने वाली हो। जब ऐसा होगा, तो उसका नैतिक स्तर ऊँचा होगा और वह ऐसे चरित्र का आका बनेगा, जिसके फलस्वरूप वह आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होगा।इसके अतिरिक्त, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी सिखाया है कि आवश्यकता से अधिक बात नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कभी-कभी अधिक बोलने से विवाद और बुराइयाँ जन्म लेती हैं। कुछ लोग दावतों में या रास्तों पर खड़े होकर हँसी-मज़ाक और व्यर्थ बातों में इतने मग्न हो जाते हैं कि कई घंटे व्यर्थ कर देते हैं। इस संबंध में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह शिष्टाचार सिखाया है कि अल्लाह के स्मरण के बिना अधिक बातें मत किया करो।

उन्होंने फ़रमाया :"لَا تُكْثِرُوا الْكَلَامَ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللهِ فَتَقْسُوَ قُلُوبُكُمْ فَإِنَّ

"الْقَلْبُ الْقَاسِيْ بَعِيْدٌ مِّنَ اللهِ" अर्थात्: अल्लाह के स्मरण के बिना अधिक बात करने से दिल कठोर हो जाता है और कठोर दिल वाला व्यक्ति अल्लाह से सबसे अधिक दूर होता है। (तिर्मिज़ी, अबवाबुज़-ज़ुहद)शिष्टाचार के अंतर्गत यह भी आता है कि बड़ों के सामने ऊँची आवाज़ में बात नहीं करनी चाहिए। मोमिनों को यह शिष्टाचार सिखाते हुए, अल्लाह ने क़ुरआन में यह आदेश दिया है:"يا أيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبيّ" अर्थात्: हे मोमिनो! अपनी आवाज़ को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ से ऊँचा मत करो। (अल्-हुजुरात: 3) मजालिस (सभाओं) के शिष्टाचार की बात करें तो हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों को धरती पर भेजता है। जब वे पवित्र लोगों की सभा देखते हैं, तो वे वहाँ आकर बैठ जाते हैं और अपने पंखों से उस सभा को ढाँप लेते हैं। सारा वातावरण उनके आशीर्वादपूर्ण साये से भर जाता है। जब लोग उस सभा से उठ जाते हैं, तो फ़रिश्ते भी आकाश की ओर चले जाते हैं। वहाँ अल्लाह उनसे पूछता है कि तुमने क्या देखा। वे कहते हैं: हमने एक सभा देखी जिसमें लोग तेरी तस्बीह, प्रशंसा और स्मरण कर रहे थे। फिर यदि उन लोगों में कोई एक ऐसा था जो वास्तविक रूप से उनमें से नहीं था, तो अल्लाह कहता है: नहीं, वह भी उन्हीं में से था, क्योंकि "هُم قومٌ لا يشقىٰ بِهِم جَلِيسُهُم" अर्थात् वे ऐसे लोग हैं कि जो भी उनके साथ बैठता है, वह वंचित या अभागा नहीं रहता। (मुस्लिम, किताबुज़-ज़िक्र)

आदरणीय श्रोतागण! आप भी इस समय निश्चित रूप से ऐसी ही एक पवित्र सभा में उपस्थित हैं। इस सभा की बरकतों से भागी बनने के लिए यह अति आवश्यक है कि हम उन शिष्टाचारों को अपने मन में रखें जिन्हें इस्लाम ने हमें पूर्ण रूप से सिखाया है। आइए, हम क़ुरआन और हदीस में वर्णित उन शिष्टाचारों का पुनरावलोकन करें, ताकि इस महान सभा के प्रति सम्मान और मर्यादा का पूरा ध्यान रखा जा सके।

हे मोमिनों! जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में स्थान बना दो और खुले दिल से बैठो, तो खुले मन से बैठ जाया करो। अल्लाह भी तुम्हारे लिए विस्तार के साधन प्रदान करेगा। (अल्-मुजादिला: 12) फिर सभा में बैठे हुए लोगों को एक अन्य आदेश द्वारा यह शिष्टाचार भी सिखाया गया है कि "إِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا" अर्थात् जब तुमसे कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। (अल्-मुजादिला: 12) इस आदेश में यह बात भी निहित है कि जब तक सभा से उठने के लिए न कहा जाए, तब तक बिना कारण उठकर नहीं जाना चाहिए।इस जलसा सालाना में भी यह देखा गया है कि जब तक सदर-ए-इजलास सभा के समापन की घोषणा नहीं करते, लोग उससे पहले ही उठकर जाने लगते हैं। यह भी सभा के शिष्टाचार के विरुद्ध है। फिर जलसा सालाना की अंतिम सभा में, हमारे प्यारे आका, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, MTA के माध्यम से हमारे बीच मौजूद होते हैं। इस सभा के शिष्टाचार की मांग यह भी है कि जब तक हमारे प्यारे आका सिंहासन को सुशोभित कर रहे हों और तराने सुन रहे हों, तब तक हममें से कोई भी व्यक्ति खड़ा न हो, और इस मुबारक सभा की बेअदबी का दोषी न बने। अल्लाह हमें इससे सुरक्षित रखे। आमीन।सभा में कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो दूसरों को अप्रिय लगे। यदि छींक आए तो जहाँ तक संभव हो, आवाज़ को धीमा करना चाहिए। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह आदत थी कि जब आपको सभा में छींक आती, तो आप अपने हाथ या कपड़े से मुँह को ढँक लेते और जितना हो सके आवाज़ को दबा देते। (तिर्मिज़ी, किताबुल इस्तीइज़ान)सभाओं में तस्बीह, तहमीद, इस्तिग़फ़ार और दरूद शरीफ़ का पाठ करते रहना चाहिए। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार अपने सहाबा से कहा: ''ऐ लोगो! जन्नत के बागों में चरने की कोशिश करो।'' पूछा गया: ''जन्नत के बागों से क्या तात्पर्य है?'' आपने फ़रमाया: ''ज़िक्र की मजलिसें जन्नत के बाग हैं।'' अर्थात् वे सभाएँ जिनमें अल्लाह का स्मरण होता है, जन्नत के बागों के समान हैं। (हदीक़तुस-सालिहीन। बहवालह: क़ुशैरीया, बाबुज़-ज़िक्र)अब कुछ बात करते हैं मस्जिदों के शिष्टाचार की। मस्जिदें अल्लाह का घर होती हैं और वे उसके स्मरण और इबादत के लिए विशेष रूप से समर्पित स्थान हैं। वे अल्लाह से दुआ करने और गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने की जगहें हैं। ये अल्लाह के नूर और बरकतों की झलक पाने के स्थल हैं। मस्जिदें वास्तव में ख़ाना-ए-क़ाबा की परछाईं हैं। अतः मस्जिदों का आदर और सम्मान करना और उनके पवित्र स्वरूप का ध्यान रखना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। मस्जिदों को सदैव स्वच्छ और निर्मल रखना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "وَطَهِّرْ بَيْتِيَ" ''मेरे घर को स्वच्छ और पवित्र रखा करो।'' (अल्-हज: 27)फिर मस्जिद का एक शिष्टाचार यह भी है कि वहाँ पवित्रता के साथ, स्वच्छ वस्त्र पहनकर और वुज़ू करके जाना चाहिए। अल्लाह तआला ने आदेश दिया: "يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ" ''हे आदम की संतानो! हर मस्जिद के निकट जाते समय अपनी शोभा (साफ़-सुथरे कपड़े आदि) अपनाया करो।'' (अल्-अ'राफ़: 32)हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:"मस्जिदों के वातावरण को भी फूलों, क्यारियों और हरियाली से सुंदर बनाना चाहिए। इसके साथ ही मस्जिद के भीतर की सफ़ाई का भी विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए... विशेष रूप से पाकिस्तान और भारत में मस्जिदों के हॉल की सफ़ाई का बाकायदा प्रबंध हो।... क़तारें हटाकर सफ़ाई की जाए, वहाँ दीवारों पर जल्दी ही जाले लग जाते हैं, उन्हें हटाया जाए। पंखों आदि पर जो धूल जमती है, वह भी साफ होनी चाहिए। संक्षेप में, जब कोई व्यक्ति मस्जिद में प्रवेश करे तो उसे अत्यधिक सफ़ाई और पवित्रता का अहसास हो कि वह एक ऐसी जगह में आ गया है जो अन्य स्थानों से भिन्न और विशिष्ट है।"

(ख़ुत्बा जुमा, 23 अप्रैल 2004)

इसी प्रकार मस्जिद का शिष्टाचार यह भी है कि जब उसमें प्रवेश किया जाए तो पहले दायाँ पैर भीतर रखा जाए और प्रवेश की दुआ पढ़ी जाए, तथा ऊँची आवाज़ में "अस्सलामु अलैकुम" कहा जाए। और जब बाहर निकलना हो तो पहले बायाँ पैर बाहर रखा जाए और बाहर निकलने की दुआ पढ़ी जाए।मस्जिद में बैठकर इधर-उधर की व्यर्थ बातें करना, गपशप करना या मोबाइल का उपयोग करना अत्यंत अप्रिय और मस्जिद के शिष्टाचार तथा उसकी पवित्रता के विरुद्ध है, क्योंकि मस्जिदें इबादत के लिए बनाई गई हैं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:"إنما هي لذكر الله تعالى وقراءة القرآن" अर्थात्, मस्जिदें अल्लाह तआला के ज़िक्र और क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के लिए बनाई जाती हैं। (मुस्लिम, किताबुत-तहारह)

मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले का भी आदर किया जाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति नमाज़ में हो, तो उसके पास बैठे लोगों को ऊँची आवाज़ में बातचीत नहीं करनी चाहिए जिससे उसकी एकाग्रता और नमाज़ में विघ्न उत्पन्न हो।हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:"मस्जिदें अल्लाह के ज़िक्र के लिए हैं, लेकिन अल्लाह का ज़िक्र उन सभी बातों पर आधारित है जो इंसान की मिल्ली, राजनैतिक, वैज्ञानिक और राष्ट्रीय श्रेष्ठता व उन्नति के लिए हों। लेकिन वे सारी बातें जो झगड़े, लड़ाई, फसाद या क़ानून भंग करने से संबंधित हों चाहे तुम उनका नाम मिल्ली रख लो या राजनीतिक, राष्ट्रीय रख लो या धार्मिक उनका मस्जिद में करना वर्जित है। इसी प्रकार, मस्जिद में व्यक्तिगत मामलों की चर्चा करना भी निषिद्ध है, क्योंकि इस्लाम मस्जिद को 'बैतुल्लाह' कहता है और उसे केवल अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए विशिष्ट स्थान ठहराता है।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 29)

आदरणीय श्रोतागण !ख़ाकसार ने अत्यंत संक्षेप में कुछ शिष्टाचारों का वर्णन किया है। इन विषयों पर हमें क़ुरआन और हदीस में और भी विस्तार से शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। इन विवरणों को देखकर यह हैरानी होती है कि किस प्रकार अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें हर विषय की अत्यंत सूक्ष्म और गहन बातें सिखाई हैं। जीवन के ये शिष्टाचार संसार के अंत तक हम सबके लिए मार्गदर्शन का दीप हैं।हमें इस सत्य को भी समझना चाहिए कि यही शिष्टाचार वास्तव में एक सच्चे मोमिन का असली गहना और उसकी असली पहचान हैं। यह असंभव है कि किसी व्यक्ति में ईमान हो, किंतु वह इन जीवन-शिष्टाचारों से वंचित हो। यही जीवन के शिष्टाचार सच्चे और वास्तविक नैतिक गुणों के अर्जन का माध्यम हैं, और फिर उन्हीं उत्तम गुणों से सुसज्जित होने के बाद ही कोई व्यक्ति ईमान और तक़्वा की ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है।अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अन्य समुदायों की नकल करते हुए जीवन के इन शिष्टाचारों को न खो बैठें, क्योंकि इसका परिणाम यह होगा कि हम अच्छे आचरण और ईमान से भी वंचित हो जाएँगे। अतः हमें चाहिए कि इन शिष्टाचारों को स्वयं अपनाएँ और अपनी आने वाली नस्ल को भी इनसे परिचित कराएँ, ताकि हमारी भावी पीढ़ियाँ भी इन्हीं शिष्टाचारों और नैतिक गुणों से सुसज्जित व अलंकृत हों। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन।

"व आख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-'आलमीन"

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 26 June to 03 July 2025 Issue No. 26-27

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 2 का शेष

नबी नहीं आ सकता, और दूसरी ओर इसके पूर्णतः विपरीत विश्वास कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आएँगे।

तो वे उत्तर में कहते हैं कि वे तो उम्मती नबी होंगे। हम उन्हें कहते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने भी उम्मती नबी होने का दावा किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''यह सम्मान मुझे केवल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अनुकरणशीलता के कारण प्राप्त हुआ। यदि मैं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में न होता और आपकी अनुकरणशीलता न करता, तो यदि मेरे कर्म संसार के सभी पर्वतों के बराबर होते, तब भी मैं यह सम्मान मुक़ालमा व मुख़ातिबा कभी प्राप्त न कर पाता। क्योंकि अब मोहम्मदी नबुव्वत के सिवा सभी नबुव्वतें बंद हो चुकी हैं। कोई शरई नबी नहीं आ सकता। हाँ, बिना शरियत वाला नबी आ सकता है, पर वह भी वही जो पहले उम्मती हो। इसीलिए मैं उम्मती भी हूँ और नबी भी।''

(तजल्लीयाते इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 20, पृष्ठ 411)

''उस नूर पर फ़िदा हूँ, उसी का मैं हुआ हूँ...
वह है, मैं चीज़ क्या हूँ बस फ़ैसला यही है।''

सम्मानित श्रोतागण!

जिस दरवाज़े को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बंद कर दिया है, संसार की कोई शक्ति उस दरवाज़े को खोल नहीं सकती। लेकिन जिस दरवाज़े को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ियामत तक के लिए खुला रखा है, उसे अब कोई बंद नहीं कर सकता। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शरई नबी के दरवाज़े को बंद कर दिया है। यह अब क़ियामत तक के लिए बंद रहेगा।

आपने स्वतंत्र नबी (जो किसी उम्मत से संबंध न रखे) के दरवाज़े को बंद कर दिया यह भी अब क़ियामत तक के लिए बंद रहेगा। लेकिन आपने उम्मती नबी के दरवाज़े को बंद नहीं किया, बल्कि उसे खुला रखा है। और यह दरवाज़ा अब क़ियामत तक खिलाफ़त अल्ा मिन्हाजे नबुव्वत (नबुव्वत के मार्ग पर आधारित ख़िलाफ़त) के रूप में खुला रहेगा।

सम्मानित श्रोतागण!

क़ुरआन करीम में एक भी ऐसी आयत नहीं है जो यह बताती हो कि नबुव्वत का दरवाज़ा अब पूर्ण रूप से बंद हो चुका है। बल्कि ऐसी अनेक आयतें हैं जो यह दर्शाती हैं कि नबुव्वत का दरवाज़ा अब भी खुला है।

अल्लाह तआला सूरह निसा में फ़रमाता है ...

مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝

मान्यवर अध्यक्ष महोदय और सम्मानित श्रोताओं!

जो (लोग) भी अल्लाह और इस रसूल (यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन करेंगे, वे उन लोगों में सम्मिलित किए जाएँगे जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है। अर्थात् नबी, सच्चे, शहीद और धर्मात्मा और ये लोग कितने उत्तम सहचर हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने नबी, सिद्दीक, शहीद और सालेह इन चारों रूहानी पदों को प्राप्त करने को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञा-पालन के साथ सशर्त ठहराया है। अर्थात् एक उम्मती, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण अनुपालना के फलस्वरूप नबुव्वत के पद तक पहुँच सकता है।

अल्लाह तआला सूरह हज में फ़रमाता है:

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ

(सूरह हज: आयत 76)

अर्थात् अल्लाह फ़रिश्तों में से रसूलों को चुनता है और इंसानों में से भी। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और गहराई से देखने वाला है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपनी स्थायी परंपरा की घोषणा की है कि वह सदा अपने रसूलों को फ़रिश्तों या इंसानों में से चुनता आया है और चुनता रहेगा। "يَصْطَفِيْ" क्रिया वर्तमान काल की है, जो संकेत देती है कि यह चयन रहेगा।

फिर अल्लाह तआला सूरह अ'राफ़ में फ़रमाता है:

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(सूरह अ'राफ़: आयत 36)

अर्थात् हे आदम की संतानों! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से कोई रसूल आए जो मेरी आयतें तुम्हें सुनाए, तो जो लोग तक़वा अपनाएँगे और अपने आप को सुधार लेंगे, उन पर कोई भय नहीं होगा और वे दुःखी नहीं होंगे।

यह आयत स्पष्ट रूप से भविष्य के बारे में बोलती है "यदि रसूल आएं" इससे यह प्रमाणित होता है कि रसूलों का आना भविष्य में भी सम्भव है। यदि वास्तव में अब कोई रसूल नहीं आना था, तो कहा जाना चाहिए था: "हे आदम की संतानों, अब कोई रसूल नहीं आएगा।"

उपरोक्त आयतें केवल उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत की गई हैं। हमारे विरोधियों के पास देने को बस एक ही आयत है आयत "ख़ातमन नबिय्यीन" जो स्वयं बहस का विषय है, और जिसकी पुष्टि में उनके पास कोई दूसरी आयत नहीं। वास्तव में, यह आयत भी नबुव्वत का दरवाज़ा बंद नहीं करती, बल्कि खोलती है।

अब मैं हदीसों की ओर आता हूँ। वहाँ से भी हमें यही पता चलता है कि नबुव्वत का दरवाज़ा खुला हुआ है, बंद नहीं हुआ।

(1) जब हज़रत अब्राहीम, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पुत्र का निधन हुआ, तो आपने उनका जनाज़ा पढ़ाया और फ़रमाया:

"لو عاش لكان صِدِّيقًا نَبِيًّا"(यदि वह जीवित रहता, तो अवश्य एक सच्चा नबी होता।)

(इब्ने माजा, किताबुल जनाज़ा, बाब: माजाअ फी सलात अल्ा इब्ने रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

आयत ख़ातमन नबिय्यीन के नाज़िल होने के चार वर्ष बाद हज़रत इब्राहीम की मृत्यु हुई। यदि वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम "ख़ातमन नबिय्यीन" को यह मानते कि आपके बाद कोई नबी नहीं आ सकता, तो आपको कहना चाहिए था:

"अगर इब्राहीम जीवित भी रहता, तो भी नबी न होता क्योंकि मैं ख़ातमन नबिय्यीन हूँ।"

(2) मुस्लिम की एक हदीस में आपने आने वाले मसीह को चार बार "नबी अल्लाह" कहकर पुकारा।(सही मुस्लिम, बाब: सिफ़ात अद-दज्जाल)(3) आपने फ़रमाया:"أَبُو بَكْرٍ أَفْضَلُ هٰذِهِ الْأُمَّةِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ نَبِيٌّ"(अबू बकर इस उम्मत में सबसे श्रेष्ठ हैं, सिवाय इसके कि कोई नबी हो।)(कनूज़ुल हक़ायक़ फी हदीस ख़ैरुल ख़लायक़)(4) आपने फ़रमाया:"ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةٌ عَلَى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ"(फिर ख़िलाफ़त नबुव्वत के तरीक़े पर क़ायम होगी।)(मुस्नद अहमद, मिश्कात बाबुल इंज़ार वत्तहज़ीर)मिश्कात के लेखक ने इस हदीस के बारे में लिखा:"الظَّاهِرُ أَنَّ الْمُرَادَ بِهِ زَمَنُ عِيسٰى وَالْمَهْدِي"(स्पष्ट है कि इससे अभिप्राय हज़रत मसीह और महदी का युग है।)अल्लाह के फ़ज़्ल से यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौऊदअलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद जमाअत ए अहमदिया में "ख़िलाफ़त अल्ा मिन्हाज-ए-नबुव्वत" का सिलसिला जारी है। और आज मसीह-ए-मौऊद के पाँचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब, अहमदियत अर्थात् सच्चे इस्लाम की सम्पूर्ण विश्व में भव्य रूप में क़ियादत कर रहे हैं। अल्हम्दुलिल्लाह अल्ा ज़ालिक।

सम्माननीय श्रोताओं! क़ुरआन और हदीस की रौशनी में उम्मत के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग इस बात पर सहमत हैं कि केवल "शरई नबुव्वत" का दरवाज़ा बंद हुआ है, लेकिन "उम्मती नबुव्वत" का दरवाज़ा हरगिज़ बंद नहीं हुआ।

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad